कर्मकाण्ड

षोडष संस्कार रहस्यम्

भाषा टीका

लेखक :

पं० शिव स्वरुप याज्ञिक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री गंगाये नमः श्री सरस्वत्यै नमः श्री राधाकृष्णाय नमः

कर्मकाण्ड

अर्थात्

षोडश संस्कार रहस्यम्

भाषा टीका

जीवन में होने वाले सम्पूर्ण सनातन सोलह संस्कारों की पूरी विधि इस पुस्तक में दी गयी है।

संकलित: **पं० शिवस्वरूप 'याज्ञिक'**
भाष्कर प्रयाग, भटवाडी, उत्तरकाशी

मूल्य 220/

प्रकाशक:
बी.एस. प्रमिन्दर
दिल्ली-51

मुख्य वितरक:
कर्मसिंह अमरसिंह
पुस्तक विक्रेता, बड़ा बाजार, हरिद्वार

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रकाशक :
बी.एस. प्रमिन्दर प्रकाशन
दिल्ली-५१

मुख्य वितरक :
कर्मसिंह अमरसिंह
पुस्तक विक्रेता, बड़ा बाजार
हरिद्वार-उत्तरांचल
फोन-01334-225619

नवीन संस्करण सन् 2007

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

मूल्य 220

**KARAM KAND
OR
SHODASH SANSKAR
RAHSAYAM**

अन्य पुस्तकें वी.पी.पी. से मंगवाये

भागवत पुराण भा.टी. पत्राकार	५००
शिवपुराण भाषा टीका पत्राकार	६००
देवीभागवत पुराण भाषा टीका पत्राकार	५००
हरिवंश पुराण भाषा टीका	६००
मंत्र महोददी भाषा टीका	४५०
मंत्र महार्णव भा.टी. (तीन भागों में पूर्ण)	१२००
यजर्वेद संहिता मूलपाठ	२००
श्री सूक्तम्, लक्ष्मी सूक्तम्, पुरुष सूक्तम् भा.टी.	२५
रुद्रीष्टाध्यायी (रुद्राभिषेक) रुद्रीपाठ	२५
१०० वर्षीय पंचाग सौ साल का	६००
यज्ञ मीमांसा-वेणी प्रसाद गौड़	२७५
यज्ञ मंत्र संग्रह-वेणी प्रसाद गौड़	२००
यज्ञ मंत्र रहस्य-दौलत राम गौड़	२००
यज्ञ कुण्ड निर्माण विधि	१००
दुर्गा याग विधान	२२०
अनुष्ठान प्रकाश-तीन भागों में सम्पूर्ण	१०००
ग्रह शान्ति भाषा टीका	८०
वृहद कर्मकाण्ड भास्कर-विशाल मणि	१००
दुर्गा उपासना कल्पद्रुम-	२४०
दुर्गा अर्चन पद्धति-शिवदत्त मिश्र	१००
कर्मठ गुरु-बाल मुकुन्द	८५
कर्मकाण्ड प्रदीप-जनार्दन शास्त्री	९५
अन्हिक कर्म सूत्रावली	१००
निर्णय सिन्धु (दोनों खण्ड सम्पूर्ण) अर्थ सहित	५००
धर्म सिन्धु भाषा टीका	३५०
व्रतराज भाषा टीका	३५०
हस्तलिखित भृगु संहिता महाशास्त्र	२५००
हस्तलिखित भृगु संहिता कुण्डली रहस्य	२५००
हस्तलिखित रावण संहिता भा.टी.	२५००
चारों वेद भाषा टीका सहित सम्पूर्ण	२१००
भविष्य पुराण भाषा टीका तीन भाग	१०००
ब्रह्म पुराण भाषा टीका	५००
ब्रह्मवैवर्त पुराण भाषा टीका	६२५
वायु पुराण भाषा टीका	४५०
वृहद नारदीय पुराण भाषा टीका	४००
मत्स्य पुराण भाषा टीका	४५०
अग्नि पुराण भाषा टीका	६००
स्कन्द पुराण केदारखण्ड भाषा टीका	५००
मार्कण्डेय पुराण भाषा टीका	५००
ज्योतिष की सम्पूर्ण लाल किताब	६००

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

निवेदन

हिन्दू संस्कृति के वर्ण और आश्रम व्यवस्थाओं में संस्कारों का व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक अभ्युदय के लिए होना अत्यन्त ही आवश्यक है, क्योंकि संसार में दो वस्तुएँ प्रमुख हैं-प्राकृत तथा संस्कृत। प्रकृति ने जिस रूप में वस्तुओं, प्राणियों को उत्पन्न किया, प्राकृत तथा प्राकृत वस्तुओं का संस्कार कर संस्कृत प्रकृति अनेक प्रकार के कन्द, मूल, फल, वृक्ष, धन-धान्य धातु को उत्पन्न करती है। मनुष्य उसे कूट-पीस, काट-छांट कर, पकाकर जब उसके संस्कार करता है तो वह प्रकृति प्रदत्त वस्तुयें अनेक प्रकार से उपयोगी एवं जीवनदायिनी बन जाती हैं।

मनुष्य जैसे सोने को निकालने के लिए मिट्टी, पत्थर से छांटकर, कूटकर, गरमकर आभूषण तैयार करता है। पौधे से कपास, भेड़ से ऊन निकालकर दिव्य परिधान का निर्माण करना मनुष्य की संस्कारमयी भावना के प्रमाण हैं। लोहे को यदि जल में डाल दो तो वह डूब जाता है, पर उसी लोहे के जब संस्कार किये जाते हैं अर्थात् जलयान, वायुयान बनाये जाते हैं, तो उसे पानी में तैराया, हवा में उड़ाया जाता है।

इसी प्रकार मानव शरीर के संस्कार कर सुन्दर शरीर, आयु, गुण, कीर्ति, बल, पराक्रम आदि गुणों से सुसज्जित कर इहलौकिक एवं पारलौकिक जीवन को सुखमय बनाया जाता है।

वेदों ने संस्कार को जन्म के समान ही महत्व दिया है। '**द्विज**' अर्थात् जिसका जन्म दो बार हो द्विज कहलाता है। पहला

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

माता के उदर से तथा दूसरा संस्कार के द्वारा। मनुष्य बिना संस्कार के द्विज नहीं कहलाता।

सम्पूर्ण संसार में कोई भी वस्तु बिना संस्कार के उपयोगी नहीं होती तो मनुष्य बिना संस्कार किस प्रकार आयु, बल, सन्तान की प्राप्ति, पितृ, देव आदि ऋण से मुक्त, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष को कैसे प्राप्त कर सकेगा, इसलिए ऋषि-मुनियों ने मनुष्यों के अनेक संस्कार बताये हैं। महर्षि गौतम ने अठारह, अंगिरा ने पच्चीस, वेदव्यास ने सोलह संस्कारों का विधान बताया है। मनुस्मृति में तेरह, अश्वालयन गृहसूत्र में ग्यारह, पारस्कर गृहसूत्र में बारह, मिमांसा दर्शन में सोलह संस्कारों का उल्लेख मिलता है।

अतः मनुष्यमात्र के लिए संस्कार से बीज गर्भ सम्बन्धि दोष दूर करने के लिए 'गर्भाधान' गर्भ से पुत्र हो, इसलिए पुंसवन। सीमन्तोनयन से गर्भ शुद्धि, जातकर्म माता द्वारा खानपान सम्बन्धि दोष दूर करने के लिए, नामकरण से आयु तेज की वृद्धि तथा निष्क्रमण से आयु, लक्ष्मी की प्राप्ति, अन्न प्राशन्न द्वारा बल की वृद्धि, चूड़ाकर्म से बल, आयु, तेज। उपनयन से द्विज की श्रेणी तथा वेदाध्ययन का अधिकार, विवाह से प्रजोत्पन्न, यज्ञानुष्ठान का अधिकार आदि संस्कार के ही फल हैं।

मनुस्मृति में लिखा है कि द्विजातियों के लिए गर्भाधानादि शारीरिक संस्कार वैदिक पवित्र मंत्रों से करने चाहिए क्योंकि ऐसे संस्कार लोक परलोक में पवित्र करने वाले होते हैं-

वैदिकैः कर्मभिः पुण्यैनिषेकादिर्द्विजन्मनाम्।
कार्यः शरीर संस्कारः पावनः प्रेत्य चेह च॥ (२।२६॥ मनु०।)

यद्यपि आज तक संस्कार पद्धति के अनेक संस्करण प्रकाशित

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हुए हैं तब भी मैंने कर्मकाण्डियों, पौरोहित कार्य करने कराने वाले विद्यार्थियों, विद्वानों की सुविधा को ध्यान में रखकर प्रस्तुत पुस्तक में गणेशादि देवताओं के पूजन के साथ हिन्दी टीका का समावेश कर दिया है।

पहले भी आप जैसे विद्वानों ने मुझ अल्पबुद्धि मनुष्य द्वारा लिखी 'सम्पूर्ण पूजन रहस्यम्', 'सम्पूर्ण हवन रहस्यम्', 'ग्रह नक्षत्रादि शान्ति', 'अन्त्येष्टि कर्म रहस्यम्' को हाथो हाथ स्वीकार किया, उसी प्रकार इस पुस्तक को भी स्वीकार करेंगे, ऐसी मेरी आशा है।

अपने इस लेखन कार्य को मैं पूर्ण नहीं समझता, अतः विद्वानों से निवेदन है कि इस पुस्तक में मुझसे जो मानवजन्य त्रुटियां रह गई हों, उसे सुधारकर इस पुस्तक को पूर्ण बनाने में अपने बहुमूल्य सुझाव मुझे देने की कृपा करेंगे, जिससे दूसरे संस्करण में भूल सुधार हो सके।

अन्त में मैं पुनः विद्वत्वृन्दों से प्रार्थी हूँ कि यदि मेरे इस लघु प्रयास से हिन्दू संस्कृति की रक्षा के साथ-साथ पौरोहित्य कर्म कराने वाले विद्वानों, कर्मकाण्डियों का कुछ भी लाभ हो सकेगा तो निजप्रयास को सफल समझूँगा।

भाष्कर प्रयाग
उत्तरायण संक्रान्ति
१४ जनवरी २००१

पं0 शिवस्वरूप 'याज्ञिक'
भटवाडी उत्तरकाशी
'उत्तरांचल प्रदेश'

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सम्मति-पत्र

स्वस्ति

प्रिय श्री शिवस्वरूप 'याज्ञिक' जी सादर अभिवादन। पुस्तकों को देखकर अत्यनत प्रसन्नता हुई। देखा, आपने पुस्तकों को सरल रूप में ब्राह्मणों के हितार्थ बनाया, आज के ब्राह्मण समुदाय तथा सभ्य समाज के लिए आपके द्वारा लिखित पुस्तकें वरदान सिंह होंगी। ऐसी पुस्तकों को लिखने के लिए आपको बार-बार बधाई।

आपका शुभेच्छु
शान्ति प्रसाद शास्त्री (मानस प्रेमी)
गंगा सरस्वती स्मृति सदन माण्डौं
उत्तरकाशी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सम्मति-पत्र

पं0 शिवस्वरूपजी,

आपकी अनेक पुस्तकों को देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, अत्यन्त हर्ष हुआ कि आपने ब्राह्मण समाज के लिए इतने सरल रूप से पुस्तकों को लिखा।

हमारा कोई कृत्य कर्मकाण्ड के बिना पूर्ण नहीं होता। हमारे धर्म ग्रन्थों में पग-पग पर कर्मकाण्ड की महिमा का वर्णन है, जिसको श्रद्धा विश्वास से करने पर मनुष्य का भौतिक, आध्यात्मिक दृष्टि से कल्याण होता है। सुख और शानित चाहने वाला व्यक्ति कर्मकाण्ड करता है और करता रहेगा।

अस्तु जन कल्याणार्थ आपके सहयोग की भूरि-भूरि प्रशंसा के साथ-साथ भगवान से प्रार्थना करता हूं कि इस प्रकार धर्म सेवा करने की अधिकाधिक शक्ति प्रदान करे। किमधिकम्। मंगलं लेखकानां च पाठकानां च मंगलम्।

शुभाशंसी

ब्रह्मर्षि जगदीश प्रसाद नौटियाल

(शास्त्री) धर्म विशारद साहित्यरत्न

भाष्कर प्रयाग (भटवाड़ी) उत्तरांचल

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

धर्म की जय हो,
प्राणियों में सद्भावना हो
गो हत्या बन्द हो।

॥ श्री हरिः ॥
। श्री ज्योतिर्मठसंविजयते ।
॥ हर हर महादेव ॥

अधर्म का नाश हो,
विश्व का कल्याण हो,
गो माता की जय हो।

अनन्त श्री विभूषित जगद्गुरु शङ्कराचार्य ज्योतिष्पीठाधीश्वर

स्वामी श्रीमाधवाश्रमजी महाराज

(बदरिकाश्रम हिमालय)

शङ्कराचार्य मठ, नृसिंह मन्दिर,
मठाङ्गण (मठस्थली) बदरीनाथ मार्ग,
जोशीमठ, जिला चमोली (उत्तरांचल)
दूरभाष : 01389-22244

दण्डी स्वामी धर्मसंघ महाविद्यालय
ईश्वोवाल कलां, शङ्कराचार्य नगर
लुधियाना (पंजाब)
दूरभाष : 0161-471103

7, शङ्कराचार्य मार्ग,
सिविल लाईन, दिल्ली-110054
दूरभाष : 011-3914579

दिनांक ३१-५-२००१

पं० शिवस्वरूप प्रसाद 'याज्ञिक' द्वारा जहाँ यज्ञ-अनुष्ठानों द्वारा सनातन धर्म की शास्त्रीय मर्यादाओं का प्रचार-प्रसार हो रहा है, वहीं अनुष्ठानपरक ग्रन्थों का संकलन और सम्पादन हो रहा है। यह अच्छी परम्परा है, इसी क्रम में 'सम्पूर्ण पूजा रहस्यम्' जिसमें पूजन हवन यथार्थ मंत्र और स्तोत्र दिये हैं, 'सम्पूर्ण हवन रहस्यम्' में यज्ञ विधि के साथ वेदी निर्माण की विधि सचित्र प्रकाशित है, तथा 'सम्पूर्ण ग्रह-नक्षत्र शान्ति रहस्यम्' पुस्तक में वास्तु शान्ति, नवग्रह शान्ति, नक्षत्र शान्ति के साथ-साथ लोकाचार की सनातन परम्परा में स्थान देवताओं की पूजा का विधान बहुत गम्भीरता से प्रस्तुत किया है। मैं इस प्रकार की सनातन परम्पराओं के लिए हो रहे कार्यों के लिए अपनी सम्मति देकर इन्हें आशीर्वाद देता हूँ।

स्वामी माधवाश्रम

(स्वामी माधवाश्रमजी महाराज)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विषयानुक्रमणिका

क्र.सं. विषय	पृ०सं०	क्र.सं. विषय	पृ०सं०
पूजन प्रारम्भ	११	ॐकारदेवता पूजन	३९
गणेश वन्दना	११	सप्तघृत-मातृका पूजन	३९
गंगा ध्यान	११	षोडश मातृका पूजन	३९
सूर्य पूजन	१५	नवग्रह शान्ति	४०
आवाहन	१५	नवग्रह पूजन	४०
भस्म धारण करने		अधिदेवता पूजन	४४
का मंत्र	१६	प्रत्यधिदेवता पूजन	४४
शिख बांधने का मंत्र	१६	पंचलोकपाल पूजन	४४
प्राणायाम मंत्र	१७	संस्कारों की आवश्यकता	४५
नमस्कारं	१७	गर्भाधान संस्कार	४६
दीप पूजन	१७	पुंसवन संस्कार	४९
भैरव प्रार्थना	१८	सीमन्तोनयन संस्कार	५२
ब्राह्मण पूजन	१८	जातकर्म संस्कार	६०
शान्ति पाठ	२०	षष्ठिमहोत्सव	६५
चतुर्दश नमस्कार	२१	षष्ठिमहोत्सव कथा	७२
गणेश ध्यान	२२	नामकरण संस्कार	७५
संकल्प	२३	दन्तोत्पत्ति विचार	७६
गणपति पूजन	२४	निष्क्रमण संस्कार	७८
कलश पूजन	२९	अन्नप्राशन संस्कार	८१
पुण्याहवाचनम्	३३	जन्म दिन पूजन	८४

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कर्णवेध	८९	अग्निस्थापन	१४७
अक्षर विद्यारंभ विधि	९०	शाखोच्चार	१४९
केशाधिवास	९३	कन्यादान	१५२
चूड़ाकर्म संस्कार	९६	कन्यादान का	
यज्ञोपवीत विधि	१००	विस्तृत संकल्प	१५४
वेदारंभ विधि	१०८	हवन	१६४
केशान्त संस्कार	११४	शय्यादान संकल्प	१८०
समावर्त्तन संस्कार	११६	चतुर्थी कर्म	१८१
वाग्दान विधि	१२५	आशीर्वाद के मन्त्र	१८६
विवाह संस्कार स्वरूप	१२९	संस्करण मुहूर्त प्रकरण	१८८
मण्डप निर्माण	१३१	संस्कार की सामान्य	
स्तंभ पूजन	१३१	पूजन सामग्री	१९५
विवाह संस्कार	१४१	यज्ञ मण्डप निर्माण	१९८
गोदान	१४६		

भक्तजनों से निवेदन-

यदि कोई व्यक्ति अपने मित्रों, सम्बन्धियों को भेंट स्वरूप देने के लिए ११ या २१ पुस्तकें खरीदता है तो वह प्रकाशक से सम्पर्क करें। उन्हें पुस्तक लागत मात्र मूल्य पर दी जायेंगी।

पुस्तक मिलने का पता-

कर्मसिंह अमरसिंह

बड़ा बाजार हरिद्वार-249401

फोन-0133-425619

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

।। अथ पूजन प्रारंम्भ।।

शुभग्रह अनुकूल समये शुभ दिने शुभ लग्ने च कृतनित्यक्रियो यजमानः शुभासने, प्राङ्मुख उपविश्यः स्वदक्षिणतः पत्नींचोपवेश्य।

प्रथम गणेश वन्दना करें

सर्वं स्थूलतनुं गजेन्द्रवदनं लम्बोदरं सुन्दरं।
प्रस्यन्दन्मदगन्धलुब्ध मधुपव्यालोल गण्डस्थलं।।
दन्ताघातविदारितारिरुधिरैः सिन्दूरशोभाकरं।
वन्दे शैलसुतासुतं गणपतिंसिद्धिप्रदंकामदम्।।

हरि वन्दना-

वेदानुद्धरते जगन्निवहते भूगोलमुद्‌विभ्रते।
दैत्यं दारयते वलिं छलयते क्षत्रंक्षयं कुर्वते।।
पोलस्त्यं जयते हलं कलयते कारुण्यमातन्वते।
म्लेच्छान् मूर्छयते दशाकृति कृते कृष्णाय तुभ्यं नमः।।

गंगा ध्यान

पापापहारि दुरितारि तरंगधारी।
शैलप्रचारि गिरिराजगुहाविदारी।।
झंकारकारि हरिपादरजोऽपहारि।
गांगपुनातु सततंशुभकारीवारि।।

ॐइमं में गंगे यमुने सरस्वति सतद्रु स्तोम स च ता परुष्ण्या असिक्न्यामरुद्‌वृधः वितस्तया र्जीकीये श्रुणुह्या सुषोमया।।

मन्त्र से गंगाजल का पूजन करे फिर गंगाजल को कर्मपात्र में स्थापित करें तथा इस मंत्र से जल अभिमंत्रित करे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेस्मिन् सन्निधिं कुरु॥
इष्ट देवताभ्योनमः कुलदेवताभ्यो नमः ग्राम देवताभ्यो नमः

पंचगव्य सम्मेलनम्-(गोमूत्र, गोबर, दूध, दही, घी)
गायत्र्या चैव गोमूत्रं गन्ध द्वारेति गोमयं।
आप्यायस्वेति च क्षीरं दधिक्रोव्णेति वै दधि।
तेजोऽसि शुक्रमित्याज्यं देवस्य च कुशोदकम्॥

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियोयोनः प्रचोदयात्॥
ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
इश्वरीं सर्व भूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥
ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्
भवावाजस्य सङ्गथे॥
ॐ दधिक्राव्णोऽ अकारिषंजिष्णो रश्वस्य
ब्वाजिनः सुरभिनोमुखा करत्प्रणऽआयू ँषितारिषत्॥
ॐ तेजोऽसि शुक्क्रमस्यमृतमसि धामनामासि
प्रियन्देवानामनाधृष्टदेवयजनमसि ॥
ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेश्विनोर्ब्बाहुभ्याम्पूष्णो हस्ताभ्याम्॥

पंचगव्य प्रोक्षणम्-(पंचगव्य को छिडक देवें)
ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवस्ता न ऽऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे योवः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः। तस्माऽअरंगमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ आपोजनयथा च नः॥ प्राशनम्। (पंचगव्य को पी लेवें)।
यत्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके।
प्राशनं पंचगव्यस्य दह त्यग्नीरिवेन्धनम्॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आचमन करे-

ॐ अच्युताय नमः स्वाहा ॐ केशवाय नमः स्वाहा। नारायणायनमः स्वाहा। माधवायनमः स्वाहा।। हस्तप्रक्षालनम्।।

हाथ धो लें।

वामहस्त गंगोदकं सकुश दक्षिण हस्तेन-

ॐ अपवित्रः पवित्रोर्वा सर्वावस्थांऽगतोंपिवा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षः सः वह्याभ्यन्तरः शुचिः।।
ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्व्वः प्रसवऽउत्पु-
नाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः।

तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्यँ यत्कामः पुनेतच्छकेयम्। भूतोत्सारणम्- ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः।

तेषा ँसहस्त्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि।।
अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमि संस्थिता।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम्।
सर्वेषांमविरोधेन यज्ञकर्म समारभेत्।।

आसन पूजन करें-

अस्य श्री आसन मंन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषि सूतल छन्दः आसनोपवेशने पूजने विनियोगः ।

जल छोड़कर पृथिवी का पूजन करें।

ॐ स्योना पृथिवि नो भवान्नृक्षरा निवेशनी। यच्छानः शर्म सप्रथाः। पृथ्व्यै नमः। आधार शक्ते नमः। शेष नागायनमः। कूर्मासनायः नमः। कमलासनाय नमः। सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं दक्षिणां च समर्पयामि।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पूजन कर प्रार्थना करे-

पृथिवी त्वया धृता लोका देवी त्वं विष्णुना धृताः।
त्वं च धारय मां भद्रे पवित्रं कुरुचासनम्॥

घण्टा पूजन करे-

ॐ सुपर्णोऽसि गरुत्माँस्त्रिवृत्ते शिरो गायत्रं चक्षुर्बृहद्रथन्तरे पक्षौ।
स्तोम आत्मा छन्दाँस्यगांनि यजूँषि नाम।
साम ते तनुर्वामदेव्यं यज्ञायज्ञियं पुच्छं धिष्ण्याः
शफाः सुपर्णोऽसि गरुत्मान्दिवं गच्छ स्वः पत॥
आगमार्थन्तु देवानां गमनार्थन्तु रक्षसाम्।
सर्व भूत हितार्थाय घण्टा नादं करोम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः घण्टास्थ गरुडाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पं समर्पयामि गरुड़ मुद्रां प्रदर्श्य घण्टां वादयित्वा वामपार्श्वे स्थापयेत्। पूजन कर बांये रख दें।

शंख पूजन करे-

अग्निऋषिः पवमानः पांचजन्यः पुरोहितः। तमीमहे महागयम्॥ त्वं पुरा सागरोत्पनो विष्णुनां विधृत करे। नमन्ति सर्व देवश्च पांचजन्य नमोऽस्तुते॥ शंखं वादयित्वा॥ ॐ भूर्भुवः स्वः शंखस्थ देवतायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धक्षत पुष्पं समर्पयामि॥ धूप पात्राये नमः। ऋताषाडऋत धमाग्निर्गन्धर्वस्तस्यौषधयौऽप्यसरसो मुदो नाम। सं नऽ इन्द्रं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् ताभ्यः स्वाहा। गन्धर्व देवाय [illegible] त्रायै नमः सर्वोपचारार्थे पूजयामि।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

॥सूर्य पूजन॥

सूर्य पूजन निम्न मंत्रों से करे-

ध्यान-

नमो नमस्तेऽस्तु सदा विभावसो।
सर्वात्मने सप्तहयाय भानवे॥
अनन्तशक्तिर्मणि भूषणेन।
ददस्व भक्तिं मम मुक्तिभव्याम्॥

॥आवाहन॥

आवाहयेतं द्विभुजं दिनेशं सप्ताश्ववाहं द्विमणि ग्रहेशं।
सिन्दूर वर्णं प्रतिमाव भासं, भजामि सूर्यं कुलवृद्धि हेतवः॥
ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।

अर्घ्य-

एहि सूर्य सहस्त्राशो तेजोराशी जगत्पते।
अनुकम्पाहि मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर॥

ॐ आदित्याय नमः, रवयेनमः, भानवे नमः, गंन्धाक्षतंपुष्पं धूपं दीपं नैवेद्यं दक्षिणां च समर्पयामि। नमस्करोमि।

एक चक्र रथोयस्य दिव्य कनक भूषितः।
सः मे भवतु सुप्रीतः पद्महस्तो दिवाकरः।
आदित्याय नमस्कारं ये कुर्वन्ति दिनेदिने।
जन्मान्तर सहस्त्रेषु दारिद्र्यं नोऽपजायते।
नमोधर्मविधत्रेहि नमो कर्मसु साक्षिणे।
नमो प्रत्यक्ष देवाय भाष्कराय नमो नमः॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अर्घ्य के शेष जल से पूजन सामग्री पर छींटे देवे-

ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवस्ता न ऽऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे। यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः तस्मांऽ अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः।

अर्घ्य के दिये जल को आँखों पर लगाये-

ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत ँशृणुयाम शरदः शतं प्र ब्रवाम शरदः शत मदीनाः श्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्॥

भस्म धारण करने का मंत्र-

ॐ अग्निरिति भस्म। वायुरिति भस्म।
जलमिति भस्म। स्थलमिति भस्म। व्योमिति भस्म।
सर्व ँहवा इदं भस्म। मन एतानि चक्षूंषि भस्मानि॥

रुद्राक्ष धारण करने का मंत्र-

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्यौर्मुक्षिय माऽमृतात्।

॥शिखा बान्धने का मंत्र॥

ॐ मा नस्तोके तनये मा नऽआयुषि मा नो गोषु मा नो ऽश्वेषु रीरिषः। मा नो व्वीरान्रुद्र भामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे।

चिद्रूपिणि महामाये दिव्यतेजः समन्विते।
तिष्ठ देवि शिखा मध्ये तेजो वृद्धिं कुरुष्व मे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अथ षडंगन्यास-

ॐ भूः हृदयाय नमः। ॐ भुवः शिरसे स्वाहा। ॐ स्वः शिखायै वषट्। ॐ तत्सर्वितुर्वरेण्यं कवचाय हुं। ॐ भर्गो देवस्य धीमहि नेत्रत्रयाय बौषट्। ॐ धियोयोनः प्रचोदयात्। अस्त्राय फट्।

॥ प्राणायाम मंत्र॥

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं ॐ तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपोज्योति रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्॥

नमस्कारं-

उत्तरे शिखरे देवि भूम्यां पर्वत मूर्धनि।
ब्राह्मणेभ्योमनुज्ञातां गच्छदेवि यथा सुखम्॥
यस्यस्मृत्वा च नामोक्त्या तपो यज्ञ क्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

दीप पूजन

ॐ अग्नि ज्योंति ज्योंतिरग्निः स्वाहा। सूर्योज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा। अग्निर्वर्चो ज्योर्तिवर्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्य सूर्योः ज्योतिः स्वाहा। सूर्योवर्चोज्योतिर्वर्चः स्वाहा। सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि।

प्रार्थना करे-

भो दीप देवरूपस्त्वं कर्मसाक्षीह्यविघ्नकृत।
यावत कार्य समाप्तिः स्यातावदत्र स्थिरौ भव॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री भैरव प्रार्थना-

तीक्ष्ण द्रंष्टं महाकाय कल्पान्तदहनोपम्।
भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि।।

ब्राह्मण पूजनम्-

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेनऽआवः। सबुध्न्याऽउपमाऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः।। ॐ ब्राह्मण मद्य विदेयं पितृमन्त पैतृमत्य मृषिमाषेंय ँ सुधातु दक्षिणम्। अस्मद्राता देवत्रा गच्छत प्रदातार माविशत्।। ॐ आब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूरऽ इषव्योऽति व्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनु वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णुरथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः प्रजन्यो वर्षतु फलवत्यो न ऽओषधयः पंच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।।

नमोऽस्तनन्ताय सहस्त्र मूर्तये सहस्त्रपादाक्षसिरोरुवाहवे।
सहस्त्र नान्मे पुरुषाय साश्वते सहस्त्र कोटि युगधारणे नमः।।

नमः ब्रह्मण्य देवाय गौ ब्राह्मण हिताय च।
जगद्हिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः।।
ब्राह्मणं जंगमं तीर्थं त्रिषु लोकेषु विश्रुतं।
तेषां वाक्योदकेनैव शुद्यन्ते मलिनाः जनाः।।

प्रार्थना-

देवाधीनं जगत्सर्व मन्त्राधीनं च देवता।
ते मन्त्रं ब्राह्मणाधीनं तस्मात् ब्राह्मण देवता।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यदर्चनं कृतं विप्रं तव विष्णुस्तद् रूपिणः।

प्रार्थना मम दीनस्य विष्णुवेतु समर्पणम्।।

यजमान का तिलक ब्राह्मण इन मंत्रों द्वारा करे-

ॐयुजन्तिव्रध्नंमरुषंचरंतंपरितस्तुषः रोचन्तेरोचनादिवि। युजन्त्यस्यकाम्याहरी विपक्षसारथे। शोणाधृष्णूनृवाहसा।।

आदित्या वसवोरुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः।

तिलकं ते प्रयच्छन्तु इष्टकामार्थसिद्धये।।

अक्षतं विप्रहस्ताश्च यो गृणान्ति नरः सदा।

चत्वारि तेषां वर्धन्ते आयुर्विद्यायशो वलम्।।

इस मंत्र से स्त्रियों का तिलक करे-

ॐ श्री श्चते लक्ष्मींश्चपत्न्या वहोरात्रे पार्श्वेनक्षत्राणिरूप-लक्ष्मी मश्विनौव्यात्तम्। इष्णंन्निषाणामुम्मऽइषाणसर्वलोक-म्मऽइषाण।।

इस मंत्र से तिलक करें

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके नमानयतिकश्चन।

ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकांकाम्पीलवासिनीम्।। से कन्या का निम्न मंत्र से विधवा का तिलक करे-

ॐ तद्विष्णोः परम पद ँसदापश्यन्ति सूरयः दिवीव चक्षुरा ततम्।।

यावत् गंगा कुरुक्षेत्रे यावत् तिष्ठति मेदिनी।

यावत् राम कथालोके तावत् जीवतु बालकाः।।

मंत्र से बालक का तिलक करे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

॥ शान्ति पाठ ॥

(हाथ में पुष्प अक्षत लेवें)

ॐआनोभद्राः क्रतवोयन्तुविश्वतोदब्धसोंऽअपरीतासउद्भिदः।
देवानोयथासदमिद्वृधे ऽअसन्नप्रायु- वोरक्षितारोदिवेदिवे॥१॥
देवानाम्भद्रा सु मतिर्ऋजूयतान्देवानाँ रातिरभिनोनिवर्तताम्।
देवानाँ सख्यमुपसेदिमाव्वयन्दे- वानऽआयुः प्रतिरन्तुजीवसे॥२॥
तान्पूर्वयानिविदाहूमहेव्व- यम्भगम्मित्रमदितिन्दक्षमस्त्रिधम्।
अर्यमणं व्वरुणँ सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत्॥३॥
तन्नो व्वातो मयोभुव्वातुभेषजन्तन्माता पृथिवी तत्पिताद्यौः।
तद् ग्रावाणःसोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना श्रृणुतन्धिष्ण्यायुवम्॥४॥
तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिंधियंजिन्वमवसे हूमहे व्वयम्।
पूषानोयथावेदसामसद्वृधेरक्षिता पायुर्दब्धः स्वस्तये॥५॥
स्वस्ति नऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषाविश्ववेदाः।
स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनोबृहस्प- तिर्दधातु॥६॥
पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभंयावानोविद- थेषुजग्मयः।
अग्निजिह्वामनवःसूरचक्षसोव्विश्वेनो देवाऽअवसागमन्निह॥७॥
भद्रंकर्णेभिः श्रृणुयाम देवाभद्रं पश्येमाक्षभियजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाँ सस्तनूभिर्व्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥८॥
शतमिन्नुशरदोऽअन्ति देवायत्रानश्चक्राजरसन्तनूनाम्।
पुत्रासोयत्रपितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः॥९॥
अदिति द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः॥
विश्वेदेवाऽअदितिःपंच जनाऽ अदितिर्ज्जातमदितिर्ज्जनित्वम्॥१०॥
द्यौः शान्तिरन्तिरिक्षँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वनस्पतयः शान्तिर्व्विश्वेदेंवाः शान्ति ब्र्ह्मशान्तिः सर्व्व ँशान्तिः शान्तिरेवशान्तिः सामाशान्तिरेधि।।११।।

यतोयतः समीहसेततोनोऽअभयं कुरु शन्नः
कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः ।।१२।।
विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव
यद्‌भद्रं तन्नऽआ सुव।।१३।।

गणाना न्त्वा गणपति ँ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति ँ हवामहेनिधीनान्त्वा निधिपति ँहवामहे व्वसो मम।। आहमजानिगर्भधमात्वमजासिग - र्भधम्।।१४।। अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके नमानयतिकश्चन।। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकाकांम्पीलवासिनीम्।।१५।। मनोजूति-र्जुषतामाजस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं। तंन्नोत्वरिष्ठं यज्ञ ँसमिमं दधातु।। विश्वे देवासऽइह मादयन्तामो३ प्रतिष्ठ।।१६।। शुशान्तिर्भवतु।।

।।चतुर्दश नमस्कार।।

ॐ श्रीमन्महागणाधिपतये नमः।
ॐ लक्ष्मी-नारायणा- भ्यांनमः।
ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः।
ॐ वाणीहिरण्य- गर्भाभ्यांनमः।
ॐ शचीपुरन्दराभ्यांनमः ।
ॐ मातृपितृचरण-कमलेभ्योनमः।
ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः।
ॐ कुलदेवताभ्योनमः ।
ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ स्थानदेवताभ्यो नमः ।
ॐ वास्तुदेवताभ्योः नमः ।
ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्योनमः ।
ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः ।
ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय श्री मन्महागणाधिपतये नमः।।

।। गणेश ध्यान ।।

लाल अक्षत और दूर्वा लेकर गणेश का ध्यान करे-

रक्तवर्णाक्षतं दुर्वांकुरं गृहीत्वा गणपतिं ध्यायेत्।
ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलोगज कर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।।१।।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि।।२।।
विद्यारम्भेविवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्त स्य न जायते।।३।।
शुक्लाम्बरं धरं देव शशिवर्णं चतुर्भजं।
प्रसन्न वदनं ध्यायेत् सर्व विध्नोपशान्तये।।४।।
अभिप्सितार्थसिध्यर्थं पूजितोयः सुरासुरैः।
सर्वं विघ्न हरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ।।५।।
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूति र्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ।।६।।
सर्वेष्वारम्भ कार्येषु त्रयस्त्रभिुवनेश्वरा।
देवादिशन्तुनः सिद्धि ब्रह्माविष्णुमहेश्वरा।।७।।
विनायकं गुरुं भानुं ब्रह्मा विष्णु महेश्वरान्।
सरस्वती प्रणाम्यादौ सर्वकार्यार्थसिद्धये।।८।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तदैव लग्नं सुदिनं तदैव ताराबलं चन्द्रबलं तदैव।
विद्याबलं दैवबलं तदैव लक्ष्मीपतेस्तेऽङ्घ्रियुगंस्मरामि॥९॥
ॐ सर्व मंगल मांगल्ये। शिवे! सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके! गौरि! नारायणि! नमोस्तुते॥१०॥

दूर्वा अक्षत चढ़ा देवे।

॥संकल्प॥

ॐ विष्णुः विष्णुः विष्णुः श्रीमद्‌भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्री ब्रह्मणोह्निद्वितीये परार्धे श्री श्वेत वाराह कल्पे वैवश्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलि प्रथम चरणे भूर्लोके भारतवर्षे भरतखण्डे जम्बूद्वीपे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मावर्त्तैकदेशे काशी कुरुक्षेत्र प्रयागादि नाना तीर्थ युक्त अमुक जनपदे तत् जनपदार्न्तगते अमुक मण्डले अमुकग्रामे पतित पावनी श्री गंगायमुनयोर अमुक दिग्विभागे श्री विक्रमादित्यसमयतो प्रभवादि षष्ठि संवत्सराणां मध्ये अमुकनाम संवत्सरे अमुकायने अमुक ऋतौ अमुकमासे अमुक पक्षे अमुकतिथौ अमुक वासरे अमुक नक्षत्रे अमुक योगे अमुक करणे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते सूर्ये अमुकराशिस्थिते श्री देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा राशि स्थानस्थितेषु सत्सु एवं गुणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ममात्मनः श्रुति स्मृति पुराणोक्त पुण्यफल प्राप्त्यर्थं अस्माकं सर्वेषां सकुटुम्बानां क्षेमस्थित्यायुरारोग्य एश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं त्रिविध तापोपशमनार्थं लाभार्थं क्षेमार्थं विजयार्थं मनकामना सिद्ध्यर्थं समस्त दुरितोपशान्त्यर्थम् श्री परमेश्वर प्रीतये

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अमुक संस्कार कर्मण तदङ्गत्वेन निर्विघ्नता सिद्धयर्थं गणपति पूजनं कलश पूजनं मातृका पूजनं, ग्रहपूजनं आचार्यादि ऋत्विग्वरणं करिष्ये।।

ब्राह्मणों के हाथ में यजमान सूत्र बांध देवे तथा ब्राह्मण भी यजमान के हाथ में रक्षा सूत्र बांध देवे। गणपति आदि देवताओं का पूजन पंचोपचार अथवा षोडषोपचार से करें-

।।गणपति पूजन।।

ॐ गणानान्त्वेति प्रजापति ऋषिः यजुश्छन्दो गणपतिर्देवता गणपत्यावाहने पूजने विनियोगः।

आवाहन-

ॐ गणानान्त्वा गणपति ँ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति ँ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति ँ हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्ब्भधमा त्वमजासि गर्ब्भधम्।। गणपतये नमः आवाहयामि।।

प्रतिष्ठापन-

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाजस्य बृहस्पतिर्य- ज्ञमिमंतनोत्वरिष्टंयज्ञ ँ समिमन्दधातु। विश्वेदेवास ऽ इहमादयन्तामो ३ प्रतिष्ठ।।

प्रतिष्ठापन कर आसन देवे-

**ॐ वर्मोऽस्मि समानामुद्यतामिव सूर्यः।
इमंतमभित्तिष्ठामि यो मां कश्चाभिदासति।।**

पाद्य से पैर धो लेवें-

**ॐ एतावानस्यमहिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः।
पादोस्यविश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि।।**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अर्घ्य-

धामन्ते विश्वं भुवनमाधि श्रितमन्तः समुद्रे हृद्यन्तरायुषिः।
अपामनीके समिथे य ऽ आभृतस्तमश्याम मधुमन्तं त ऽ ऊर्मिम्॥

आचमनीय जल समर्पण करें-

ॐ इमम्मे वरुणश्रुधीहवमद्या च मृडय।
त्वामवस्युराचके॥

पयस्नान-

ॐ पयसो रूपं यद्यवा दध्नो रूपं कर्कन्धूनि।
सोमस्य रूपं वाजिन ँ सौम्यस्य रूपमामिक्षा॥

दधिस्नान-

ॐ दधिक्राव्णो ऽ अकारिषंजिष्णोरश्वस्य वाजिनः।
सुरभि नोमुखा करत्प्रण ऽ आयू ँ षितारिषत्॥

घृतस्नान-

ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्बस्य धाम।
अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहा कृतं वृषभ वक्षि हव्यम्॥

मधु स्नान-

स्वाहा मरुद्भिः परि श्रीयस्व दिवः
स ँ स्पृशस्पाहि मधु मधु मधु॥

शर्करा स्नान-

ॐ अपा ँ रस मुद्वयस ँ सूर्येसन्त ँ समाहितम्।
अपा ँ रसस्ययोरसस्तंवो गृहणाम्युत्तममुपयाम गृहीतो
सीन्द्रायत्वा जुष्टंगृह्णां मेषते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गन्धोदक स्नान-

ॐ गन्धर्वस्त्वा विश्वावसुः परिदधातु विश्वस्यारिष्ट्यैयजमानस्य परिधिरस्यग्निरिड ऽ ईडितः॥

उद्वर्तस्नान-

ॐ अ ७ँ शुनाते ऽ अ ७ँ शुः पृच्यतां परुषापरुः।
गन्धस्ते सोममवतु मदायरसो ऽअच्युत॥

तीर्थोदकस्नान-

ॐ ये तीर्थानिप्रचरन्ति सृकाहस्तानिषङ्गिणः।
तेषा ७ँ सहस्त्रयोजने वधन्वानितन्मसि॥

शुद्धोदक स्नान-

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो- मणिवालस्त ऽ आश्विनाः श्येतः श्येताक्षोरुणस्तेरुद्राय पशुपतये कर्णायामा ऽ अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः॥

वस्त्र-

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरुथमासदयत्स्वः।
वासो ऽ अग्नेविश्वरूप ७ँ संव्ययस्व विभावसो॥

यज्ञोपवीत-

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥

गन्ध-

ॐ त्वाङ्गन्धर्वाऽअखनंस्त्वाम्बृहस्पतिः ।
त्वामोषधे सोमोराजाविद्वान्यक्ष्मादमुच्यत॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अक्षत–

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यवप्रिया ऽ अधूषत।
अस्तोषतस्वभानवो विप्रा न विष्ट्ठयामतीयोजान्विन्द्रतेहरी॥

पुष्प–

ॐ ओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।
अश्वा ऽ इव सजित्त्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्णवः॥

दूर्वांकुर–

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च॥

सौभाग्य द्रव्य–

ॐ अहिरिवभोगैः पर्येति बाहुंज्याया–हेतिम्परिबाधमानः।
हस्तघ्नो विश्वावयुनानि विद्वान् पुमान् पुमा ॐ सम्परिपातुविश्वतः॥

धूप–

ॐ धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं यो ऽस्मान् धूर्वति तं धूर्व यं वयं धूर्वामः
देवानामसि वह्नितम ॐ सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्॥

दीप–

चन्द्रमा ऽ अप्स्वन्तरा सुपर्णो धावते दिवि।
रयिं पिशङ्गं बहुलं पुरुस्पृह ॐ हरिरेति कनिक्रन्दत्॥

नैवेद्य–

ॐ अन्नपतेऽन्नस्यनो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः।
प्रप्र दातारं तारिष ऽ ऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे॥

ताम्बूल–

ॐ उत स्मास्य द्रवतस्तुरण्यतः पर्णं न वेरनुवाति प्रगर्धिनः।
श्येनस्येव ध्रजतो ऽ अङ्कसं परि दधिक्राव्णः सहोर्जातरित्रतः स्वाहा॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ऋतुफल-

ॐ याः फलिनीर्या ऽ अफला ऽ अपुष्पायाश्चपुष्पिणीः।
बृहस्पतिप्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्वꣳहसः॥

दक्षिणा-

ॐ यद्दतं यत्परादानं यत्पूर्तं याश्च दक्षिणाः।
तदग्निर्वैश्वकर्मणः स्वर्देवेषु नो दधत्॥

दीप-

ॐ आरात्रि पार्थिव ꣳ रजः पितुरप्प्रायिधामभिः।
दिवः सदा ꣳ सिबृहतीवितिष्ठस ऽ आत्वेषं वर्त्तते तमः॥

विशेषार्घ्य-

रक्षरक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्यरक्षक।
भक्तानां अभयं कर्ता त्राताभव भवार्णवात्॥
द्वैमातुर कृपासिन्धो षाणमातुरग्रज प्रभो।
वरद त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद।
अनेन सफलार्घ्येण फलदो ऽस्तु सदा मम॥

प्रार्थना-

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय
लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाय श्रुति यज्ञ विभूषिताय
गौरी सुताय गणनाथ नमो नमस्ते॥
भक्तार्तिनाशनपराय गणेश्वराय
सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विद्याधराय विकटाय च वामनाय
भक्त प्रसन्नवरदाय नमो नमस्ते।।
नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णु रूपाय ते नमः।
नमस्ते रुद्र रूपाय करिरूपाय ते नमः।।
विश्वरूप स्वरूपाय नमस्ते ब्रह्म चारिणे।
भक्त प्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक।।
त्वां विघ्नशत्रुदलनेति च सुन्दरेति
भक्त प्रियेति सुखदेति फल प्रदेति।
विद्याप्रदेत्यघहरेति च ये स्तुवन्ति तेभ्यो
गणेश वरदो भव नित्यमेव।।
लम्बोदरं! नमस्तुभ्यं सततं मोदकं प्रियः।
निर्विघ्नं कुरु में देव! सर्व कार्येषु सर्वदा।।

प्रार्थना समर्पण कर एक आचमन जल छोड़ दें-

अनया पूजया साङ्ग सपरिवारः श्रीमहागणपतिः प्रीयतां ममः।।

।।अथ कलश पूजनम्।।

भूमि का स्पर्श करके निम्न मंत्र पढे-

भूमिस्पर्श-

ॐ भूरसि भूमिसरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री। पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृ ँ ह पृथिवीं मा हि ँसीः।।

भूमि पर धान्य रखे

ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणाय त्वोदानाय त्वा व्यानाय त्वा। दीर्घामनु प्रसितिमायुषे धां देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषेत्वा महीनां पयोऽसि।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

धान्य के ऊपर कलश रखे-

स्थापनम्-

ॐआजिघ्र कलशं मह्या त्वां विशन्त्विन्दवः। पुनरूर्जा निवर्तस्व सा नः सहस्त्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्माविशताद्रयिः।।

कलश में जल डाले-

जलम्-

ॐ वरुण स्योस्तंभनमसि वरुणस्य स्कंभ सर्जनी स्थो वरुणस्य ऽऋतसदन्यसि वरुणस्यऽऋत् सदनमसि वरुणस्य ऽऋत सदन मासीत्।।

गंन्धम्-

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षा नित्य पुष्टां करीषिणीम।
इश्वरीं सर्व भूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ।।

सर्वोषधी-

ॐ या औषधीः पूर्वाजाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा।
मनैनु व्रभ्रुणामह ँ शतं धामानि सप्तच।।

दुर्वाकुरम्-

ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ति परुषः परुषस्परि।
एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च।।

कुशांकुरम्-

पवित्रेस्थो वैष्णव्यो सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यछिद्रेण पवित्रेण सूर्य्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम्।।

सप्तमृत्तिका-

ॐ स्योना पृथिवी नो भवान्नृक्षरा
निवेशनी यच्छानः शर्म सप्रथाः।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पूगीफलम्-

ॐ याः फलिनीर्याऽअफलाऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुंचन्त्व ँ हसः॥

पंचरत्नम्-

ॐपरिवाजपतिः कविरग्निर्हव्या न्य क्रमीत्।
दधाद्रत्नानि दाशुषे॥

दक्षिणाम्-

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत्।
सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम्॥

पंचपल्लव-

ॐ अश्वत्थेवो निषदनं पर्णेवो वसतिष्कृता।
गोभाजइत्किलासथयत् सनवथ पुरुषम्॥

पूर्णपात्रम्-

ॐपूर्णादर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत।
वस्नेव विक्रीणावहाऽइषमूर्ज ँ शतक्रतो॥

वस्त्रम्-

ॐयुवा सुवासाः परिवीत आगात् स उश्रेयान भवति जायमानः।
तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मानसा देवयन्तः॥
ततः वस्त्रावेष्टितं नारिकेल फलं पूर्णपात्रोपरि न्यसेत्॥
ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामु म्मऽइषाण सर्वलोक-म्मऽइषाण॥ तत्वायामिति शुनषेफ ऋषि त्रिष्टुप्छन्दो वरुणोदेवता वरुणावाहनेपूजने विनियोगः।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आवाहनम्-

तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश ँ स मा न आयुः प्रमोषीः॥

से आवाहन कर पूजन करे।

वरुण कलश देवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे आसनं पाद्यं अर्घ्य आचमनीयं वस्त्रं गन्धाक्षत पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं च समर्पयामि।

पूजन सामग्री चढ़ाकर कलश में देवताओं का ध्यान करें।

कलशस्योपरि ब्रह्मा विष्णु रुद्रादि देवता

आवाहनम्-

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृ गणाः स्मृताः॥
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथयजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।
अंगैश्च सहिता सर्वे कलशन्तु समाश्रिताः॥

प्रार्थना करे-

ॐ देवदानव सम्वादे मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोऽसि तदाकुम्भविधृतो विष्णुना स्वयम्॥
त्वतोये सर्व तीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिता।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणां प्रतिष्ठिताः॥
शिव स्वयं त्वमेवासि विष्णु त्वं च प्रजापतिः।
आदित्या वसवो रुद्राः विश्वेदेवाः सपैत्रिका॥
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः काम फल प्रदाः।
त्वत् प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भवः॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सानिध्यं कुरु मे देवः प्रसन्नो भव सर्वदा।
नमो नमस्ते स्फटिक प्रभायसुश्वेत हाराय सुमंगलाय।।
सुपाश हस्ताय झषासनाय जलाधि नाथाय नमो नमस्ते।
अनया पूजया वरुण कलश देवता प्रीयन्ताम् न मम।।

।। अथ पुण्याहवाचनम्।।

प्रथम यजमान ब्राह्मणों का पूजन करे तत्पश्चात यजमान कहे-

ॐ शिवा आपः सन्तुः। यजमान ब्राह्मणों को जल देवे।

विप्राः-ॐ सन्तु शिवाः आप, ब्राह्मण जल लेवे।

यजमानः-**ॐ सौमनस्य मस्तु,** यजमान ब्राह्मणों को पुष्प देवे।

विप्राः-**ॐ अस्तु सौमनस्यम्,** ब्राह्मण पुष्प लेवे।

यजमान-**ॐ अक्षताः पान्तु,** यजमान ब्राह्मणों को अक्षत देवे।

विप्राः-**ॐ मांगल्य मस्तु,** ब्राह्मण अक्षत लेवे।

यजमानः-**ॐ गन्धः पान्तु,** यजमान ब्राह्मणों को गन्ध देवे।

विप्राः-**ॐ आयुस्मस्तु,** ब्राह्मण गन्ध लेवे।

यजमानः-**ॐ पुष्पाणि पान्तु,** यजमान ब्राह्मणों को पुष्प देवे।

विप्राः-**ॐ सोश्रियमस्तु,** ब्राह्मण पुष्प लेवे।

यजमानः-**ॐ ताम्बूलानि पान्तु,** यजमान ताम्बूल देवे।

विप्राः-**ॐ एश्वर्य मस्तु,** ब्राह्मण ताम्बूल लेवे।

यजमानः-**ॐ दक्षिणाः पान्तु,** यजमान ब्राह्मणो को दक्षिणा देवे।

विप्राः-**ॐ बहुधनंचास्तु,** ब्राह्मण दक्षिणा लेवे।

पुनः यजमान आचार्यादि, ब्राह्मणो को प्रणाम कर प्रार्थना करें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्रीर्यशो विद्या विनयो वित्तं बहुपुत्रं चायुष्यं चास्तु।

विप्राः-**तथास्तु॥**

यजमानः-**यत्कृत्वा सर्व वेद-यज्ञ-क्रिया कर्मारम्भाः शुभाः शोभनाः प्रवर्तन्ते तमहमोंकारमादि कृत्वा ऋग्यजुः सामाथर्वणाशीर्वचनं बह्वर्षिभिः। समनुज्ञातं भवद्भिरनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये।**

विप्राः-**वाच्यताम्,** इस प्रकार ब्राह्मण कहे।

यजमानः व्रत-

नियम तपः स्वाध्याय ऋतुदमदान-

विशिष्ठानां सर्वेषां ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम्।

विप्राः-**समाहित मनसः स्मः।**

यजमानः-**प्रसीदन्तु भवन्त'।**

विप्राः-**प्रसन्नास्मः।**

ततो यजमानः अवनिकृत जानुमण्डलः कमल मुकुल सदृश अंजलिं शिरस्याधाय दक्षिणेन पाणिना सुवर्ण (ताम्र) कलशं धारयित्वा भूमौ स्थापिते पात्रद्वये प्रथमपात्रे किञ्चितउदकं पातयेत् तथा ब्राह्मण वदेयुः।

इसके पश्चात् यजमान उकडू बैठकर दोनों हाथों को कमल के समान अंजली बनाकर हाथों पर कलश रखे तथा कलश को शिर से लगावे। ब्राह्मण लोग दो पात्रों को रखे तथा प्रथम पात्र में थोड़ा जल डाले और प्रथम पात्र के जल से यजमान को सपरिवार छिंटे लगावें।

ब्राह्मणः-**शान्तिरस्तु पुष्टिरस्तु तुष्टिरस्तु वृद्धिरस्तु ऋद्धिरस्तु अविघ्नमस्तु आयुष्यमस्तु आरोग्यमस्तु शिवमस्तु**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शिवंकर्म्मास्तु कर्मसमृद्धिरस्तु धर्मसमृद्धिरस्तु, वेद समृद्धिरस्तु, शास्त्रसमृद्धिरस्तु, पुत्रपौत्र समृद्धिस्तु धन धान्य समृद्धिरस्तु इष्टंसम्पदस्तु।

दूसरे पात्र के जल को यजमान के ऊपर घुमाकर बाहर फेंके।

अरिष्टनिरसनमस्तु यत्पापमरोगम ऽशुभम्ऽ कल्याणं तद्दूरे प्रतिहतमस्तु।

पुनः प्रथम पात्र से-

यच्छ्रेयस्तदस्तु। उत्तरेकर्मणि निर्विघ्नमस्तु उत्तरोत्तराः हरहरभिवृद्धिरस्तु उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः सम्पद्यन्तां तिथि करण मुहूर्त नक्षत्र ग्रहलग्नादि देवताः प्रीयन्ताम्। दुर्गा पांचाल्यौ प्रीयन्ताम् अग्निपुरोगा विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्। इन्द्रपुरोगा मरुद्गणाः प्रीयन्ताम्। माहेश्वरीपुरोगा उमामातरः प्रीयन्ताम्। वशिष्ठपुरोगा ऋषिगणाः प्रीयन्ताम्। अरुन्धती पुरोगाः एकपत्न्यः प्रीयन्ताम्। ब्रह्मपुरोगाः सर्वे वेदाः प्रीयन्ताम्। विष्णुपुरोगाः सर्वे देवाः प्रीयन्ताम्। आदित्यपुरोगाः सर्वे ग्रहाः प्रियन्ताम्। ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम्। अम्बिका सरस्वत्यौ प्रीयेन्ताम्। श्रद्धामेधे प्रीयन्ताम्। भगवती कात्यायनीप्रियन्ताम्। भगवती माहेश्वरी प्रीयन्ताम्। भगवती ऋद्धिकरी प्रीयन्ताम्। भगवती वृद्धिकरी प्रीयन्ताम्। भगवती सिद्धि करी प्रीयताम्। भगवती पुष्टिकरी प्रीयन्ताम्। भगवती तुष्टिकरी प्रियन्ताम्। भगवन्तौ विघ्न विनायकौ प्रीयेन्ताम्। सर्वा कुलदेवताः प्रियन्ताम्। सर्वाः ग्रामदेवताः प्रियन्ताम्। सर्वाः इष्ट देवताः प्रियन्ताम्।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पुनः द्वितीय पात्र से जल यजमान के ऊपर घुमाकर बाहर फेंके।

हताश्च ब्रह्मद्विषः हताश्च परिपन्थिनः। हताश्च विघ्नकर्तारः। शत्रवः पराभवंयात्तु शाम्यन्तु घोराणि। शाम्यन्तु पापानि साम्य-त्वीतयः।

पुनः प्रथम पात्र से-

शुभानि वर्द्धन्ताम् शिवाः आपः सन्तु शिवा ऋतवः सन्तु शिवा अग्नयः सन्तु शिवा आहुतयः सन्तु शिवा ओषधयः सन्तु शिवा वनस्पतयः सन्तु शिवा अथितयः सन्तु। अहोरात्रे शिवे स्याताम्। ॐ निकामे निकामे नः प्रजन्यो वर्षतु फलवत्यो न औषधयः न्योः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पन्ताम्। शुक्रांगारक-बुध- बृहस्पति-शनैश्चर-राहु-केतु-सोम सहिता आदित्यपुरोगाः सर्वेग्रहाः प्रीयन्ताम्। भगवान् नारायणः प्रीयन्ताम्। भगवान् प्रजन्यः प्रीयताम्। भगवान् स्वामी महासेनः प्रीयताम्। पुरोनुवाक्यया यत्पुण्यं तदस्तु याज्यया यत्पुण्यं तदस्तु वषट्कारेण यत्पुण्यं तदस्तु प्रातः सूर्योदये यत्पुण्यं तदस्तु॥

ततौ यजमानः कलशं भूमौ निधााय प्रथम पात्रीय जलेन यजमानस्य सपरिवारस्य शिरः संमृज्य द्वितीय पात्र जलं एकान्ते पातयेत्।

यजमान कलश को भूमि पर रखे, ब्राह्मण प्रथम पात्र के जल से यजमान का सपरिवार अभिषेक कर दूसरे पात्र के जल को एकान्त में गिरा देवे। पुनः यजमान ब्राह्मण से प्रार्थना पूर्वक कहे-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ ब्राह्मं पुण्यं महद्यच्च सृष्ट्युत्पादन कारकम्। वेदवृक्षोद्भवं नित्यं तंत्पुण्याहं ब्रुवन्तु नः।। भो ब्राह्मणाः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे अमुक कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मणाः-

ॐ पुण्याहम् पुण्याहम् पुण्याहम्।। पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः। पुनन्तु विश्वाभूतानि जातवेदः पुनीहिमा।।

यजमानः-

ॐ पृथिव्यामुद्धृतायान्तु यत्कल्याणं पुराकृतम्। ऋषिभिः सिद्ध गन्धर्वैस्ततकल्याणं ब्रुवन्तु नः।। भो ब्राह्मणाः। मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्यगृहे अमुक कर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मणाः-

ॐ कल्याणम्, कल्याणम्, कल्याणम्।। ॐ यथे मां वाचं कल्याणी मावदानि जनेभ्यः ब्रह्मराजन्याभ्यां ँ शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च। प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं मे कामः समृध्यतामुपमादौ नमतु।।

यजमानः-

ॐ सागरस्य च या लक्ष्मीमहालक्ष्म्यादिभिः कृताः।
सम्पूर्णा सुप्रभावा च तां तामृद्धि ब्रुवन्तु नः।।
भो ब्राह्मणाः मम सपरिवारस्य गृहे ऋद्धि भवन्तो ब्रुवन्तु।।

ब्राह्मणाः-

ॐ ऋद्ध्यताम, ऋद्ध्यताम्, ऋद्ध्यताम्।।
सत्रस्यऽ ऋद्धिरस्यगन्म ज्योतिर- मृताऽअभूम्।
दिवं पृथिव्याऽअध्यारुहामाविदाम देवान् स्वर्ज्योतिः।।

यजमानः-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्वस्तिस्तुया यविनाशाख्या नित्यं मंगलदायिनी।
विनायक प्रिया नित्यं तां च स्वस्ति ब्रुवन्तु नः।।
भो ब्राह्मणाः मम सपरिवारस्य गृहे स्वस्ति भवन्तो बुवन्तु।।

ब्राह्मणाः-

ॐ आयुस्मते स्वस्ति, आयुस्मतेस्वस्ति, आयुस्मते स्वस्ति।।
ॐ स्वस्ति न ऽ इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः
स्वस्तिनस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु।।

यजमानः-

समुद्रमथनाज्जाता जगदानन्द कारका।
हरि प्रिया च मांगल्या तां श्रियं च ब्रुवन्तु नः।।
भो ब्राह्मण मम सकुटम्बस्य सपरिवारस्य
गृहे श्रीरस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मणाः-

ॐ अस्तु श्री, अस्तु श्री, अस्तु श्री।। ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णनिषाणा मुम्मइषाण सर्वलोकम्मइषाण।।
विप्रेभ्यो दक्षिणादानम्।।

संकल्प

ॐ अद्यः कृतैतपुण्याहवाचन कर्मणः सांग्ता सिद्धर्थ तत्सम्पूर्णफल प्राप्त्यर्थं च पुण्याहवाचकेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथाशक्ति हिरण्यादि दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजेत्।

इति पुण्याहवाचनम्।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

।।अथ ॐ कारदेवतापूजनम्।।

ओंकार में ब्रह्मा विष्णु शिव का ध्यान करे–

ओंकार बिन्दुसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।
कामदं मोक्षदं चैव ओंकाराय नमोनमः।।

ओंकारस्थित ब्रह्माविष्णुर्महेश्वराय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत् पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं दक्षिणां च समर्पयामि। ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरुस्ताद्वि सीमतः सुरुचोवेनऽआवः। सबुध्न्याऽउपमाऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः।। ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पाँ सुरे स्वाहा।। ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।।

ॐ कार के ऊपर उक्त तीन मंत्रों से ब्रह्मा-विष्णु शिव का पूजन कर के फिर निम्न मंत्र से प्रार्थना करे

आकाशात् पतितं तोयं यथागच्छतु सागरे।
सर्वदेवं नमस्कारं केशवं प्रतिगच्छति।।

सप्त घृत-मातृका पूजन

ॐ श्रीश्चलक्ष्मीर्धृतिर्मेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती।
मांगल्येषु प्रपूज्यन्ते सप्तैता घृतमातरः।।

षोडश मातृका पूजन

ॐ गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातर लोकमातरः।।
धृतिपुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवता।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गणेशेनाधिका ह्येता वरदा भव पाणयः॥

पूजन पञ्चोपार या षोडशोपचार से कर प्रार्थना करे-

गणेश संयुक्ता देव्यो गौर्यादिमातृका स्मृताः।
प्रसीदन्तु हि कल्याणो निर्विघ्नं कुरुतावयम्।

॥नवग्रह शान्ति॥

ॐ ग्रहा ऽ ऊर्जाहुतयो व्यन्तो विप्राय मतिम्। तेषां विशिप्रियाणां वो ऽ हमिष मूर्ज ँ समग्रभमुपयाम गृहीतो ऽ सीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्। सम्पृच्चौ स्थः सं मा भद्रेण पृङ्क्तं विपृचौ स्थो वि मा पाप्मना पृङ्क्तम्॥ ॐ सूर्याय नमः। चन्द्राय नमः। भौमाय नमः। बुधाय नमः। बृहस्पतये नमः। शुक्राय नमः। शनये नमः। राहवे नमः। केतवे नमः। गन्धं अक्षतं पुष्पं धूपं दीपं नैवेद्यं दक्षिणां च समर्पयामि॥ पूजन करके प्रार्थना-**ॐ ब्रह्मा मुरारी स्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशि भूमिसुतौ बुधश्चगुरुश्च शुक्र शनि राहु केतु सर्वे ग्रहाः शान्ति करा भवन्तु।**

॥अथ नवग्रह पूजनम॥

वर्तुलाकृति सूर्य पूजन करे-**रक्त पुष्पाक्षतैरावाहयेत्।**

जपा कु-सुम-संकाश काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिसर्व पापध्नं सूर्यआवाहयाम्यहम्॥

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥

ॐ भूभुर्वः स्व कलिंगदेशोद्भव काश्यपगोत्र रक्तवर्ण सूर्यायः नमः आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अर्ध चन्द्राकृतिसोमपूजनकरे **श्वेतपुष्पाक्षतैरावाहयेत्-**

दधि-शंख-तुषाराभं क्षीरोदार्णव सम्भवम्।
ज्योत्सनापतिं निशानाथं सोममावाह्याम्यहम्॥

ॐ इमं देवाऽ असपत्न ँसुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्येष्टयाय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमम मुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश ऽ एष वोऽमी राजा सोमो ऽस्माकं ब्राह्मणाना ँ राजा॥ ॐ, भुर्भुवःस्वः यमुनातीरोद्भवः आत्रेयसगोत्रः शुक्लवर्ण सोमायनम, आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि,।

त्रिकोणाकृति भौम पूजन करे-**रक्त पुष्पाक्षतैरावाहयेत्।**

धरणी गर्भ सम्भूतं विद्युत कान्ति सम-प्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं च भौमं आवाहयाम्यहम्॥

ॐ अग्निमूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या ऽ अयम। अपा ँ रेता ँ सिजिन्वति॥ भूर्भुवः स्वः अवन्ति देशोद्द्भव भारद्वाज गोत्र रक्तवर्ण भौमायनमः आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

वाणाकार बुध पूजन करे- **हरितपुष्पाक्षतैरावाहयेत्।**

प्रियङ्गु कलिकाभासं रूपेणा ऽ प्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेत बुधमावाहयाम्यहम्॥

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते स ँ सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थेऽ ध्युतरस्मिन्विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत॥ ॐ भूर्भुवः स्वः मगधदेशोद्भव आत्रेयसगोत्र हरितवर्ण बुधाय नमः आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

चतुष्कोणाकृति बृहस्पति पूजन करे-

पीत, पुष्पाक्षतैरावाहयेत्।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

देवानाञ्च ऋषिणांच गुरु काञ्चन सन्निभम्।
बन्द्य भूतं-त्रिलोकानां गुरुआवाहयाम्यहम्।।
ॐ बृहस्पते ऽ अति यदर्योऽअर्हाद्युमद्विभाति क्क्रतुमज्जनेषु।
यद्दीदयच्छवस ऽ ऋतप्प्रजात् तदस्मासु द्रविणंधेहि चित्रम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः सिन्धु देशोद्भव आंगिरसगोत्र पीतवर्ण वृहस्पतये नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

पञ्चकोणाकृति शुक्र पूजन करें-**श्वैत पुष्पाक्षतैरावाहयेत्।**

हिम-कुन्द मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं शुक्रमावाहयाम्यहम्।।
ॐ अन्नात्परिस्त्रुतो रसं ब्रह्मणा ब्व्यपिवत्क्षत्त्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ँ शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोमृतं मधु।। ॐ भूर्भुवः स्वः भोजकट देशोद्भव भार्गवसगोत्र शुक्लवर्ण शुक्राय नमः आवाहयामि स्थापयामि, पूजयामि।

धनुराकारशनि पूजन करे-**कृष्णपुष्पाक्षतैरावाहयेत।**

नीलांजन समाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्ड सम्भूतं शनिआवाहयाम्यहम्।।
ॐ शं नो देवीरभिष्टय ऽ आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्त्र वन्तु नः।। ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्र देशोद्भव काश्यपगोत्र कृष्णवर्ण शनैश्चराय नमः आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

शूर्पाकार राहु पूजन करे-**कृष्णपुष्पाक्षतैरावाहयेत्।**

अर्धकायं महावीर्य चन्द्रादित्य विमर्दनम्।
सिहिका गर्भसम्भूतं, राहुमावाहयाम्यहम्।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ कयानश्चित्र आभुव दूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृत्ता।। ॐ भुर्भुवः स्वः राठिनापुरोद्भव पैठिनसगोत्र कृष्णवर्ण राहवेनमः आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

ध्वजाकार केतु पूजन करे-धूम्र पुष्पाक्षतैरावाहयेत्।

पलाश पुष्प संङ्काश तारकाग्रह मस्तकम्।
राद्रं रौद्रात्मकम् घोरं केतुमावाहयाम्यहम्।।
ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्य्या ऽ अपेशसे।

समुष द्भिरजायथा।। ॐ।। भुर्भूवः स्व अन्तर्वेदिसमुद्भव जैमिनीसगोत्र धूम्रवर्ण केतवेनमः आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। सूर्यादिनवग्रह देवताभ्यो नमः गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं हिरण्य दक्षिणां च समपर्यामि।

ॐ ग्रहा ऊर्जा हुतयो व्यन्तो विप्राय मतिम्। तेषां विशिप्रियाणां वो ऽ हमिषमूर्जँ समग्रभमुपयामगृहीतो ऽ सीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्। सम्पृचौ स्थः सं मा भद्रेण पृङक्तं विपृचौ स्थो वि मा पाप्मना पृङक्तम्।। तत्रैव मंगला, पिंगला, धान्या, भ्रामरिका भद्रिका उल्का, सिद्धा, संकटा, अष्ट योगिनिभ्यो नमः गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्य दक्षिणा च समर्पयामि।

पूजन कर प्रार्थना करे-

प्रार्थना

सूर्यः शौर्यमथेन्दुरुच्चपदवीं सन्मगलं मङ्गलः।
सद्बुद्धिञ्च बुधौ गुरुश्च गुरूतां शुक्रः सुखं शं शनि।।
राहुर्वाहु बलं करोतु सततं केतुः कुलोस्यान्नतिम्।
नित्यं प्रीतिकरा भवन्तु मम ते सर्वेऽनुकूला ग्रहाः।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आयुश्च विद्या च तथा सुखंच धर्मार्थलाभौबहुपुत्रतांच।
शत्रुक्षयं राजसु पूज्यताच तुष्टा ग्रहाः क्षेमकरा भवन्तु॥
ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशि भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्र शनि राहु केतु सर्वेग्रहाः शान्तिकराभवन्तु॥
अनेन पूजनेन नवग्रह देवता प्रीयन्ताम् नमम:॥

॥अथ अधिदेवता पूजनम्॥

ॐ त्र्यम्बकायैनमः। ॐ अम्बिकायैनमः। ॐ स्कंदायैनमः।
ॐ विष्णवे नमः। ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ इन्द्राय नमः।
ॐ यमाय नमः। ॐकालायनमः। ॐ चित्रगुप्तायनमः॥
सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पं धूप दीप नैवेद्य दक्षिणांच समर्पयामि।

॥ प्रत्यधिदेवता पूजनम्॥

ॐ अग्नयेनमः। ॐ अद्भ्यः नमः। ॐ पृथिब्यैनमः।
ॐ विष्णवे नमः। ॐ इन्द्राय नमः। ॐ इन्द्राण्यैनमः।
ॐ प्रजापतये नमः। ॐ सर्पेभ्यः नमः। ब्रह्मणे नमः॥
सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतं पुष्पं धूप-दीप-नैवेद्यं दक्षिणा च समर्पयामि।

॥पञ्चलोकपाल पूजनम्॥

ॐ गणपतये नमः। ॐ दुर्गायै नमः।
ॐ वायवे नमः। ॐ अन्तरिक्षायनमः।
ॐ अश्विभ्यां नमः।

गणपत्यादि पंचलोकपाल देवताभ्यो नमः गन्धक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं दक्षिणा च समर्पयामि।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

संस्कारों की आवश्यकता

मानव जीवन को पवित्र एवं उज्ज्वल बनाने वाले धार्मिक कृत्यों को संस्कार माना है। संस्कार ही इस लोक व परलोक में पवित्रता लाने वाला होता है। हिन्दू जाति शास्त्रोक्त संस्कारों को करती आ रही है और करती रहेगी जिससे मानव जीवन, रूप, गुण, धन, सन्तान से युक्त रहे तथा धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष को प्राप्त करता रहे। संस्कारों का उद्देश्य ही मानव जीवन के सर्वाङ्गीण विकास के लिए है इसलिए संस्कारों का प्रत्येक मानव के लिए होना आवश्यक है। अत: संस्कारों का उचित समय पर होना तथा शास्त्रोक्त समय में होना अत्यन्त आवश्यक है।

गर्भाधान संस्कार

पति पत्नि का गर्भाधान के समय २० तथा १८ वर्षों का होना आवश्यक है, कम आयु होने से इसका प्रभाव माता तथा गर्भस्थ शिशु पर पड़ता है, यदि सन्तान उत्पन्न हो जाये तो दुर्बल होती है। माता पिता के मनोभाव जिस प्रकार के गर्भाधान के समय होंगे होने वाली सन्तान पर उसका प्रभाव अवश्य ही पड़ेगा। इसलिए सन्तानार्थी पुरुष ऋतुकाल के समय स्त्री समागम करे। स्त्रियों का ऋतुकाल रजोदर्शन से १६ रात्रि तक होता है प्रथम चार रात्रि त्याग कर सम रात्रि में पुत्र तथा कन्यार्थी विषम रात्रि में शास्त्रोक्त मुहूर्त में समागम करें इसमें भी ११ एवं १२ वीं रात्रि, पर्वकाल काल का सदैव त्याग करें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

।।गर्भाधान।।

ऋतुकाल में रजोदर्शन के बाद स्त्री स्नान कर पर्वकाल रहित चौथे दिन अथवा सम दिन में संस्कार हेतु मुहूर्त का विचार कर गर्भाधान संस्कार करे, कर्त्ता गर्भाधान के निमित्त गणेशादि पञ्चांग देवता के पूजन हेतु संकल्प करें-

'ॐ देशकालौ सङ्कीर्त्य अस्या मम भार्यायां गर्भातिशय द्वारा जनिष्यमाणं सर्वगर्भाणां बीजगर्भसमुद्भवैनोनिबर्हणार्थं गर्भाधानसंस्काराख्यं कर्माहं करिष्ये।' गणपत्यादि पञ्चांग देवताओं का पूजन कर स्नाता स्त्री को सौभाग्यवती स्त्रियां नारियल एवं ऋतुफल देवे-

'ॐ याः फलिनीर्या अफलाऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुंचन्त्वꣳहसः'।।

पूजन के बाद सूर्य दर्शन कर देवे-

'विनियोग' ॐ पूषाभगꣳमन्त्रस्य प्रजापतिऋर्षि अनुष्टुप्छन्दो भगोदेवता सूर्यदर्शने विनियोग। 'एक आचमन जल छोड़कर सूर्य दर्शन करें'-

ॐ पूषाभगꣳसविता मे ददातु रुद्रः कल्पयतु ललामगुं विष्णुर्योनिंकल्पयतु त्वष्टारूपाणि पिंशतु। असिंचतु प्रजापतिर्धातागर्भदधातु मे।। 'इस मंत्र को जप कर सायंकाल के कृत्य कर रात्रि में शुभ मंच के ऊपर पूर्व शिर हो निम्न मंत्र के द्वारा विनियोग करें'-

---

रत्न श्रेष्ठतमं वज्रं नीचं गोमेद विद्रुमम्।
न धारयेत् पुत्रकामा नारी वज्रं कदाचन।। (शुक्राचार्य)
अमावस्यायष्टमी च पौर्णमासीं चतुर्दशीम्।
ब्रह्मचारी भवेन्नित्यमप्यृतौ स्नातको द्विजः।। (मनु० ४/१२८)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ गर्भधेहीति प्रजापति ऋषिरनुष्टुप्छन्दो भगो देवताऽभिमन्त्रणे विनियोग। 'आचमन जल छोड़ देवें'-

गर्भाधान[1] का मंत्र-**ॐ गर्भधेहिसिनिवालि। गर्भ धेहि पृथुष्टुके।। गर्भ ते अश्विनौ देवावाधतां पुष्करस्त्रजौ।। गर्भ ते मित्रावरुणौ गर्भ देवो बृहस्पतिः। गर्भ ते इन्द्रश्चाग्निश्च गर्भ धाता दधातु ते।।**

अर्थ-हे अमावस्या की अधिष्ठातृ देवी तथा हे सरस्वति आप इस स्त्री को गर्भ धारण हेतु सामर्थ्य देकर पुष्टि देने वाली हों, कमलों की माला पहनें हुए अश्विनी कुमार तेरे गर्भ को पुष्ट करें, मित्र, वरुण, बृहस्पति, इन्द्र, अग्नि, ब्रह्मा तेरे गर्भ को पुष्ट करें।

'पुनः'-**धातः श्रेष्ठेन रूपेणास्या नार्या गविन्योः। पुमासं पुत्रमाधेहि दशमे मासि सूतवे।। यत्ते सुसी मे हृदयं दिवि चन्द्रमसि श्रितम् वेदाऽहं तन्मां तद्विद्यात् पश्येम शरदः शतम् जीवेम शरदः शत ँ श्रणुयाम शरदः शतम्।।** अर्थात्- हे ब्रह्माजी इस स्त्री के गर्भ में पुरुष सन्तान को दशवें माह में उत्पन्न होने हेतु स्थापित करे। तथा हे सुन्दरी तुम्हारा हृदय जो चन्द्रमा में स्थित है, उसे मैं जानता हूँ तथा वह मुझे जाने तथा एक दूसरे के मनोभावों को हम अच्छी तरह समझे हम दोनों सौ वर्ष तक देखे, सौ वर्ष तक जियें और सुने।। मारुत नाम अग्नि का पूजन कर गायत्री मंत्र से हवन करे। पुनः ब्राह्मणों को यथाशक्ति भोजन, दक्षिणा से सन्तुष्ट कर देवताओं का विसर्जन करें'।

---

[1] ऋतुकाले रजोदर्शने सञ्जाते चतुर्थादि समदिने ज्योतिः शास्त्रोक्ते पुण्याहे, कन्यार्थी पञ्चमादि विषम दिने गर्भाधानं कुर्यात् (पारस्कर गृहसूत्रम्)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

।।पुंसवन संस्कार।।

गर्भ का पालन उचित रीति से हो तथा गर्भ में पुत्र सन्तान ही हो इसलिए यह संस्कार किया जाता है। इस संस्कार में विशेष बरगद के अंकुर को दूध में पीसक़र इसका रस स्त्री के पुत्रार्थी दक्षिण नासपुट तथा कन्यार्थी को वाम नासपुट में डालने का भी विधान है। इस समय गर्भवती स्त्री प्रसन्न, पवित्र तथा शांति युक्त होकर देवताओं का पूजन करे सदुपदेश सुनें तथा गर्भ जिससे नष्ट न हो ऐसे पदार्थों को खाये तथा वृद्धों विद्वान् तथा घर की वृद्धा जिन नियमों के पालन की शिक्षा दें उनका पालन करे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

।।पुंसवन संस्कार।।

गर्भ[१] के अन्दर पुत्र शरीर ही बने इसलिए यह संस्कार किया जाता है। यह संस्कार गर्भ रहने के दूसरे अथवा तीसरे माह में शुभ मुहूर्त में किया जाता हैं। गणेशादि पञ्चांग देवताओं का पूजन करके संकल्प करें-

ॐ अद्येत्यादि० अमुकशर्माहं ममास्यां भार्याया मुत्पत्स्यमानस्य गर्भस्य बैजिक गार्भिक दोष परिहारार्थंपुरुताज्ञानोदयप्रतिरोधपरिहारद्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं पुंसवनाख्यं[२] कर्माहं करिष्ये।

'अब गर्भिणी स्त्री को बड़ के अंकुर, गुडची, ब्राह्मी आदि औषधियों का रस पिलायें, अथवा दक्षिण नासापुट में पुनः वाम नासापुट में देवे। मंत्र'-

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्यजातः पतिरेक आसीत्। सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषाविद्येम।।१।।

ॐ अद्भ्यः संभृतः पृथिव्यै रसाच्च विश्वकर्मणः समवर्त्तताग्रे। तस्य त्वष्टा विदधद्रूपमेति तन्मर्त्यस्य देवत्व माजानमग्रे।।२।।

प्रार्थना-**ॐ पुमा सो मित्रावरुणौ पुमाꣳसा-**

---

१. वपनं मैथुनं तीर्थं वर्जयेद् गर्भिणी पतिः।
नौका रोहणं चैव तथा च गिरिरोहणम्।। (गो.गृ.सू.)

२. गर्भोद्भवेच पुंसूने पुस्त्वस्य प्रतिपादनम्। अर्थात् गर्भ में पुत्र शरीर बनने के लिए ही यह संस्कार किया जाता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वश्विनावुभौ। पुमानग्निश्च वायुश्च पुमान् गर्भस्थवौदरे।। पुमानग्निः पुमानिन्द्रः पुमान् देवो बृहस्पतिः। पुमा ॐ सं पुत्रं विन्दस्व तं पुमान्नु जायताम्।।

अर्थात्-मित्र वरुण देवता, अश्विनीकुमार, वायु सब पुरुष हैं, अग्नि देवता, इन्द्र देवता, बृहस्पति देवता पुरुष हैं, तेरे गर्भ में भी पुरुषत्व युक्त पुत्र ही उत्पन्न हो। कार्य पूर्ण होने पर अग्नि का पूजन पावमान (शोभन)[१] से कर के गायत्री मंत्र से एक सौ आहुति घी की देकर ब्राह्मण भोजन तथा दक्षिणा देकर आशीर्वाद ग्रहण करें।

१. अग्नि के नाम- लौकिकः पावको ह्यग्निः प्रथम परिकल्पित।।
अग्निस्तु मारुतो नाम गर्भाधाने ऽभि धीयते।।१।।
पुंसवने पावमान शुङ्गकर्मण शोभन।
सीमन्तो मङ्गलो नाम प्रगल्भो जातकर्मणि।।२।।
नाम्नि वे पार्थिवो नाम प्राशने तु शुचिःस्मृतः।।
सभ्यनामाथ चूडे तु व्रतारंभे समुद्भवः।।३।।
व्रतमध्ये हरि नाम व्रतान्ते राजपुत्रकः।।
गोदाने सूर्य नामा च केशान्ते ह्यग्निरुच्यते।।४।।
वैश्वानरो विसर्गे तु विवाहे योजकस्मृतः।।
चतुर्थ्यां तु शिखीनाम धृतिरग्नि तु सामनि।।५।।
आवसथ्ये भवोज्ञेयो वैश्वदेवे तु पावकः।।
ब्रह्मा वै गार्हपत्याग्निरीश्वरो दक्षिणस्तथा।।६।।
विष्णु राहवनीयश्च अग्निहोत्रे त्रयोग्नय।।
लक्षहोमे वह्निनामा कोटिहोमे महाशनः।।७।।
प्रायश्चिते विधिश्चैव पाकयज्ञेषु साहसः।।
देवानां हव्यवाहस्तु पितृणां कव्यवाहन।।८।।
पूर्णाहुत्यां मृडोनाम शान्तिके वरदस्तथा।।
पौष्टिके बलदश्चैव क्रोधाग्निश्चाभि चारिके।।९।।
वश्यार्थे कामदो नाम वन दाहे तु वर्धनः।
कोष्टे तु जठराग्निः स्यात्क्रव्यादो मृतभक्षणे।।१०।।
समुद्रे वाडवो ज्ञेयः क्षये संवर्तको भवेत्।।
एतेऽग्नय समाख्याता स्त्रिशन्नव च संज्ञकाः।।११।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

।।सीमन्तोनयन।।

गर्भिणी स्त्री का मन प्रसन्न रहे इस संस्कार में सौभाग्यवती स्त्रियाँ गर्भवती स्त्री की मांग भरती है इस समय गर्भवती प्रसन्न हो तो उसकी सन्तान बलिष्ठ तथा दीर्घायु होती है। इस समय गर्भ माता से पूर्ण रूपेण जुड़ा होता है इस समय माता को गर्भ में स्थित शिशु को पुष्टि प्रदान करने वाले भोजन करना हितकर होता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

॥सीमन्तोनयन संस्कार॥

गर्भगत बालक की रक्षा एवं इच्छा की तृप्ति के लिए इस संस्कार को गर्भ के पांचवें अथवा छठवें मास में पुरुष वाचक नक्षत्र में शुक्ल पक्ष, चन्द्र आदि ग्रह अनुकूल शुभ लग्न में यजमान सपत्लिक स्नान कर गणेशादि पंचांग देवताओं का पूजन करके संकल्प करें-

ॐ अद्येत्यादि० अमुकोहं ममास्यां भार्यायांगर्भाभि-वृद्धिपरिपन्थिपिशितप्रियाऽलक्ष्मीभूतराक्षसगण निरसनक्षेम सकलसौभाग्यनिदान लक्ष्मीसमावेशन द्वारा बीजगर्भ-समुद्भवैनौनिवर्हणाय श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं स्त्री संस्कार रूपंसीमन्तोनयन कर्म करिष्ये॥ पुनर्जलमादाय अद्येत्या-दिमासानां मासोत्तमे मासे अमुक गोत्रोऽहं अमुक-शर्माऽहमद्यकर्तव्य सीमन्तोनयन कर्मणि कृताकृता वेक्षण रूपब्रह्मकर्मकर्तुममुकोहं अमुक शर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्प चन्दन ताम्बूलवासोभिब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे। वृतोऽस्मिति प्रतिवचनम्॥ यजमान ब्राह्मण को वरण कर दे। मेरा वरण हो चुका ऐसा ब्राह्मण कहे। **यथा विहितं कर्म कुरु।** यजमान ब्राह्मण से कहे जैसा शास्त्रों में लिखा है वैसा कर्म कराओ। **करवाणिति।** जिस प्रकार शास्त्रों में लिखा है वैसा ही कराऊँगा, ऐसा ब्राह्मण कहे।

ततोऽग्नेर्दक्षिणत शुद्धमासनं दत्वा। अग्नि से दक्षिण में शुद्ध आसन (पत्ता) ब्रह्मा के लिए धरें।

तदुपरि प्रागग्रान कुशानास्तीर्य। पत्ते के ऊपर कुशा को पूर्व मुंह करके धरें। **ब्राह्मणमग्नि प्रदक्षिण-क्रमेणानीय अत्र त्वं**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मे ब्रह्मा भवेत्यभिधाय कल्पितासने समुपवेशयेत्।

५० कुशओं का ब्रह्मा बनाकर अग्नि की परिक्रमा करा उसे पत्ते की कुशा के ऊपर रख दे। पूजन भी कर दे–

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचोवेनऽआवः। सबुध्न्याऽउपमाऽअस्यविष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः।। ततः प्रणितापात्रं पुरतः कृत्वा वारिणा परिपूर्य कुशैराच्छाद्य ब्रह्मणो मुखमवलोक्य अग्निरुत्तरतः कुशोपरि निदद्यात्।।

प्राणीता पात्र में जल भरे, कुशओं से ढककर ब्रह्मा की तरफ देखकर फिर अग्नि से उत्तर की तरफ कुशा के ऊपर प्रणीता पात्र को रख देवे।

ततः परिस्तरणम्।[१] वेदी के चारों ओर कुशा बिछा देवे– **वर्हिश्चतुर्थ भागमादाय आग्नेयादीशानान्तम्।** ८१ कुशा[२] का चौथा भाग लेकर अग्नि से ईशान तक धरे।

ब्रह्मणोऽग्नि पर्यन्तं। दूसरा भाग ब्रह्मा से अग्नि तक धरे। **नैर्ऋत्याद्वायव्यान्तं।** तीसरा भाग नैर्ऋत्य से वायव्य तक धरे। **अग्नितः प्रणीता**[३] **पर्यन्तं।** चौथा भाग अग्नि से प्रणीता तक धरे। जो अब एक शेष बचा हुआ कुशा है, उसके ऊपर श्रुवा धरे। **ततोऽग्नेरुत्तरतः पश्चिमदिशि पवित्र छेदनार्थं कुशत्रयम्।** अग्नि से उत्तर की ओर पश्चिम दिशा में तीन कुशा पवित्र

---

१. वेदिका दर्भ हीना तु विनग्ना प्रोच्यते बुधैः।
परिधानं ततः कुर्याद् दर्भेणेव विशेषतः।।

२. एकाशीति कुशो वर्हीः। चतुषष्ठिः कुशोवर्हीः।
वर्हिः दर्भ मुष्टिः।।

३. द्वादशोगुलि दीर्घेणा चतुरस्त्र स गर्तकः। प्रस्थमात्रोदकं ग्राही प्रणीता चमसो भवेत्।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

छेदन के लिए धरे। **प्रोक्षणी पात्रम्**[१]। एक पात्र प्रोक्षणी के लिए रखें। **आज्यस्थाली सम्मार्जनार्थंकुशत्रयम्**। एक पात्र में घी और तीन **कुशायें** उत्तर में मार्जन के लिए धरे। **उपयमनार्थ वेणीरूपकुशत्रयम्**। उपयमन के लिए तीन कुशा बटकर उत्तर में रखे। **प्रादेशमात्रंसमिधस्तिस्त्रः**। तर्जनी अंगूठे से पास वाली अंगुली के बराबर तीन लकड़ी उत्तर में धरे। **षट्पञ्चाशदुत्तरवरमुष्टि शतद्वयावच्छिन्न तण्डुल पूर्ण पात्रम्**। एक बर्तन में दो सौ छप्पन मुट्ठी चावल भरकर पूर्ण पात्र उत्तर में धरे। **ततः पवित्रच्छेदन कुशैः पवित्रे छित्वा प्रादेशमात्रपर मितं पवित्र करणम्**। पवित्र छेदन कुशाओं से पवित्रा छेदन करके एक बालिस्त लम्बा पवित्र बनावे पवित्र करने हेतु। **ततः सपवित्रकरेण प्रणीतोदकं त्रिः प्रोक्षणी पात्रे निदध्यात्**। पवित्री सहित प्रणीता का जल तीन बार प्रोक्षणी पात्र में डाले। **अनामिकांगुष्ठाभ्यां उत्तराग्रे पवित्रेगृहीत्वा**। आचार्य अनामिका और अंगूठे में यजमान के पवित्रा पहना लेवे। **त्रिरुत्पवनम्**। अनामिका और अंगूठे से प्रणीता के जल को तीन बार उछाले। **प्रणीतोदकेन त्रिः प्रोक्षणीप्रोक्षणम्**। प्रणीता के जल को प्रोक्षणी में तीन बार डाले। **ततः प्रोक्षणी जलेन यथासादित- वस्तुसिंचनम्**। पवित्री से प्रोक्षणी पात्र के जल से सब वस्तुओं पर छींटे दें। **ततोऽग्नि प्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणी पात्रं निधाय**। अग्नि और प्रणीता के बीच में प्रोक्षणी पात्र रख दे। **आज्यस्थाल्या**[१]

१. द्वादशांगुलि दीर्घं च करतलोमित खातकम्।
पद्मपत्र समाकारं मुकुलाकार मेव च॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

माज्यनिर्वापः। घी में कोई अशुद्ध वस्तु न पड़ी हो यह देख लें। **ततोऽधिश्रयणम्।** घी को गरम कर लें। **ततोज्वलतृणादिनाहविर्विष्टयित्वा प्रदक्षिण क्रमेण वह्नो तत्प्रक्षेपः।।** एक तृण जलाकर वेदी और घी के चारों ओर दाहिना घुमाकर अग्नि में डाल दे।

अग्निकरणम्-**ॐ एतं ते देव सवितुर्यज्ञं प्राहुबृहस्पतये ब्रह्मणे। तेन यज्ञमव तेन यज्ञपतिं तेन मामव।।** अग्नि जलाकर श्रुव को गरम कर दे-**ततः श्रुव प्रतपनं कृत्वा सम्मार्जन**[2] **कुशानांऽग्रेरन्तरतो मूलैबाह्यतः।।** सम्मार्जन- कुशाओं के अग्रभाग से श्रुवे के अग्र भाग मध्य से श्रुवे के मध्य जड़ से श्रुव के मूल को लगावें। **श्रुवं संमृज्य प्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्य।** प्रणीता के जल का श्रुवे पर छींटा देवें। **पुनः प्रतप्य श्रुवं दक्षिणो निदध्यात्।** श्रुवा को पुनः अग्नि में तपाकर दक्षिण में रख दें। **ततः आज्यस्याग्नेश्वतारणम्।** घी के पात्र को अग्नि से उतार लें। **ततः आज्यस्यप्रोक्षणीवदुत्पवनम्।** इसके बाद घी को तीन बार उछालें। **अवेक्ष्य अपद्रव्येतन्निरसनम्।** घी में कोई अशुद्ध वस्तु हो तो उसे निकाल दें। **ततः उपयमनकुशा**[3] **न्वामहस्तेनादाय उतिष्ठन् मनसा प्रजापति ध्यात्वा तूष्णिमग्नौ घृताक्ताः समिधस्तिस्त्रः प्रक्षेपः।।** फिर

---

१. आज्यस्थाली कांस्यमयी तद्वा ताम्रमय तथा।
प्रादेश मात्र दीर्घा सा गृहीतव्या ऽ वा शुभा।।

२. श्रुव संमार्जनार्थाय पंचवा ऽथ त्रयो ऽपि वा।
प्रादेश मात्रा न्गृहणीया त्संमार्जनकुश संज्ञकान्।।

३. उपयमनार्थ माख्याता स्त्रिषण वामिताः कुशाः।
वेणीरूपा निरीधार्थां निरोधे बहुभि सुखम्।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कर्मकर्ता कुशायुक्त उठकर प्रजापति भगवान का ध्यान करके चुपचाप (मौन) होकर तीन लकड़ी (प्रादेशमात्र) घी में भिगोकर अग्नि में छोड़ दें। **ततः उपविश्य सपवित्रः**[१]। इसके बाद पवित्रा हाथ में लिए हुए कर्मकर्त्ता बैठ जाय। **प्रोक्षण्युदकेन प्रदक्षिण क्रमेणाग्निपर्युक्षणं कृत्वा**। पवित्री से प्रोक्षणी के जल का छींटा अग्नि के चारों तरफ लगाये। **प्रणीतापात्रे निधाय**। प्रणीता पात्र में पवित्रा रख दे। **ब्रह्मणान्वारब्धः पातित दक्षिणजानुराज्येनजुहुयात्**। ब्रह्मा से अन्वारब्ध कर दक्षिण जानु को नवाकर घी को श्रुव से[२] अग्नि में डाले। **ततः आहुति चतुष्टये प्रत्याहुत्यनन्तरं हुत शेषघृतस्य प्रोक्षणी पात्रे प्रक्षेपः**। अब घी की आहुती देने के बाद श्रुवे के बचे घी को प्रोक्षणी पात्र में डालता जाय। **ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये। ॐ इन्द्राय स्वाहा। इदं इन्द्राय। ॐ अग्नये स्वाहा। इदं अग्नये। ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय। ततोनन्वारब्धो जुहुयात**। अब बिना अन्वारब्ध के हवन करे। **ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा। इदमग्नये स्विष्टकृते। ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये। ॐ भुवः स्वाहा। इदं वायवे। ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय। मङ्गलाग्निं सम्पूज्य**। सीमन्तोनयन संस्कार में मंङ्गल नाम से अग्नि का पूजन करे। **पुनः त्वन्नो अग्ने मंत्र द्वयस्यवामदेव ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दोग्निवरुणौ देवते सर्व प्रायश्चित होमे विनियोगः। ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य**

---

१. यथा चक्रायुधं विष्णो यथाशूलं हरस्य च।
यथा वज्रंसुरेन्द्रस्य तथा विप्र करे कुशा॥

२. चतुः गुल्य परित्यज्य षड्ङ्गुल्य मथापिवा।
करेण मृचमाछाद्य धारयेच्छंख मुद्रया॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विद्वान्देवस्य हेडो अवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः। शोशुचानो विश्वाद्वेषाꣳसिप्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा।। इदमग्नये।। ॐ सत्वन्नो अग्नेवमो भवोतीने दिष्टो अस्या उषसोव्युष्टौ। अवयक्ष्वनोवरुणꣳ रराणोव्वीहिमृडीकꣳसुहवोनएधि स्वाहा।। इदं वरुणाय।। ॐ अयाश्चाग्ने मंत्रस्य विराड्ऋषिर्गायत्रीछन्दोग्निर्देवता सर्व प्रायश्चित होमे विनियोगः।। ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च-सत्यमित्वमयाअसि। अयानो यज्ञं वहास्ययानोधेहि भेषज ꣳ स्वाहा। इदमग्नये।। ये ते शतं मंत्रस्य शुनः शेफ ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दोग्निर्देवता सर्व प्रायश्चित होमे विनियोगः।। ॐ ये ते शतं वरुणं ये सहस्त्रं यज्ञियाः पाशावितताममहान्तः। तेभिर्नोअद्यसवितोत विष्णुर्विश्वेमुंचन्तुमरुतः स्वर्काः स्वाहा। इदं वरुणाय।। सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम।। ॐ उदुत्तमं मंत्रस्य शुनः शेफऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो वरुणो देवता सर्वप्रायश्चितहोमे विनियोगः।। ॐ उदुत्तमंवरुणपाशमस्मदवाधमं विमध्यम ꣳ श्रथाय। अथावयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा।। ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये। इतना हवन करके **संस्त्रवप्रासनम्**। अर्थात् श्रुव के शेष घी को यजमान मुंह पर लगावे पुनः आचमन करे। पूर्ण पात्र संकल्प-

अद्यः सीमन्तोन्नयन होम कर्मणि कृताकृतावेक्षण-रूप ब्रह्मकर्मणः प्रतिष्ठार्थमिदं तण्डुलपूर्णपात्रं प्रजापति दैवतम अमुक गोत्राय अमुक शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सम्प्रददे॥ आचार्य ब्रह्मा की ग्रन्थ खोल करके प्रणीता पात्र के जल से यजमान के ऊपर जल के छींटे देवे। **सुमित्रियान मंत्रस्य दध्यङाथर्वणऋषि आपो देवताः शिरः प्रोक्षणे विनियोगः॥ ॐ सुमित्रयान आप ओषधयः सन्तु॥** शेष जल को ईशान दिशा में डाल दें- **दुर्मित्रियास्तस्मैसन्तु योस्मान् द्वेष्टियंचवयं द्विष्मः॥** अब पति द्वारा गर्भिणी के सीमांत (भाग) का पृथक करण उदुम्बरादि वनस्पति के द्वारा अथवा श्वेत शल्लकी के कांटे के द्वारा दर्भ युक्त होकर वेणी बनावे-**ॐ भूर्विनयामि। ॐ भुवर्विनयामि। ॐ स्वर्विनयामि।** अब पांच वेणी बनावे- **अयं मंत्रस्य प्रजापति ऋषि बृहती छन्दः फलिनी देवता वेणी बन्धने विनियोगः॥** आचमन छोड़कर मंत्र कहे- **ॐ अय मूर्जावतोवृक्षऽऊर्जीवफलिनी भव॥** सौभाग्यवती स्त्रियां आशीर्वाद दें कि तू वीर माता बन। **ततः पतिः सोमं राजानं गायताम्, इति प्रेरयेत् तत्र मंत्रसोममित्यस्य प्रजापतिः ऋषिर्गायत्री छन्दः सोमो देवता गाने विनियोगः। ॐ सोम एव नो राजेमा मानुषीः प्रजाः। अविमुक्त चक्रआसीरंस्तीरे तुभ्यमसौ॥** फल पुष्प युक्त घी से पूर्णाहूति-**मूर्धानमितिमंत्रस्य भरद्वाज ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दोग्नि-र्देवता पूर्णाहूति होमे विनियोगः। ॐ मूर्धानंदिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृतआजातमग्निं कवि ँ सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्तदेवाः॥** आचार्य श्रुव से भस्म निकालकर यजमान के ललाटादि में लगावै। पुनः ब्राह्मण को भोजन दक्षिणादि देकर यजमान आशीर्वाद लेवे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

।।जातकर्म।।

जातकर्म में प्रसवपीड़ा से पहले भूमि को साफ करना तथा जन्म के बाद शिशु तथा माता का अभिमंत्रण प्रक्षालन पूर्वक बालक को माता के दक्षिण तथा वाम स्तन देना। बालक को साफ कर मधु घी चटाना जातक के शरीर में उबटन लगाना कफ निकालने के मधु घी का खिलाया जाना जिससे जातक स्वस्थ हो नालछेदन आदि इस समय ही किये जाते हैं। इस समय चावल सरसों से भी होम किया जाता है इसके बाद छठवें दिन षष्ठी पूजन विधान है षष्ठि अर्थात् हाथ, पैर, शिर, धड़ इन अंगों को निरोग करने हेतु षष्ठि पूजन किया जाता है।

सुख प्रसवोपाय-

हिमवदुत्तरे कूले सुरसा नाम राक्षसी। तस्या नुपूर शब्देन विशल्या गुर्विणी भवेत्।।
ऐं ह्रीं भगवति! चल चल भ्रामय पुष्पं विकाशय स्वाहा।।
ॐ नमो भगवते मकरकेतवे पुष्पधन्विने प्रतिचालित सकल सुरासुर चित्ताय युवति भगहासिने ह्रीं गर्भं चालय चालय स्वाहा।।
इन मंत्रों से अभिमंत्रित दूध पिलाने से प्रसव सुख से होता है।

(हरित संहिता)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

॥जातकर्म संस्कार॥

जातकर्म[१] संस्कार जब गर्भ से बालक का जन्म होने वाला हो तो गृह की स्वच्छता, बालक का स्नान, नाल छेदन, दूध पिलाना, शारीरिक, मानिसक, आध्यात्मिक उन्नति के लिए किया जाता है तथा इस संस्कार से बालक द्वारा माता के गर्भ में जो भक्षण किया वह दोष दूर होता है।

यजमान को आचार्य आचमन देकर संकल्प करावे-

ॐ अद्येत्यादि० मम अस्य कुमारस्य गर्भाम्बुपान जनित सकलदोष निबर्हणायुर्मेधाभिवृद्धि वीजगर्भसमुद्भ-वैनौनिवर्हण द्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं जातकर्माख्यं कर्म करिष्ये। जल लेकर-**मम अस्यकुमारस्य जातकर्म संस्काराङ्गनिमित्तं पञ्चोपचारैः गणपत्यादिपंचांग देवता पूजन महं करिष्ये॥** पंचाग देवता का पूजन कर एक कांसे के पात्र में मधु, घी मिलाकर जातक को विनियोग कर चार बार सुवर्ण[२] से चटावें-

विनियोग-**तृव्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिः गायत्री उष्णिक्अनुष्टुप्बृहतिछन्दांसि अग्निवायुसूर्यप्रजापतयो देवताः प्राशने विनियोगः। ॐ भूस्त्वयि दधामि। ॐ भुवस्त्वयिद-धामि। ॐ स्वस्त्वयिदधामि। ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वत्वयि दधामि।** इसके बाद बालक के दक्षिण कर्ण या नाभि के पास

---

१. गार्भैर्होमैर्जातकर्मचौडमौञ्जी निबन्धने।
बैजिक गार्भिक चैनोद्विजानामपमृज्यते॥ (मनु० २/२७)

२. प्राङ्नाभिवर्धनात्पुंसो जातकर्म विधीयते।
मंत्रवत् प्राशनं चास्य हिरण्यमधु सर्पिसाम्॥ (मनु० २/२९)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

की दीर्घायु के कर्त्ता जातक की दीर्घायुः के लिए निम्न आठ मंत्रों का उच्चारण करे-

अग्निरायुष्मानित्यादिमंत्राष्टकस्य प्रजापतिर्ऋषि स्त्रिष्टुप् छन्दो लिङ्गोक्ता देवताः दक्षिणकर्णाभिमंत्रणे विनियोगः।

एक आचमन जल छोड़कर मंत्र पढ़े-**ॐ अग्निरायुष्मान्-त्सवनस्पतिभिरायुष्माँस्तेनत्वायुऽषायुष्मं तं करोमि।।१।। ॐ सोमआयुष्मान् स ओषधीभिरायुस्माँस्तेनत्वायुषायुष्मंतं करोमि।।२।। ॐ ब्रह्मायुष्मतद् ब्राह्मणैरायुष्मत्तैन त्वायुषायुष्मन्तं करोमि।।३।। देवा आयुष्मन्तस्ते ऽ मृतेनायुष्मन्तस्तेनायुष्मन्त स्तेन त्वायुषा युष्मन्तं करोमि।।४।। ॐ ऋषय आयुष्मन्तस्ते व्रतैरायुष्मन्तस्तेन त्वायुषायुष्मन्तं करोमि।।५।। ॐ पितर आयुष्मन्तस्ते स्वधाभिरायुष्मन्तस्तेन त्वायुषायुष्मन्तं करोमि।।६।। ॐ यज्ञ आयुष्मान् सदक्षिणा-भिरायुष्मास्तेन त्वायुषायुष्मन्तं करोमि।।७।। ॐ समुद्र आयुष्मान् सस्त्रवंतीभिरायुस्माँस्तेन त्वायुषायुष्मन्तं करोमि।।८।।** ऐसा तीन बार कहकर जातक की दीर्घायु के लिए पिता विनियोग कर स्पर्श करे।

कार्तिकादिप्रसूता

तुलाराशि गते भानौ यस्य भार्या प्रसूयते।
तत्क्षणे संत्येजद् भार्या यावत् शान्तिं न कारयेत्।। (गर्ग) और भी कहा है-
स्त्री प्रसूता यदि कार्तिके स्यात्सिंहे गवां वृश्चिचके कुंजरीणाम्।
कर्के श्वाश्चिनि राशभीनामुष्ट्री च मेये प्रसवो हयैर्वा।।
जेष्टे विडाली महिषि च माघे मृत्युर्भवत्सर्वदा दुख भर्तुः।।

कार्तिक मास में स्त्री का प्रसव, भादौ में गौ, जेष्ठ में बिल्ली, श्रावण में घोड़ी, माघ में भैंस का प्रसव होना अनेक विघ्नो का कर्ता कहा है, इसलिए उपरोक्त प्रसव होने के बाद अवश्य शान्ति करें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विनियोग-दिवस्परित्येकादशानां मंत्राणा वत्सप्रियानन्दन ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दोऽग्निर्देवता जाताभिमर्शने विनियोगः॥

विनियोग छोड़कर फिर स्पर्श के मंत्र पढ़े-**ॐ दिवस्परि प्रथमं यज्ञे अग्निरस्मद् द्वितीयं परिजात वेदाः। तृतीय मप्सुनृमणा अजस्त्रमिंधान ऽएनं जरते स्वाधीः॥१॥ ॐ विद्मा ते अग्ने त्रेधा त्रयाणि विद्मा ते धाम बिभृता पुरुत्रा। विद्मा ते नाम परमं गुहाय विद्मा तमुत्सं यत आजगन्थ॥२॥ ॐ समुद्रेत्वानृमणा अप्स्वन्तनृचक्षा ईधे दिवो अग्न ऊधन्। तृतीये त्वा रजसि तस्थिवा ँ समपामुपस्थे महिषा अवर्द्धन्॥३॥ ॐ अक्रन्ददग्निस्तनय-निवद्यौः क्षामारेरिहद्वीरुधः समञ्जन्। सद्यो जज्ञानो विहीमिद्धोऽअख्यदा रोदसी भानुना भान्त्यन्तः॥४॥ ॐ श्रीणामुदारो धरुणो रयीणां मनीषाणां प्रार्पणः सोमगोपाः। वसुः सुनूः सहसो अप्सु राजाविभात्यग्र ऽ उषसाभिधानः॥५॥ ॐ विश्वस्य केतुर्भुवनस्य गर्भआरोदसिऽअपृणा ज्जायमानः। वीडुंचिदद्रिमभिनत्परायन् जनायदग्निमयजन्त पंच॥६॥ ॐ उषिक् पावको अरतिः सुमेधा मर्त्येष्वग्निरमृतो निधायि। इयत्ति धूममरुषं भरिभ्रमुदुच्छुक्रेण शोचिषाद्यामिनक्षन्॥७॥ ॐ दृशानो रुक्म ऽ उर्व्या व्यद्यौद् दुर्मर्षमायुः श्रियेरुचानः। अग्निरमृतो अभवद्वयोभिर्यदेनंद्यौर जनयत् सुरेताः॥८॥ ॐ यस्ते अद्य कृणवद्भद्र शोचेपूषं देव घृतवन्त मग्ने। प्रतन्नय प्रतरंवस्यो अच्छाभिसुम्नं देवभक्तंयविष्ठ॥९॥ ॐ आतं भज सौश्रवसेष्वग्न उक्थ ऽ उक्थ आभज शस्यमाने। प्रियः सूर्ये प्रियो अग्नाभवात्युजातेनभिनद्दुजानित्त्वैः॥१०॥**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ जा त्वामग्ने यजमाना ऽ अनुद्युन् विश्वा वसु दधिरे वीर्याणि। त्वया सहद्रविणमिच्छमाना ब्रजं गोमन्तमुशिजोविवव्रु:॥११॥ जातक का पिता पूर्वादि चार दिशाओं में चार तथा एक ब्राह्मण का मध्य में पूजन करे, पुनः पांच कलशों को स्थापित करें। फिर ब्राह्मण कहें- **इममनुप्राण। इतिपूर्वः। इममनु व्यान। इतिदक्षिणः। इममन्व पान। इति पश्चिमः। इमनूदान। उदानेत्युत्तरः। इममनु समान। इतिमध्य।** जातक का पिता पांच कलशों को ब्राह्मणों को दे देवें। पुनः जन्म भूमी पूजन करें-

विनियोग-**वेदते भूमि हृदयं इत्यस्य प्रजापतिर्ऋषि अनुष्टुप्छन्दः भूमिर्देवता जन्मभूम्यभिमन्त्रणेविनियोगः।** एक आचमन जल छोड़ देवे तथा भूमि पूजन करे- **ॐ वेदते भूमि हृदयं दिवि चन्द्रमसि श्रितम्। वेदाहं तन्मा तद्विद्यात् पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत ॐ श्रणुयाम शरदः शतम्॥**

इसके पश्चात् पुनः विनियोग छोड़कर जातक का अभिमंत्रण तथा प्रसवोत्पीड़ित जननी को वेद की धैर्यप्रद वाणी सुनावे- **अश्माभवेत्यस्य प्रजापति ऋषिरनुष्टुप्छन्दः लिङ्गोक्तादेवता अभिमर्शने विनियोगः। ॐ अस्माभव परशुर्भव हिरण्यं श्रुतंभव। आत्मा वै पुत्रनामासित्वं जीव शरदः शतम्॥ इडासित्यस्य प्रजापतिर्ऋरनुष्टुप्छन्द इडादेवताऽभिमंत्रणे विनियोगः॥ ॐ इडासि मैत्रावरुणी वीरे वीरमजीजनथाः। सात्वं वीरवती भव याऽस्मान् वीरवतोऽकरत्॥** जातक को पहले दक्षिण फिर वाम स्तन माता धोकर विनियोग पूर्वक पिलावे-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विनियोग-इममिति प्रजापतिर्ऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दः अग्निर्देवता दक्षिण स्तन प्रदाने विनियोगः। मंत्र- ॐ इम ँ स्तनमूर्जस्वन्तं धयापां प्रपीन मग्ने सरिरस्य मध्ये। उत्संजुषस्व मधुमन्तमर्वन्त्समुद्रियँ सदनमा विशस्व।। पुनः यस्तेस्तन इति दीर्घतमाऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः वाग्देवता वामस्तन प्रदाने विनियोगः।। ॐ यस्ते स्तनः शशयो यो मयोभूर्यो रत्नधा वसुविद्यः सुदत्रः। येन विश्वा पुष्यसिवार्याणि सरस्वति तमिह धातवेऽकः। इसके बाद जातक की माता के सिर के ऊपर स्थान (सिरहाने) में एक बर्तन जल रख देवें-

विनियोग-ॐ आप इत्यस्य प्रजापति ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः आपो देवता सूतिकायाः शिरः प्रदेशे रक्षार्थोदक कुंभ स्थापने विनियोगः। मंत्र-ॐ आपोदेवेषु जाग्रथ यथा देवेषु जाग्रथ। एवमस्या ँ सूतिकाया ँ सुपुत्रकायां जाग्रथः।। इसके बाद सूतिका गृह के द्वार के पास प्रगल्भ नाम से अग्नि का पूजन कर पञ्च भू संस्कार आदि कर चावल, तिल, सरसो से दस दिन तक पिता या ब्राह्मण हवन करे।

हवन के विनियोग-शुण्डामर्कामंत्रस्य प्रजापतिर्ऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दो अग्निर्देवता होमे विनियोगः।।

मंत्र-ॐ शुण्डामर्काउपवीरः शौण्डिकेय उलूखलः। मलिम्लुचो द्रोणाश्चवनोनश्यतादितः।। स्वाहा।। आलिखन्नितिमंत्रस्य प्रजापतिर्ऋषि अनुष्टुप्छन्दो अग्निर्देवता होमे विनियोगः।। मंत्र-ॐ आलिखन्नानिमिषः किंवदन्त उपश्रुतिर्हर्यक्षः कुंभीशत्रुः पात्रपाणिर्नृमणिः। हंत्री मुखः सर्षपारूणश्चवनो नश्यतादितः स्वाहा।। जातकर्म के साथ ही जातक की नाभि से आठ अंगुल छोड़कर नाल काट दें। यजामन ब्राह्मणों को दक्षिणा देकर आशीर्वाद ग्रहण करे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

॥षष्ठिमहोत्सव॥

जन्म के छठवें दिन पिता स्नान कर शुद्ध हो ब्राह्मण को बुलाकर गणेशादि देवताओं का पूजन कर चौकी पर स्कन्द तथा प्रद्युम्न के मध्य षष्ठि देवी की प्रतिमा स्थापित कर पूजन हेतु संकल्प करे-

ॐ अद्येत्यादिः देशकालौस्मृत्वा अमुकगोत्रोऽमुक शर्माहं अमुकराशेः बालकस्य दीर्घायुरारोग्यावाप्तये सर्वोपद्रव शान्तये श्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थं प्रद्युम्नस्कन्द पूजनपूर्वक षष्ठिदेव्याः यथा मिलितोपचारैः पूजनं करिष्ये॥

स्कन्द पूजन-

मयूर वरमारुढो द्विभुजो बालरूप घृक्।
मुद्गरं वामहस्तेतु शक्तिं दक्षिणतो न्यसेत्॥
वराभयकरः साक्षाद्विभुज शिखिवाहनः।
किरीटी कुण्डली देवो दिव्याभरण भूषितः॥

प्रद्युम्न पूजन-

प्रद्युम्नस्तु महाबाहुः शंखचक्रगदाधरः।
चक्रंदक्षिण हस्तेस्याद् वामहस्ते धनुस्तथा॥
शंखं च दक्षिण दद्याद् गदां वामे प्रदापयेत्।
प्रद्युम्नं कारयेद्देवं सर्वभूषणं संयुतम्॥

स्कन्द प्रद्युम्न का पूजन गंध अक्षतादि द्वारा कर प्रार्थना करें-

कार्तिकेय महावाहो गौरी हृदय नन्दन।
कुमारं रक्ष मे भीतेः कार्तिकेयनमोस्तुते॥१॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भो प्रद्युम्न महावाहो लक्ष्मी हृदय नन्दन।
कुमारं रक्ष मे भीते प्रद्युम्नाय नमो नमः॥२॥

षष्ठिपूजन

षष्ठि देवी की प्रतिमा के आगे आठ दीपक रख दूर्वा कुण्डल से सजाकर पूजन करें-

आवाहन-

आयाहि वरदे देवि! षष्ठी देवीति विश्रुता।
शक्तिभिः सहपुत्रं मे रक्षरक्ष वरानने॥

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुम्म इषाणसर्वलोकं म इषाण॥

प्रतिष्ठापन-

आगच्छ वरदे देवी स्थाने चात्र स्थिराभव।
आराधयामि भक्त्या त्वां रक्षबालं च सूतिकाम्॥
ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्ण रजतस्त्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदोमआवह॥

आसन-

सन्ध्याराग निभं रक्तमासनं स्वर्ण निर्मितम्।
गृहाण सुमुखी भूत्वा रक्षबालं च सूतिकाम्॥
ॐ ताम्म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपमामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देय गामश्वं पुरुषानहम्॥

पाद्य-

गंगाजलं समानीतं सुवर्ण कलशे स्थितम्।
पाद्यं गृहाण मे बालं सूतिकां चैव पालय॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ अश्व पूर्णां रथमध्यां हस्तिनाद प्रमोधिनीम्।
श्रीयं देविमुपह्वये श्रीर्मादेवीर्जुषताम्।।

अर्घ्य-

अक्षतपुष्प गन्धाढ्यमर्घ्यार्थं निर्मलं जलम्।
गृहाण पाहि मे पुत्रं सूतिकां भय हारिणि।।

ॐ कांसोस्मितां हिरण्यप्रकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहो पह्वये श्रियम्।।

आचमन-

गृहाणाचमनीयन्तु कर्पूरैलादि वासितम्।
सबालां सूतिकां पाहि जगन्मातर्नमोस्तुते।।

ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टा मुदाराम्।
तां पद्मनेमिं शरणमहं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि।।

पंचामृतस्नान-

पंचामृतगृहाणेदं पयोदधिघृतं मधु।
शर्करा सहितं देवि पाहिबालं समातृकम्।।

ॐ घृतेन सीता मधुना समज्यतां विश्वैर्देवैरनुमता मरुद्भिः।
ऊर्जस्वती पयसा पिन्वमानाऽस्मान् सीते पयसाऽभ्याववृत्स्वः।।

वस्त्र-

दुकूलादिमयं देविनानारत्नैः परिस्कृतम्।
परिधत्स्वामलं वस्त्रं रक्षमे सुत सूतिकैः।।
ॐ उपैतुमां देव सखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतो सुराष्ट्रेस्मिन् कीर्तिवृद्धिं ददातु मे।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उपवीत-

नानारत्नमयं दिव्यं मुक्ताहारमयं शुभम्।
गृहाण त्वं महादेवी रक्ष मे सुतसूतिके।।
ॐ क्षुत्पिपासामलाजेष्ठा अलक्ष्मीर्नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्।।

चन्दन-

कर्पूरागरुकस्तूरी केशरेण समन्वितम्।
चन्दनं स्वीकुरु त्वंमे रक्ष बाल च सूतिकाम्।।
ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहो पह्वये श्रियम्।।

पुष्प-

सुमाल्यानि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
गृहाण वरदे देवि! रक्ष बालं च सूतिकाम्।।
ॐ मनसः काममांकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्री श्रयतां यशः।।

धूप-

वनस्पत्युद्भवं धूपं दिव्यं स्वीकुरु देवि मे।
प्रसीद सुमुखी भुत्वा रक्ष मे सुत सूतिके।।
ॐ कर्दमेन प्रजाभूता मयि सम्भ्रमकर्दम।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्।

दीप-

चतुर्वर्ति समायुक्तं घृतेन देवि पूजितम्।
जीवन्तिके गृहाणेमं रक्ष मे सुत सूतिके।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ आप सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
निच देवी मातरं श्रियं वासय मे कुले।।
नैवेद्य-नैवेद्यं लेह्य पेयादि षड्रसैश्च समन्वितम्।
मुङ्क्ष्व देवि! गणैर्युक्ता रक्ष मे सुत सूतिके।।
ॐ आर्द्रां यः करिर्णीं यष्टि सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह।।

ताम्बूल-

नागवल्ली दलं रम्यं पूगीफल समन्वितम्।
भद्रेगृहाण ताम्बूलं पाहि मे सुत सूतिके।।

दक्षिणा-

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

निराजन-

कदलीगर्भ सम्भूतं कर्पूरं च प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे रक्षबालं च सूतिकाम्।।

पुष्पांजलि-

नानासुगन्ध पुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पांजलिं गृहाणेदं रक्षबालं च सूतिकाम्।।

प्रदक्षिणा-

यानिकानि च पापानि जन्मान्तर कृतान्यपि।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणा पदे पदे।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रार्थना–

षष्ठीदेवि! नमस्तुभ्यं सूतिका गृह शालिनी।
पूजितापरया भक्त्या दीर्घमायुः प्रयच्छ मे॥१॥
जननी जन्म सौख्याना वर्धिनी कुलसम्पदाम्॥
साधिनी सर्वभूतानां जन्मदेत्वां नतावयम्॥२॥
गौरी पुत्रो यथा स्कन्दः शिशुत्वे रक्षितः पुरा।
तथा ममाप्युमुं बालं षष्ठि मे रक्ष ते नमः॥३॥
यथा दाशरथी रामश्चतुर्मुर्तिर्भव प्रदे।
त्वया संरक्षितस्तद्वद् बालं पाहि शुभ प्रदे॥४॥
विष्णुनाभिस्थितो ब्रह्मा दैत्येभ्यो रक्षितस्त्वया।
तथा मे बालकं रक्ष योगनिन्द्रे नमोस्तुते॥५॥
रक्षितौ पूतनादिभ्यो नन्दगोप सुतौ यथा।
तथामे बालकं पाहि दुर्गे देवि नमोस्तुते॥६॥
यथा वृत्रासुरादिन्द्रो रक्षितोऽदिति बालकः।
त्वया तथा मे बालोऽयं रक्षणीयो महेश्वरी॥७॥
यथा त्वयाञ्जनीपुत्रो हनुमान् रक्षितः शिशु।
तथा मे बालकं रक्ष दुर्गे दुर्गार्तिहारिणी॥८॥
रुद्र स्वर्गाद्यथा देवि कश्यपादिसुतास्त्वया।
मातरत्राहि तथाबाल विष्णुमाये नमोस्तुते॥९॥
सर्वविघ्नानपाकृत्य सर्व सौख्यप्रदायिनी।
जीवन्तिके जगन्मातः पाहि नः परमेश्वरी॥१०॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आचार्य कर्ता से दिक्पाल प्रसन्नार्थ पूजन बलिदान कर देवे।

बलिप्रदान-

क्षेत्रस्याधिपति देवि!सर्वारिष्ट विनाशिनी।
बलिं गृहाण मे क्षेत्रं रक्ष बालं च सूतिकाम्॥

यह कहकर सूतिका स्थान में पकवान की एक बलि क्षेत्राधिपति देवता हेतु देकर द्वार मातृकाओं का पूजन कर देवें-

ध्यान-

कुमारी धनदा नन्दा विपुला मंगलाऽचला।
पद्मा चैव तु नामोक्ता सप्तैता द्वार मातरः।
ॐ कुमार्यैनमः॥ ॐ धनदायै नमः॥ ॐ नन्दायै नमः॥ ॐ विपुलायै नमः॥ ॐ मङ्गलायै नमः॥
ॐ अचलायै नमः॥ ॐ पद्मायै नमः॥

पंचोपचार या षोडशोपचार से पूजन कर दें। षष्ठिपूजन के बाद सूतिका गृह में अग्नि, दीपक, शस्त्र, मूशल, जलपात्र, भस्म, सरसों युक्त पोटलिका रख देवें यजमान ब्राह्मणों को यथाशक्ति दक्षिणा से सन्तुष्ट करे।

अनया पूजया विघ्नेशस्यजन्मदा जीवन्त्यपरनाम्नी षष्ठी देवी शस्त्रगर्भा भगवत्यः प्रीयन्ताम्॥

॥ इति षष्ठि महोत्सव॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

॥ अथ षष्ठि महोत्सव कथा ॥

ॐ नारायणं नमस्कृत्यं नरं चैव नरोत्तमम्।
देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत्॥१॥

युधिष्ठिर उवाच-

पुत्रजन्मनि कन्याया उत्सवः को विधियते।
किं दानं कस्य पूजा च तन्मेब्रूहि जनार्दन॥२॥

श्रीकृष्ण उवाच-

श्रुणु पाण्डव यत्नेन सुतोत्पतिमहोत्सवम्।
जन्मषष्ठदिने कार्या षष्ठिनाम्ना त्रिशूलिनी॥३॥
पीठे पराह्नसमये गोमयीं प्रतिमां लिखेत्।
कपर्दिकाः प्रदातव्याश्चाङ्गे चाङ्गे विशेषतः॥४॥
कर्णे कुण्डलकौ देयौ दूर्वा पल्लव शोभितौ।
दिव्य वस्त्र परीधानां तां देवीं पूजये ततः॥५॥
अग्रे दीपाष्टकं देयं नैवेद्यैर्विविधै शुभै।
नारिकेलादिकं तद्वद्देशकालोद्भवै फलै॥६॥
कलशं स्थापये तत्र अग्रतः पल्लवान्वितम्।
द्विजन्मानं सपत्निकं सदाचार समन्वितम्॥७॥
आहूय कारयेत्तस्यास्तयोर्हस्तेन पूजनम्।
शुक्ल तण्डुलवेद्या तु तस्योपरि समाहितम्॥८॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नृत्यगीत विनोदेन वाद्येन च युधिष्ठिर।
रात्रौजागरण कार्य दैवज्ञेन द्विजै सह॥९॥
वट काष्टकमालाभिर्बद्धग्रीव मजासुतम्।
पुनर्पुनः महाशब्दं कारयेत्कर्ण ताडनात्॥१०॥
डाकिन्यो यातुधानाश्च भूतप्रेत पिशाचकाः।
बालग्रहाश्चनश्यन्तितच्छब्दाकर्णनाद्ध्रुवम्॥११॥
तत्र दानानि देयानि ब्राह्मणेभ्यो विशेषतः।
प्रथमेऽहनि षष्ठे दाता नाप्नोति सूतकम्॥१२॥
दानं प्रतिग्रहं तत्र श्राद्धं च क्रियते यतः।
प्रभाते दीयते दानं नटनर्तक गायकान्॥१३॥
स्त्रियंः सभतृका पूज्या वस्त्रालंकारणादिभिः।
अनेना विधिना यस्तु षष्ठिदेवीं प्रपूजयेत्॥१४॥
आयुर्बृद्धिः भवेतस्त सन्ततेरपि पाण्डव।
पुत्रे जाते व्यतीपाते ग्रहणे सूर्य चन्द्रयो॥१५॥
पितुः संवत्सरादि दानं कोटि कोटि गुणं भवेत्।

॥ इतिषष्ठि महोत्सव पूजा कथा ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

॥नामकरण॥

'दशम्युत्तरं कालं पुत्रस्य जातस्य नाम विद्ध्यात्[१]।' ग्यारहवें दिन नामकरण किया जाता है इस दिन दो नाम रखने की प्रथा भी है- एक जन्मकालीन नक्षत्र के स्मरणार्थ तथा दूसरा व्यवहारिक। ब्राह्मण के नाम के अन्त में शर्मा, क्षत्रिय के नाम के अंत में वर्मा, वैश्य के नाम के अंत में गुप्त, ब्राह्मण का नाम मंगल युक्त, क्षत्रिय का सामर्थ्य वैश्य का ध नवत्ता का द्योतक हो तो श्रेष्ठ है। शिशु का नाम सुगम, सुन्दर होना चाहिए अच्छा नाम होने से गुण भी अच्छे होते हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

॥नामकरण संस्कार॥

सूतक के अन्त में[१] पिता आचार्य द्वारा घर में पंचगव्य से शुद्धि करवाकर यजमान सपत्नीक शुद्ध हो गणपत्यादि देवताओं का पूजन करें।

कर्त्ता नामकरण संस्कार के लिए संकल्प करे-

ॐ अद्येत्यादि॰ (देशकाल का उच्चारण कर) **अमुक शर्माहं ममास्य जातस्य पुत्रस्य बीजगर्भसमुद्भवैनोनिवर्हणाय नामाख्यं संस्कारं करिष्ये॥** आचार्य का वरण कर आचार्य हवन वेदी बनवाये। आचार्य अग्निस्थापन (पार्थिव नाम से) पूजन (सीमन्तो नयन संस्कार में देखें) करें तत्पश्चात् कांसे की थाली में चावल फैलाकर सामर्थ्यानुसार स्वर्ण शलाका से जो नाम रखना हो लिखे। ब्राह्मण द्वारा देवताओं के नाम पीपल के पत्तो पर (गणपती, कुलदेवता मास नक्षत्र द्वारा राशिनाम तथा व्यवहार नाम) लिखे तथा नाम पूजन संकल्प कहें-

ॐ अद्येत्यादि॰ ममास्य शिशोः वह्वायुष्य प्राप्त्यर्थ नाम देवता पूजनमहं करिष्ये।

नाम देवताभ्यो नमः आवाहयमि स्थापयामि पूजयामि॥ पीपल पर लिखे नाम का पंचोपचार से पूजन कर पश्चात् माता पिता की दायीं ओर आसन पर बैठें पिता

---

१. सूतकं ब्राह्मणस्य दशाहं क्षत्रियस्य द्वादशाहं वैशस्य पंचदशाहं शूद्रस्य मासम्॥ इति वर्ण क्रमः॥ (शंख)
नामधेयं दशम्या च द्वाद्वश्यांवास्य कारयेत्।
पुण्ये तिथौ मुहूर्ते वा नक्षत्रे वा गुणान्विते (मनु २/३०)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

या ब्राह्मण बालक के दाहिने कान के पास मुख कर कहें-

हे कुमार त्वं[१]...(कुलदेवताया भक्तोऽसि)

हे कुमार त्वं मासनाम्ना...असि।

हे कुमार त्वं नक्षत्र नाम्ना...असि

हे कुमार त्वं व्यवहार नाम्ना...असि।

ब्राह्मण आशीर्वाद के मंत्र कहे-

ॐ अङ्गादङ्गात् संभवसि हृदयादधि जायसे।

आत्मा वै पुत्रनामासि सः जीव शरदः शतम्॥

आचार्य पिता से लग्नादि दान करवाकर यजमान को आशीष दे, देवताओं का विसर्जन करे।

॥ इति नामकरण ॥

॥दन्तोत्पति विचार॥												
मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
फल	स्वयं नाश	भ्रातृ नाश	भगनी हानि	मातृ क्लेश	ज्येष्ठ भ्रातृ हानि	सुख	पितृ सुख	पुष्टि कारक	लक्ष्मी प्राप्ति	सौख्य प्राप्ति	सुख प्राप्ति	सम्पत्ति प्राप्ति

१. खाली स्थान में बालक के नाम का उच्चारण करे। नामकरण की महत्ता-
नामाखिलस्य व्यवहार हेतुः शुभावहं कर्मसुभाग्य हेतु।
नाम्नेव कीर्तिं लभते मनुष्यस्ततः प्रशस्तं खलु नामकर्म॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

॥निष्क्रमण॥

शिशु को घर बाहर भ्रमण कराने के लिए यह संस्कार किया जाता है इस संस्कार में शिशु को सूर्य तथा चन्द्रमा की ज्योति दिखाने का विधान है पूजनोपरान्त सूर्य दर्शन कुल देवी देवताओं के दर्शन तथा देवताओं से शिशु के लिए दीर्घ जीवन के लिए आशीर्वाद लेना इस संस्कार का उद्देश्य है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

॥निष्क्रमण संस्कार॥

चतुर्थ मास में चन्द्रशुद्धि पूर्व दिशा में यात्रोक्त शुभ दिन में निष्क्रमण[१] संस्कार किया जाता है, इसमें सूर्य दर्शन देवताओं का दर्शन तथा रात्रि में चन्द्र दर्शन करवाये जाते हैं।

संकल्प-

अद्येत्यादि० ममास्य शिशोरायुरभिवृद्धिव्यवहार सिद्धि द्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं गृहान्निष्क्रमणं करिष्ये।

आचार्य गणपति पूजन मातृका पूजन नान्दीश्राद्ध पुण्याहवाचन ग्रहादि पूजन के उपरान्त जातक को पिता या मां घर से बाहर लाकर सूर्य दर्शन करा पूजन करे।

सूर्य पूजन का विनियोग-

आकृष्णेति हिरण्यस्तूपर्ऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दः
सूर्यो देवता सूर्यावाहने पूजने विनियोगः॥

ध्यान-

ॐ पद्मासनः पद्मकरो द्विवाहुः पद्मद्युति सप्त तुरङ्गवाह।
दिवाकरो लोकगुरुः किरीटि मयि प्रसादं विदधातु देवः॥

भगवान सूर्य को रक्त पुष्प चढ़ाकर आवाहन करे-

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्न मृतंमर्त्त्यंच हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥ सूर्याय नमः॥

सूर्य भगवान को जल, दूध, गन्ध, फल युक्त अर्घ्य समर्पण करें।

मंत्र-

एहि सूर्य सहस्त्रांशो तेजोराशी जगत्पते।
अनुकम्पाहि मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकरः॥

---

१. चतुर्थेमासि कर्त्तव्यं शिशो र्निष्क्रमणं गृहात्।
षष्ठे ऽन्नप्राशनं मासि यद्वेष्टं मङ्गलं कुले॥ (मनु० २/३४)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सूर्य का पूजन गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेध से कर अर्घ्य के जल को आंखों पर लगा देवे-

ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्तात् छुक्रमुच्चरत् पश्येमशरदः शतंजीवेमशरदः शत ॐ श्रणुयामशरदः शतं प्रब्रवामशरदः शतमदीनाः स्यामशरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।। पुनः रक्त पुष्प लेकर प्रार्थना-

ॐ जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोरिं सर्वपापध्नं प्रणतोस्मि दिवाकरम्।।

सूर्य को देखकर पुष्प अर्पण करे फिर परिक्रमा कर देवें। आचार्य देवताओं का दर्शन भी करवा ले तथा सायंकाल में चन्द्रमा का दर्शन पूजन भी करा देवें।

चन्द्र पूजन-श्वेत पुष्प लेकर चन्द्रमा का ध्यान करे-

दधि शङ्ख तुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्।
ज्योत्स्नापतिं निशानाथं सोममावाहयाम्यहम्।।

पूजन-

ॐ इमं देवा ऽ असपत्न ॐ सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्येष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश ऽ एष वोऽमी राजा सोमो ऽ स्माकं ब्राह्मणानां ॐ राजा।। सोमायनमः।।

चन्द्रमा का पूजन कर प्रार्थना करे-

चन्द्रार्कयोर्दिगीशानां दिशां च वरुणस्य च।
निक्षेपार्थमिदं दद्मि ते त्वां रक्षन्तु सर्वदा।।
प्रमत्तं वा प्रसुप्तं वा दिवारात्रमथापि वा।
रक्षन्तु सततं ते त्वा देवाः शक्रपुरोगमाः।।

।। इति निष्क्रमण ।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

॥अन्नप्राशन संस्कार॥

जैसे जैसे शिशु का शरीर बढ़ता है उसी प्रकार शिशु को आहार की आवश्यकता होती है दूध के साथ शिशु को भोजन देना धीरे धीरे आरम्भ करना, तथा जैसे जैसे दांत निकले वैसे वैसे भोजन को अधिक सख्त तथा मात्रा में अधिक देना चाहिए जिससे शिशु का भी विकास उत्तरोत्तर हो सके। अन्न प्रशसन संस्कार का उद्देश्य ही जातक को पुष्ट करना है तथा पहली बार अन्न को वेद मंत्रों के द्वारा जब जातक को खिलाया जाता है तो इन धार्मिक कृत्यों के करने से जातक पुष्ट तथा स्वस्थ हो जाता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

॥अन्नप्राशन संस्कार॥

छठे अथवा आठवें माह बालक का तथा कन्या का पांचवे सातवें मास में अन्न प्राशन संस्कार किया जाता है। इस संस्कार से जातक के शरीर को पुष्ट करने तथा जातक की रुचि का परिचय प्राप्त किया जाता है। ज्योतिष शास्त्र में बतलाये गये चन्द्रादि ग्रह अनुकूल हो ऐसे समय यह संस्कार करना श्रेष्ठ है।

ॐ अद्येत्यादि० अमुकोहं ममास्य पुत्रस्य (कन्याया) अमुक कुमारस्य बैजिक गार्भिक दुरितप्रशमन पूर्वकाङ्ग पुष्कलता शिद्धये अन्नप्राशन्नमहं करिष्ये। पुनः जल लेकर- **मम अस्य कुमारस्य अन्नप्रासन्न संस्काराङ्ग निमित्तं पञ्चोपचारैः गणपत्यादि पञ्चांग देवता पूजनं तथा अन्नप्राशन होम कर्मणि कृताकृतावेक्षणरूप ब्रह्मकर्म कर्त्तुं अमुकगोत्र अमुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचन्दन ताम्बूल वासोभिर्ब्रह्मत्वेन त्वां वृणे।** ब्राह्मण वरण कर ब्राह्मण **'वृतोस्मिप्रतिवचनम्'** कहे। गणेशादि पञ्चांग देवताओं का पूजन कर अन्नप्राशन हेतु हवन वेदि का निर्माण[१] कर सीमन्तोनयन संस्कार से अग्नि स्थापन कर अन्नप्राशन्न में 'शुचि' नाम से अग्नि का पूजन कर पुनः अन्न प्राशन के निमित्त होम घी से निम्न मंत्रों द्वारा करें-

---

१. कृमी कीट पतंगाद्या विचरन्ति महीतले।
तेषां संरक्षणार्थाय स्थण्डिलं कारये द्बुधः॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विनियोग-देवीं वाचमिति भार्गव ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो देवी वाग्देवता आज्याहुति होमे विनियोगः॥ हवन के मंत्र- ॐ देवीं वाचमजयन्त देवास्तां विश्वरूपा पशवो वदन्ति सा नोमन्द्रेष मूर्ज्जंदुहाना धेनुर्वागस्मानुपैतु सुष्टुतैतु स्वाहा॥ इदं वाचे॥ इस मंत्र से दो आहुति दें। पुनः विनियोग वाजो न इति देवा ऋषय स्त्रिष्टुप्छन्दो वाग्देवता आज्य होमे विनियोगः ॐ वाजोनो अद्य प्रसुवातिदानं वाजो देवाँ ऋतुभिः कल्पयति। वाजोहिमा सर्ववीरं जनानं विश्वा आशा वाजपतिर्जयेय ँ स्वाहा॥ इदं वाचेवाजाय। **स्थालीपाक होम**-प्राणेनेति चतुर्णां मंत्राणां प्रजापतिर्ऋषिअनुष्टुप्छन्दो लिङ्गोक्ता देवताः स्थालीपाक होमे विनियोगः। ॐ प्राणेनान्नमशीय स्वाहा। इदं प्राणाय। ॐ अपानेन गन्धमशीय स्वाहा। इदमपानाय। ॐ चाक्षुषारूपाण्यशीय स्वाहा। इदं चक्षुषे। ॐ श्रोत्रेणयशोशीय स्वाहा। इदं श्रोत्राय॥ पुनः नव आहुति ब्रह्मा को अन्वारब्ध कर दें। ॐ भूः स्वाहा। इदमग्नये ॐ भुवः स्वाहा। इदं वायवे। ॐ स्वः स्वाहा। इदं सूर्याय। ॐ त्वन्नो अग्ने। इदं अग्नि वरुणाभ्याम्। ॐ सत्वंन्नोऽअग्ने०। इदं अग्नि वरुणाभ्याम्। ॐ अयाश्चग्नि०। इदमग्नये ॐ ये ते शतं०। इदं वरुणाय। ॐ उदुत्तमं० इदं वरुणायादितये। ॐ अग्नये प्रजापतये स्वाहा। इदमग्नये प्रजापतये॥ ततः संश्रवप्राशनम्॥ ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम्

संकल्प-ॐ अद्येत्यादि० अमुकोहं अमुकराशेः

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पुत्रस्यान्नप्राशनाङ्ग होम कर्मणः साद्गुण्यार्थं संपूर्णार्थं इदं पूर्णपात्रं सद्रव्यं ब्रह्मन् तुभ्यं सम्प्रददे।।

लग्न समय दान संकल्प-अद्येत्यादि० **अमुकोहं अमुकराशेः पुत्रस्यान्नप्राशनलग्नाद्यत्र आदित्यादि नवग्रहाणां दुष्टानां दुष्ट फलोपशान्त्यर्थं शुभानां शुभफलाधिक्या प्राप्तये इदं सुवर्णमिमा दक्षिणा ब्राह्मणेभ्यो विभज्य दास्ये।। ॐ तत्सत्।।** ब्राह्मण को दक्षिणा देकर एक कांस्य पात्र में पूर्णाहुति रख कर पूजन कर विनयोग करें-

ॐ मूर्धानमिति मंत्रस्य भरद्वाज ऋषि स्त्रिष्टुप्छन्द अग्नि देवता पूर्णाहुति होमे विनियोगः।। ॐ मूर्धानंदिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निं कवि ॐ सम्राज मतिथिं जनाना मासन्नापात्रं जनयन्त देवाः ॐ स्वाहा।। इति पूर्णाहुतिः।। जातक का पिता कांस्य पात्र में मीठा, नमकीन, अम्ल, कषाय, तिक्त, कडुवा, रस एवं अन्न को रखे। पिता जातक को माता की गोद में रखे, पिता या ब्राह्मण स्वर्ण शलाका से जातक को अन्न रस खिलायें-

ब्राह्मण 'हन्त' हन्तेति मंत्र से पांच बार अथवा अन्न के निम्न मंत्र से विनियोग पूर्वक अन्न दें-

अन्नपत इति नामानेदिष्टऋषिर्बृहतिछन्दोन्नं देवताऽन्नप्राशने विनियोग।। ॐ अन्नपतेनस्यनोदेह्य-नमीवस्य शुष्मिणः प्रप्रदातारंतारिष। ऊर्ज्जन्नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे।। अब बालक के मुख को तीन बार जल से धो लें तथा बालक के पास अन्न के ऊपर पुस्तक, अंगूठी,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लेखनी, शस्त्र आदि वस्तुयें रखें[१]। बालक को उनके पास छोड़ दें जिस वस्तु को बालक पहले उठाये, जीविका समझनी चाहिए। आचार्य यजमान को सपरिवार त्र्यायुष करण कर देवताओं का विसर्जन कर देवें।

।। इति अन्न प्राशन।।

।। जन्म दिन पूजन ।।

जिसका जन्म दिन हो प्रातः काल तिल, हरिद्रा मिश्रित जल से स्नान कर नये वस्त्र पहन पूजास्थल में गणपत्यादि देवताओं का पूजन कर संकल्प करें-

अद्येत्यादि० अमुकगोत्रोऽ अमुक राशिरमुकशर्माहं ममायुष्याभिवृद्धये वर्ष वृद्धिकर्म करिष्ये।

संकल्प कर एक चौकी के ऊपर श्वेतवस्त्र बिछाकर दही चावल के पुंज में देवताओं का आवाहन, पूजन करें-

ॐ गणपतये नमः आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।
ॐ दुर्गायै नमः दुर्गामावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।
ॐ कुलदेवतायै नमः कुलदेवतामावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।
ॐ प्रजापतये नमः प्रजापतिमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।
ॐ विष्णवे नमः विष्णुमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।
ॐ महेश्वराय नमः महेश्वरमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।
ॐ सूर्याय नमः सूर्यमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

---

१. तस्मिन् काले स्थापयेत् तत्पुरस्ताद्
वस्त्रं शस्त्रं पुस्तकं लेखनीं च।
स्वर्णं रौप्यं यच्च गृह्णाति बाल-
स्तैराजीवैस्तस्य वृत्तिः प्रदिष्टा।। (मुहूर्त चिन्तामणि)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ चन्द्राय नमः चन्द्रमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।
ॐ भौमाय नमः भौममावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।
ॐ बुधाय नमः बुधमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।
ॐ बृहस्पतये नमः बृहस्पतिमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।
ॐ शुक्राय नमः शुक्रमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ शनैश्चराय नमः शनैश्चरमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।
ॐ राहवे नमः राहुमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।
ॐ केतवे नमः केतुंमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।
ॐ कालाय नमः कालमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।
ॐ युगाय नमः युगमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।
ॐ संवत्सराय नमः संवत्सरमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।
ॐ अयनाय नमः अयनामावाहयामि, स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऋतवेनमः ऋतुमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।
ॐ मासाय नमः मासमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।
ॐ पक्षाय नमः पक्षमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।
ॐ जन्म तिथये नमः जन्मतिथिमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।
ॐ नक्षत्राय नमः जन्मनक्षत्रमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।
ॐ जन्म योगाय नमः जन्मयोगमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।
ॐ जन्म करणाय नमः जन्मकरणमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।
ॐ जन्म राशये नमः जन्मराशिमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।
ॐ जन्मलग्नाय नमः जन्मलग्नमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।
ॐ सम्भूत्यै नमः संभूतिमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।
ॐ प्रीत्यै नमः प्रीतिमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।
ॐ सन्तत्यै नमः सन्ततिमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ अनसूयायै नमः अनसूयामावाहयामि, स्थापयामि पूजयामि।
ॐ क्षमायै नमः क्षमामावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।
ॐ उपविष्टायै नमः उपविष्टामावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।
ॐ भद्रायै नमः भद्रामावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

उपरोक्त देवताओं का पूजन कर नौ अक्षत पुंज में निम्न मार्कण्डेय आदि का आवाहन करें-

ॐ षष्ठी देव्यै नमः षष्ठिदेविमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।
ॐ मार्कण्डेय नमः मार्कण्डमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।
ॐ जमदग्नये नमः जमदग्निमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।
ॐ अश्वस्थामाय नमः अश्वस्थामावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।
ॐ बलये नमः बलिमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।
ॐ व्यासाय नमः व्यासमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।
ॐ विभीषणाय नमः विभीषणमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।
ॐ कृपाचार्याय नमः कृपाचार्यमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।
ॐ परशु रामाय नमः परशु राम आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ कार्तिकेय नमः कार्तिकमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

इष्ट देवताओं का पूजन भी कर लें-

ॐ इष्ट देवतायै नमः इष्टदेवतामावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।
ॐ स्थान देवतायै नमः स्थानदेवतामावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।
ॐ वास्तुदेवतायै नमः वास्तुदेवतामावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।
ॐ क्षेत्रपालाय नमः क्षेत्रपालमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

पंचतत्व का पूजन

ॐ पृथिव्यै नमः पृथिवीमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।
ॐ आपाय नमः आपमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ अग्नये नमः अग्निमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।
ॐ वायवे नमः वायुमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।
ॐ आकाशाय नमः आकाशमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

इन्द्रादि दश दिक्पाल पूजन-

ॐ इन्द्राय नमः इन्द्रमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।
ॐ अग्नये नमः अग्निमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।
ॐ यमाय नमः यममावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।
ॐ निर्ऋतये नमः निर्ऋतिमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।
ॐ वरुणाय नमः वरुणमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।
ॐ वायवे नमः वायुमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।
ॐ कुबेराय नमः कुबेरमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।
ॐ ईश्वराय नमः ईश्वरमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।
ॐ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माआवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।
ॐ अनन्ताय नमः अनन्तंमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

उपरोक्त सब देवताओं का पूजन कर प्रार्थना करें-

प्रार्थना

जय देवि जगन्मातर्जगदानन्द कारिणि।
प्रसीद मम कल्याणि नमस्ते षष्ठि देवते॥१॥
आयुष्प्रद महाभाग सोमवंश समुद्भव।
महातपोनिधि श्रेष्ठ मार्कण्डेय नमोस्तुते॥२॥
चिरंजीवो यथा त्वं भो भविष्यामि तथा मुदे।
रूपवान् वित्तवानायु श्रियायुक्तं च मां कुरु॥३॥
मार्कण्डेय नमस्तेस्तु सप्तकल्पान्त जीवन।
आयुरारोग्य मे देहि प्रसीद भगवन्मुने॥४॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चिरंजीवो यथा त्वं भो मुनीनां प्रवरो द्विज।
कुरुष्व मुनिशार्दूल! तथा भो चिरंजीविनम्।।५।।
जमदग्ने महाभाग! महातेजोमयोज्वल।
आयुरारोग्यसिध्यर्थमस्माकं वरदो भव।।६।।
मंत्रहीनं क्रिया हीनं भक्तिहीन महामुने।
यत्पूजितं मयादेव परिपूर्णं तदस्तु मे।।७।।

पूजन कर दैवज्ञ से वर्ष पत्रिका पूजन ग्रह दानादि के बाद स्थण्डिल बनाकर पंच भू संस्कार पूर्वक अग्नि की स्थापना ब्रह्मा वरण आज्य होम कर उपरोक्त देवताओं को आहुति देकर भूः स्वाहा। नौ आहुति घी पश्चात् संस्रवप्राशन आदि कार्य कर तिल पात्र तथा घृत पात्र दान करें-

तिलपात्रदान-

तिलाकश्यपसम्भूतास्तिलाः पाप हरा स्मृताः।
तिल कांचन दानेन दीर्घायुष्वं ददातु मे।।

घृतपात्र दान-

आज्यं तैजसमुद्दिष्ट माज्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम्।
आज्यपात्र प्रदानेन दीर्घायुष्यं करोतु मे।।

सतिलदुग्ध पान-

सतिलं शर्करामिश्रमञ्जल्यर्धमितं पयः।
मार्कण्डेयाद्बलं लब्ध्वा पिबाम्यायुर्विवृद्धये।।

तिल शर्करायुक्त दुग्ध पीकर कर्मकर्त्ता देवताविसर्जन ब्राह्मण भोजन कराके सपरिवार भोजन कर ब्राह्मण को दक्षिणा से सन्तुष्ट कर आशीष ग्रहण करें।

।।इतिजन्मदिन पूजनम्।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

।।कर्णवेध।।

तीसरे, पांचवे वर्ष में शुभ नक्षत्र में कर्णवेध[१] करना शास्त्रोक्त कहा गया है। यजमान संकल्प करें-**ॐ अद्येत्यादि० अमुक शर्म्माहं ममास्य पुत्रस्य बीजगर्भ समुद्भवैनौनिबर्हणाय सुख सौभाग्य प्राप्तये कर्णवेध कर्म करिष्ये।।** गणेशादि पञ्चांग देवताओं का पूजन कर बालक के मुख में मीठा अन्न दें स्वर्णकार पहले दक्षिण कर्णवेध करे-**भद्रं कर्णेभिरिति मंत्रस्य गौतम ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो लिङ्गक्तो देवता दक्षिण कर्णाभिमंत्रणे विनियोग। ॐ भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरंङ्गैस्तुष्टुवा ꣳ सस्तनूर्भिर्व्यं सेमहिदेवहितं यदायुः।।** पुनः वाम कर्ण **वक्ष्यन्तीति मंत्रस्य पायुर्ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो लिङ्गोक्ता देवता वामकर्णाभि मंत्रणे विनयोगः।। ॐ वक्ष्यन्तीवेदागनिगन्तिकर्णे प्रिय ꣳ सखायं परिषस्वजानाः।। योषेवशिक्तेवितताधिधन्वन् ज्याइय ꣳ समने पारयन्ती।।** मंत्रों से कर्ण वेध[२] कर यजमान स्वर्णकार को प्रसन्न कर भूयसि दक्षिणा ब्राह्मणों को देकर देवता विसर्जन करे।

।।इतिकर्ण वेध संस्कार।।

---

१. शंखोपरि च कर्णान्ते त्यक्त्वा यत्नेनसेवनीम्।
व्यत्यास्याद् वा सिरां विद्येत् अन्त्रवृद्धिनिवृत्तये।।

(सुश्रत)

२. कुमार का पहले दाहिना, कुमारी का बायां कान विंधे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

।।अक्षर विद्यारंभ विधि।।

बालक के पांचवे वर्ष शुभ दिन में अक्षर तथा विद्यारंभ करवाना श्रेष्ठ है। पूर्व मुख बालक उत्तरमुख गुरु बैठे गणेशादि पंचांग पूजन के बाद संकल्प बालक का पिता करे-

संकल्प-

अद्येत्यादि० अमुकोहं मम पुत्रस्य सकल विद्या विशारदत्व सिद्धिद्वारा श्री सरस्वती प्रीत्यर्थं अक्षरारंभ विद्यारंभ च करिष्ये।

गणेश सरस्वती कुल देवता लक्ष्मीनारायण बृहस्पति वेदशाखा के सूत्रकार आदि के पूजन के लिए दही अक्षत् के पुंज[1] रखकर पूजन संकल्प-

ॐ अद्येत्यादि० अमुकोहं अमुकराशेः मम बालकस्य अक्षर स्वीकार विद्यारंभ कर्मणोः पूर्वांगत्वेन दध्यक्षतपुंजेषु गणेशादि देवानां वेदादि प्रवर्त्तकानां ब्रह्मादिनामाचार्याणां वेदादि विद्यानां च आवाहनं स्थापनं पूजनं करिष्ये।।

गणेश पूजन-

ॐ गणानान्त्वा गणपति ँ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ँ हवामहे निधीनांत्वा निधिपति ँ हवामहे वसोमम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्।। गणपतये नमः।।

सरस्वती पूजन-

ॐ पावकानः सरस्वती वाजेभिर्वा जिनीवती।
यज्ञं वष्टु धियावसु।। सरस्वत्यै नमः।

---

१. अभ्यङ्ग स्नानपूर्वन्तु गन्धाद्यैश्च विभूषितः।
शुक्ल वस्त्रं समास्तीर्य तण्डुलोपरि पूजयेत्।। (मार्कण्डेय)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विष्णु पूजन-

ॐ इदं विष्णुर्विच क्रमे त्रेधानिदधे पदम्।
समूढमस्य पा ᳪ सुरे स्वाहा।। विष्णवे नमः।।

लक्ष्मी पूजन-

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहो- रात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषा- णामुं म ऽ इषाण सर्वलोकं मऽइषाण।। लक्ष्म्यै नमः।।

बृहस्पति पूजन-

ॐ बृहस्पतेऽअति यदर्योऽअर्हाद द्युमद्विभाति क्रतु मज्जनेषु। यद्‌दीदयच्छवसऽऋत प्रजात् तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।। बृहस्पतये नमः।।

उपरोक्त देवताओं का पूजन, गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीपक, नैवेद्य दक्षिणा से कर नारद, पाणिनि, पतञ्जलि, कात्यायन पिंगल, कपिंजल, गौतम, गोभिल यास्क जैमिनि, मनु विश्वकर्मा, गर्ग, व्यास आदि सूत्रकार भाष्यकार तथा वेद, पुराण, न्याय, मिमांसा, धर्मशास्त्र व्याकरण आदि का पूजन कर भूमि का लेपन कर सरस्वति यंत्र लिखकर यंत्र में सरस्वति का पूजन करें-

ध्यान-

याकुन्देन्दुतुषारहार धवला या शुभ्रवस्त्रावृता।
या वीणावरदण्डमण्डित करा या श्वेतपद्मासना।।
या ब्रह्माच्युत शंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता।
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सरस्वती का पूजन श्री सूक्त से करके पुनः प्रार्थना-

शुक्लां ब्रह्म विचार सारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनी।
वीणापुस्तक धारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम्।।
हस्ते स्फाटिकमालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थिताम्।
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम्।।

गुरु[1] पूजन-

अखण्डं मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः।।
अज्ञानतिमिरान्धश्च ज्ञानाञ्जनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः।।

गुरु पूजनोपरान्त काष्ट की पाटिका में कुंमकुम आदि का लेपन कर उसके ऊपर सुवर्ण शलाका से गुरु[2] (अध्यापक) बालक के हाथ से श्री गणेशाय नमः। श्री सरस्वत्यै नमः आदि लिखाकर ॐ नमः सिद्धम् अ आ से स ह आदि लिखे। अक्षरारम्भ विद्यारंभ में विधान अनुसार गणेशादि देवताओं के निमित्त होम करना भी श्रेष्ठ है। होम उपरान्त ब्राह्मण भोजन दक्षिणा दान कर पिता सपरिवार आशीर्वाद ग्रहण करे।

।।इति अक्षर विद्यारंभ विधि।।

---

१. एकाक्षर प्रदातारं यो गुरुनाभिमन्यते।
षष्ठिवर्ष सहस्त्राणां विष्ठायां जायते कृमिः।।

२. उदासीनो ह्युदासीनां वनस्थो वनवासिनाम्।
यतीनां च यति प्रोक्तो गृहस्थानां गुरुर्गृही।। (कुल चूड़ामणि)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

॥केशाधिवास॥

चूड़ा कर्म[१] दिन से पूर्व रात्रि को मण्डप में कांस्य पात्र में रक्त बैल का गोबर रखकर उसमें दूध अथवा दधि डाल दें तथा उसको स्वच्छ वस्त्र से ढका देवें। वहां ही क्षुर २७ कुशा, तीन शल्लकी कंट रख कर पीले वस्त्र से बालक के शिर में बांधने के लिए दूर्वा सरसों, अक्षत युक्त पांच पोटलिकायें लाल मौली से बांधकर रख दें। बालक, माता, पिता स्नान कर माता बालक को गोद में रखें पिता आचार्य के साथ पूजन प्रारंभ करे।

संकल्प-

अद्येत्यादि० देशकालौ संकीर्त्य अमुकशर्माहं अस्या सन्ध्यायांमेतस्य अमुक शर्मणः कुमारस्य बीजगर्भसमुद्भवै-नोनिवर्हणवलायुर्वयो मेधाभिबृद्धिद्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थे श्वः करिष्यमाण चूड़ाकर्म संस्कार कर्मणः पूर्वाङ्गत्वसिद्धये चाद्यरात्रौ केशाधिवासनं करिष्ये॥

गणेशादि देवताओं का पूजन कर पहले बालक के दक्षिण दिशा के बालों को शल्लकी कंट से तीन भाग कर पुनः एक बनाकर विनियोग करे-

प्रजापतेरिति मंत्रस्य नारायण ऋषिर्गायत्रीछन्दः प्रजापतिर्देवता दक्षिणस्थकेशाभिमंत्रणे विनियोगः। ॐ प्रजापते स्त्वा हिकारेणावजिघ्रामि गवां हिकारेणावत्रजिघ्रामि

---

१. सूनोमातरि गर्भिण्या चूडाकर्म न कारयेत्।
पंचमाब्दा त्प्रागूध्वन्तु गर्भिण्यामपि कारयेत्॥१॥
चिवाह व्रत चूडासु माता यदि रजस्वला।
तस्याः शुद्धे परं कार्यं मंगलं मनुरब्रवीत्॥२॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सहस्त्रायुषासौ जीव शारदा शतम्।।

दूसरा विनियोग-

अस्मैइति प्रजापति ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः इन्द्रो
देवता पश्चिमस्थ केशाभिमंत्रणे विनियोगः।

ॐ अस्मैप्रयन्धि मघवन्नृजीषन्निन्द्र रायो विश्विवारस्य भूरेः।
अस्मै शतं शरदोजीव सेधा अस्मै वीराँञ्छाश्वत इन्द्रशिप्रन्।।

तीसरा विनियोग-

क्षेमायेति मंत्रस्य अङ्गिराऋषिः प्रतिष्ठाछन्दो
ब्रह्मा देवता उत्तरस्य केशाभि मंत्रणे विनियोगः।।

क्षेमाय वः शान्त्यै प्रपद्ये शिवꣳ-
शग्मꣳशंय्यो बलाम वर्चसे शँय्यो।।

चौथा विनियोग-

इन्द्रः श्रेष्ठानिति मंत्रस्य ब्रह्माऋषि उष्णिक्छन्दः
इन्द्रो देवता पूर्वस्थ केशाभि मंत्रणे विनियोगः।।

ॐ इन्द्रः श्रेष्ठानि द्रविणानिधेहि चित्तं दक्षस्य सुभगत्व-
मस्मै प्रोषं रयीणामरिष्टं तनूनां स्वात्मानं वाचः सुदिनत्वमह्नाम्।

पांचवा विनियोग-

यदिति मंत्रस्य दीर्घतमा ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः
इन्द्रो देवता शिखाभिमंत्रणे विनियोग।।

ॐ यदश्वायवासउपस्तृणंत्यधिवासं या हिरण्यान्यस्मै
सन्दान मर्वन्तं पंवीशं प्रियादेवेष्वायामयन्ति।।

इस प्रकार प्रतिष्ठा कर दक्षिण के क्रम से शिर में पोटलिका को आचार्य बांध देवे। शल्लकी कंट तथा क्षुर को भी मौली बांध देवें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

।।चूड़ाकर्म।।

इस संस्कार में शिखा रखने का विधान है तथा अन्य सारे बालों को काट दिया जाता है। इस समय बालों को घी मिश्रित जल तथा दूध, दही से धोना, सारे बालों को सावधानी पूर्वक काटना तथा काटकर गोबर पर रखना तथा बाद में गोबर सहित बालों को भूमि आदि में रखना इस संस्कार के मुख्य कर्म हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

॥चूड़ाकर्म संस्कार॥

चूड़ाकर्म संस्कार बल तेज आयु के लिए तथा पराक्रम प्राप्ति के लिए किया जाता है। चूड़ाकर्म में बालक के कुलधर्मानुसार शिखा रखने का विधान है। चूड़ाकर्म संस्कार बालक के तीसरे, पांचवे विषम वर्ष में शुभ दिन में चन्द्रतारा अनुकूल हो यजमान आचार्य के द्वारा करावे।

संकल्प-

अद्येत्यादि० ममास्य पुत्रस्य बीजगर्भसमुद्भवैनो निवर्हण पूर्वकआयुर्बलाभिवृद्धये चूड़ाकर्माहं करिष्ये।

गणेशादि पंचाग देवताओं का पूजन कर होम संकल्प-

अद्यैत्यादि० ममास्य पुत्रस्य चूड़ाकर्म्माङ्गीभूत होमकर्माणि कृताकृतावेक्षणरूप ब्रह्मकर्मकर्त्तुमनेन वरणद्रव्येणा-मुकगोत्राममुक् शर्माणं ब्राह्मणं ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे॥

ब्राह्मण को वरण कर ब्राह्मण **'वृतोऽस्मि'** कहे॥ चूड़ाकर्म संस्कार में कुशकण्डिका होम पूर्ववत् कर सभ्यनाम से अग्नि का पूजन करें। आज्याहुति, व्याहृतिहोम प्रायश्चित होम पूर्ववत् करें। होम पश्चात् पूर्ण पात्र संकल्प-

अद्येत्यादि० ममास्य पुत्रस्य चूड़कर्माङ्ग होम कर्मणः साङ्गफलप्राप्तये साद्‌गुण्यार्थं च इदं पूर्णपात्रं ससुवर्णं ब्रह्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे॥

लग्न समय ग्रहदानआदि करने का संकल्प-

चूडाकर्म द्विजातीनां सर्वेषामेव धर्मतः।
प्रथमेऽब्दे तृतीये वा, कर्तव्यं श्रुतिचोदनात्॥ (मनु० २/३५)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अद्येहामुकराशे अस्य कुमारस्य चूड़ाकर्म लग्नाद्यत्र आदित्यादि नवग्रहाणं दुष्टानां दुष्टफलोपशान्त्यर्थे इदं सुवर्णनिष्क्रयीभूतं द्रव्यंवा ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे॥

ब्राह्मण को ग्रह सामग्री दान देकर पिता गरम जल से शिशु के बाल सेक (धो) देवे-

उष्णेनवेति परमेष्ठि ऋषिः प्रतिष्ठा छन्दो लिङ्गोक्ता देवताः उष्णोदकसेके विनियोगः।

ॐ उष्णेन वा य उदकेन ह्यदिते केशान वप॥

पुनः दही माखन से बाल धोकर दक्षिण क्रम से ठंडे गरम जल से पुनः सेक दें।

सवित्रेति प्रजापतिर्ऋषि गायत्रीछन्दः आपो देवता मिश्रितोदकसेके विनियोगः॥ ॐ सवित्रा प्रसूता दैव्या आपऽउन्दन्तु ते तनूं दीर्घायुत्वाय बलाय वर्च से॥

इस प्रकार मिश्रोदक से धोकर दक्षिण भाग की जूटिका के शल्लकी कंट से तीन भाग कर प्रत्येक में एक-एक कुश लगा देवे॥

ओषध इति प्रजापतिर्ऋषिर्यजुश्छन्द ओषधिर्देवतान्तर्धाने विनियोगः॥ ॐ ओषधे त्रायस्व स्वधिते मैन ँ हि ँ सीः॥

कुशयुक्त बालों को बांये हाथ में रखकर दाहिने हाथ में क्षुर ग्रहण करने का विनियोग-

शिवोनामासीति नारायण ऋषिर्जगतीछन्दः क्षुरो देवता क्षुर ग्रहणे विनियोगः॥ ॐ शिवोनामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मामाहि ँ सीः॥ ततः स कुश

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तरुणकेशेषु क्षुरं प्रवपति निदधाति संलग्नी करोत्यर्थः।।
क्षुर को ग्रहण कर लें।।

निवर्तयामीति प्रजापतिर्ऋषिर्यजुश्छन्दः शिवो देवता जूटिकासंलग्ने विनियोगः।। ॐ निवर्त्तयाम्यायुषेन्नाद्याय प्रजननायरायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्य्याय।।

जूटिका को इकट्ठा कर दक्षिण में केश छेदन के लिए विनियोग छोड़े।

एनेति मंत्रस्य प्रजापतिर्ऋषिर्यजुश्छन्दः क्षुरोदेवता-केशच्छेदने विनियोगः ॐ एना वपत्सविता क्षुरेण सोमस्य राज्ञो वरुणस्य विद्वान्।

तेन ब्रह्माणो वपतेदमस्यायुष्वं जरदष्टिर्यथासत्।। तीन कुशा सहित बाल काटकर कांसे की थाली में रक्त वृषभ के गोबर के ऊपर रख देवें पुनः पश्चिमादि जूटिकाओं को भी पूर्वोक्त मंत्रों के द्वारा धोकर इकट्ठा कर दें। पश्चिम के बाल काटने का विनियोग-

त्र्यायुषमिति नारायणऋषि उष्णिक छन्दः शिवोदेवता केशच्छेदने विनियोगः। बाल काटने का मंत्र-ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपश्य त्र्यायुषं यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्।।

पश्चिम के बाल काटकर गोबर के ऊपर रख दें पुनः पूर्व के बालों का सेंचन कर इकट्ठा कर दें। पूर्व के बाल काटने का विनियोग-

ॐ एनेति मंत्रस्य प्रजापतिर्ऋषि यजुश्च्छन्द क्षुरो देवता केशच्छेदने विनियोगः।। ॐ एनभूरिश्चरादिवं ज्योक् च पश्चाद्धि सूर्यम्।। तेन ते वपामि ब्रह्मणा जीवातये जीवनाय सुश्लोक्याय स्वस्तये।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पूर्व के बाल काटकर उत्तर के बाल काटने के लिए विनियोग-

यदिति मंत्रस्य वामदेव ऋषिर्यजुश्छन्दः क्षुरो देवता केशच्छेदने विनियोगः॥ ॐ यत्क्षुरेण मज्जयता सुपेशसावप्त्वा वा वपति केशाञ्छिन्दि शिरो मा स्यायुः प्रमोषीः॥

मध्य में गोपद तुल्य गोलाकार बाल शिखा के लिए छोड़कर अन्य बालों को काटकर सब बालों को गोबर में रखकर जल स्थान, गौशाला, या तालाब में रख दें। पुनः स्नान कर पूर्णाहुति करें-

ॐ मूर्द्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानर मृत। आजातमग्निं कवि ॆ संम्राज मतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः स्वाहा॥

श्रुव से त्र्यायुष निकाल लें। धारण हेतु विनियोग-

त्र्यायुषमिति मंत्रस्य नारायण ऋषि उष्णिक्
छन्दः शिवोदेवता त्र्यायुषकरणे विनियोगः॥

दाहिने हाथ की अनामिका अंगुष्ठ से आचार्य यजमान को सपरिवार त्र्यायुष लगाये-

ॐ त्र्यायुषं जगदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषं
यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्॥

दक्षिणा संकल्प-

ॐ अद्येत्यादि अमुकराशे अमुकनाम्नः पुत्रस्य चूड़ाकर्माङ्गहोम कर्मणः चूड़ाकर्मणश्च साङ्गफल प्राप्तये साद्गुण्यार्थं च इदं सुवर्ण अग्निदैवतम् आचार्याय तुभ्यमहं संप्रददे॥

ब्राह्मण भोजनोपरांत यजमान आशीर्वाद ग्रहण करे।

॥इति चूड़ाकर्म संस्कार॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

।।यज्ञोपवीत विधि।।

ज्योतिष शास्त्रोक्त समय में आठवें से सोलह वर्ष के भीतर यह संस्कार किया जाता है। बालक की आयु वृद्धि हेतु गायत्री तथा वेदपाठ का अधिकारी बनने के लिए इस संस्कार की अत्यन्त आवश्यकता होती है। संस्कार करने से पूर्व पिता कुमार, पत्नी सहित संकल्प करे-

अद्येत्यादि० मम कुमारस्य बीजगर्भसमुद्भवैनौनि-वर्हणपूर्वक श्रौत स्मार्त कर्मानुष्ठान सिद्धि द्वारा ब्रह्मवर्चोभिवृद्धयेइज्याध्ययनदानादि षट्कर्मणां पाठहोमादि पञ्च नित्यानुष्ठानार्हयज्ञादीनां चातुवर्णेषु स्वस्व वेदशाखासूत्र प्रवर गोत्र मुनिवर्णित वहिताविहित धर्मकरणानुकूल ब्रह्मचर्यगृहस्थाश्रमादिषु यथामतितत्फलानुसन्धानकृत-तदुपयोगि कर्मणां पंचमहा पातकोति पापानां ज्ञाताऽज्ञात प्रायश्चिताय उपनयन संस्कार करिष्ये।

पुनः संकल्प पिता करे-

देशकालौ संकीर्त्य अद्येत्यादि० मम बालकस्य उपनयनं कर्तु तत्प्राच्याङ्गभूतं वपनं च कारयिष्ये।।

बालक का मुण्डन शिखा छोडकर करवाकर पुनः बालक का स्नान कर गणेशादि देवताओं का पूजन संकल्प करे-

अद्येत्यादि करिष्यमाणोपनयन कर्माङ्गभूतं निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं षोडशोपचारैः वा पंचोपचारैः गणपत्यादिदेवता पूजनं महं करिष्ये।।

गर्भाष्टमेऽब्दे कुर्वीत ब्राह्मणस्योपायनम्।
गर्भादेकादशो राज्ञो गर्भान्तु द्वादशे विशः।।१।।
अषोडाशाद्र ब्राह्मणस्य सावित्री नाति वर्तते।
आब्दाविंशाद् क्षत्र बन्धोराचतुविंशति विंशः।।२।।
अतः ऊर्ध्वं त्रयो प्येते यथाकालं संस्कृताः।
सावित्री पतिता व्रात्या भवन्त्यपि विगर्हिता।।३।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गणेशादि देवताओं का पूजन कर यज्ञ वेदि में पूर्ववत् कुशकण्डिका कार्य कर देवे।

पुष्पमाला आदि से कुमार को अलंकृत कर यज्ञ वेदी के पीछे आचार्य के दक्षिण में बैठा दें। आचार्य विनियोग कर कुमार को अधो वस्त्र पहना दे-

येनेति मंत्रस्य अंगिराऋषिर्बृहती छन्दो बृहस्पतिर्देवता वासः परिधाने विनियोगः॥ ॐ येनेन्द्राय बृहस्पतिर्वासः पर्यदधादमृतम्॥ तेन त्वा परिदधाम्यायुषे दीर्घायुत्त्वाय बलाय वर्चसे॥

फिर कुमार से आचार्य कहे-**ब्रह्मचर्यमागामिति॥** अर्थात ब्रह्मचर्य धारण करो तब कुमार कहे-**ब्रह्मचर्यमागाम्॥** मैं ब्रह्मचर्य धारण करता हूँ। आचार्य कुमार के कमर में मेखला तीन फेरे डाल दे।

इयं दुरुक्तमिति मंत्रस्य वामदेव ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः मेखला देवता मेखला बंधने विनियोगः॥ ॐ इयंदुरुक्तंपरिबाध मानावर्णं पवित्रं पुनतीम्ऽआगात्॥ प्राणापानाभ्यांबलमादध ाना स्वसादेवी सुभगामेखलेयम्॥

मेखला बांधकर अब आचार्य कुमार का यज्ञोपवीत संस्कार करे। आचार्य यज्ञोपवीत को शुद्ध जल से धोवे-

ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवस्ता नऽऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे। यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेहनः। उशतीरिव मातरः। तस्माऽअरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ आपोजन यथा च नः॥

यज्ञोपवीत को आचार्य हाथ में सम्पुट कर दश बार गायत्री मंत्र से यज्ञोपवीत अभिमंत्रित करे। पुनः-

---

१. यज्ञोपवीत काल-
ब्रह्मवर्च सकामस्य कार्यं विप्रस्य पंचमे।
राज्ञो बलार्थिनः षष्ठे वैश्यस्ये हार्थिनोऽष्टमें॥ (मनु० २/३७)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचोवेन आवः॥ सबुध्न्या- ऽउपमाऽअस्यविष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः॥ ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा॥ ॐ नमः शम्भवाय च मयो भवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

प्रतिष्ठापन कर आचार्य नव तन्तुओं का पूजन करे-प्रथम तन्तो-**ॐ काराय नमः ॐ कारम् आवाहयामि स्थापयामि॥** द्वितीय तंतो-**ॐ अग्नये नमः ॐ अग्निम् आवाहयामि स्थापयामि॥** तृतीय तंतो-**ॐ नागेभ्यो नमः नागान् आवाहयामि स्थापयामि॥** चतुर्थ तंतो-**ॐ सोमाय नमः सोमं आवाहयामि स्थापयामि॥** पंचम तंतो-**ॐ पितृभ्योनमः पितृन् आवाहयामि स्थापयामि॥** षष्ठ तंतो-**ॐ प्रजापतये नमः प्रजापतिं आवाहयामि स्थापयामि॥** सप्तम् तंतो-**ॐ अनिलाय नमः अनिलं आवाहयामि स्थापयामि॥** अष्टम् तंतो-**ॐ यमाय नमः यमं आवाहयामि स्थापयामि॥** नवम् तंतो-**ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः विश्वान् देवान् आवाहयामि स्थापयामि॥**

यज्ञोपवीत में ग्रन्थि देवताओं का भी आवाहन आचार्य करवाये-

ॐ ब्रह्मणे नमः आवाहयामि स्थापयामि॥ ॐ विष्णवे नमः अवाहयामि स्थापयामि॥ ॐ रुद्राय नमः आवाहयामि स्थापयामि॥

यज्ञोपवीत का गन्धाक्षत पुष्प धूप दीप नैवेध से पूजन

यज्ञोपवीत धारण फल-

सदोपवीतिनां भाव्यं सदाबद्ध शिखेन च।

विशिखो व्युपवीतिश्च यत्करोति न तत्कृतम्॥ (कात्यायन)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कर सूर्य को दिखायें।

उदुत्यमिति मंत्रस्य प्रस्कण्व ऋषिः गायत्री छंदः सूर्योदेवता सूर्यावलोकने विनियोगः। सूर्यावलोकन मंत्र- **ॐ उदुत्यं जातवेद सं देवं व हन्ति केतवः दृशेविश्वाय सूर्यम्।**

सूर्य को दिखाकर यज्ञोपवीत धारण करने का विनियोग तथा मंत्र-

यज्ञोपवीतमिति मंत्रस्य परमेष्ठी ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः लिंगोक्तो देवता श्रौतस्र्मात कर्मानुष्ठानसिद्धर्थे यज्ञोपवीत धारणे विनियोगः।। ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्य्रंप्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।। ॐ यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि।।

इस मंत्र से कुमार दक्षिण बाहु उठाये आचार्य दक्षिण हाथ से यज्ञोपवीत डाल कर बायें कंधे पर रख दे। कुमार आचमन कर दे, आचार्य विनियोग कर निम्न मंत्र से कुमार को उपरीवस्त्र देवे-

मित्रस्य चक्षुरिति मंत्रस्य परमेष्ठी ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः लिंगोक्तो देवता अजिन धारणे विनियोगः।। ॐ मित्रस्यचक्षुर्द्धरणं बलीयस्तेजोयशस्विस्थविर ँ समृद्धं। अनाहनस्यं वसन ञ्जरिष्णुः परीदम्बाज्यजिनन्दधेहम्।।

आचार्य कुमार को दण्ड देवे-विनियोग तथा मंत्र-

यो मे दण्ड इतिप्रजापतिर्ऋषिः यजुश्च्छदः दंडो देवता दंडग्रहणे[१] विनियोगः।। ॐ यो मे दंडः परापतद्वैहायसोधिभूम्यां। तमहं पुनरादद आयुषे ब्रह्मणे ब्रह्मवर्चसाय।।

---

१. दण्ड प्रमाण-
केशान्तिको ब्राह्मणस्य दण्डकार्य प्रमाणतः।
ललाट सम्मितो राज्ञः स्यातु नासान्तिको विशः।। (मनु० २/४६)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अब आचार्य हाथ में जल लेकर कुमार की अंजलि में भरे विनियोग व मंत्र-

ॐ आपोहिष्ठेति मंत्रस्य सिन्धुद्वीपऋषि गायत्री छंदः आपोदेवता माणवकांजलि पूरणे विनियोगः॥ ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जेदधातन। महेरणाय चक्षसे यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः उशतीरिव मातरः तस्माऽअरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ आपो जनयथा च नः॥

कुमार सूर्य को देखकर जल समर्पण कर दे, विनियोग व मंत्र-

तच्चक्षुरिति मंत्रस्य दध्यङ् अथर्वण ऋषि उष्णिक् छन्दः सूर्यो देवता सूर्यमुदीक्षणे विनियोगः॥ ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतꣳश्रृणुयाम शरदः शतं प्र ब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्॥

आचार्य कुमार का हृदयालंभन दक्षिण कंधे पर दायां हाथ रख कर करे, विनियोग व मंत्र-

मम व्रते इति मंत्रस्य प्रजापतिर्ऋषि त्रिष्टुप् छन्दः बृहस्पतिर्देवता हृदयालंभने विनियोगः॥ ॐ मम ब्रते ते हृदयं दधामि। ममचित्त मनुचित्तं तेऽस्तु। मम वाच मेकमना जुषस्व। बृहस्पतिष्ट्वा नियुनक्तु मह्यम्॥

पुनः आचार्य कुमार के दक्षिण हाथ को पकड़कर पूछे-

माणवक्कं को नामासि। कुमार अपना नाम कहे-**अमुक शर्म्माहं।** पुनः आचार्य पूछे-**कस्य ब्रह्मचार्यसि।** कुमार कहे। **भवत इति।।** पुनः आचार्य कहे-**ॐ इन्द्रस्य ब्रह्मचार्यस्यग्निराचार्यस्तवाहमाचार्यः श्रीमद्मुकशर्मन्॥** कुमार

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पूर्व से प्रदक्षिणा कर लेवे आचार्य कहे-**भूतेभ्यः परिददामि प्रजापतये त्वा परिददामिति प्राच्याम्। देवाय त्वा सवित्रे परिददामीति दक्षिणस्याम्॥ अद्भ्यस्त्वोषधीभ्यः परिददामीति उदीच्याम्। विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः परिददा- मित्यधः सर्वेभ्यस्त्वा भूतेभ्यः परिददाम्यरिष्ट्यै इत्यूर्ध्वम्॥**

प्रदक्षिणा कर कुमार आचार्य के उत्तर में बैठ जाये॥

ततो ब्रह्मवरणम्॥ आचमन आदि से ब्राह्मण का पूजन कर ब्रह्मा का वरण हेतु संकल्प-

अद्येत्यादि० कर्त्तव्यो उपनयनांगीभूत हवन कर्मणि कृताऽकृता वेक्षणरूप ब्रह्मकर्म कर्त्तुमनेन वरणद्रव्येणा अमुकगोत्र अमुक शर्माणं ब्राह्मणं ब्रह्मत्वैन त्वामहं वृणे॥ वृतोस्मि॥

मेरा वरण हो चुका ऐसा ब्राह्मण कहे आचार्य पूर्ववत् ब्रह्मास्थापन मेखला कंठ अग्निस्थापन करे मेखला कंठ अग्निस्थापन प्रोक्षणी पात्र घृत आहुति 'समुद्भवनाम' अग्निपूजन पंचवारुणिहोम कर लेवे तथा हवन के बाद पूर्णपात्रदान प्रणीता पात्र व्युब्जीकरण बर्हिहोम आदि कर आचार्य कुमार को शिक्षा, अनुशासन के वाक्य कहे-

आचार्य-ब्रह्मचार्यसि। कुमार-भवामिति ब्रह्मचारी॥
आचार्य-आपोशानेत्याचार्य आह। आश्नानीति ब्रह्मचारी॥
कर्मकुरु इत्याचार्यः। कर्वाणीति ब्रह्मचारी॥
मा दिवा सुषुप्थाः इत्याचार्यः। न स्वपामीति ब्रह्मचारी॥
वाचं यच्छेत्याचार्यः। यच्छमीति ब्रह्मचारी॥

अब आचार्य ब्रह्मचारी को गायत्री मंत्र प्रदान करे, विनियोग व मंत्र-

तत्सवितुरिति मंत्रस्य विश्वामित्र ऋषि गायत्री छन्दः

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सविता देवता सावित्री दाने विनियोगः॥

आचार्य पाद पूर्वक गायत्री मंत्र कुमार से कहे

ॐ भुर्भूवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं

(पहले)

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि

(दूसरी बार)

ॐ भूर्भुवः स्वः
तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य
धीमहि धियो योनः प्रचोदयात्॥

इस प्रकार आचार्य ब्रह्मचारी को गायत्री मंत्र की दीक्षा देकर देशाचार आदि कार्य पूर्ण कर लेवे आचार्य ब्रह्मचारी को त्र्यायुष देकर आशीर्वाद देवे देशाचार द्वारा ब्रह्मचारी भिक्षा पात्र लेकर माता से भिक्षा लेवे। भिक्षा छः, बार, अथवा अधिक जगह ग्रहण करे। ग्रहण की हुई भिक्षा ब्रह्मचारी गुरु[१] को देवे। जानकार गुरु ब्रह्मचारी को अनेक प्रकार की शिक्षा नियम आदर्श के वाक्य कहे। पिता यज्ञोपवीत कर्म के बाद ब्राह्मण भोज दक्षिणा दान कर आशीष ग्रहण करे।

---

१. समाहृत्य तु तद्भैक्षं यावदन्नममायया।
निवेद्य गुरुवेऽश्नीयादाचम्य प्राङ्मुख शुचि॥ (मनु० २/५१)

आचार्य- उपनीय तु य शिष्यं वेदमध्यापये द्विजः।
संकल्पं सरहस्यं च तमाचार्यं प्रचक्षते॥

उपाध्याय-एकदेशं तु वेदस्य वेदाङ्गान्यपि वा पुनः।
योऽध्यापयति वृत्त्यर्थमुपाध्यायः स उच्यते॥

गुरु- निषेकादीनि कर्माणि यः करोति यथाविधि।
संभावयति चान्नेन स विप्रो गुरुरुच्यते॥ (मनु०)

गायत्री जप- यज्ञोपवीत संस्कार के समय कर्मकर्त्ता ब्राह्मणों से गायत्री मंत्र का जप करवायें॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

।।चारों वेदों का अध्ययन।।

शुभ दिन में शाखा के अध्ययन के साथ वेदाध्ययन[1] प्रारंभ किया जाता है जिस वेदशाखा के मंत्रों से यज्ञोपवीत होते हैं उस कुल में उस वेद का अध्ययन प्रारम्भ करना चाहिए एक वेद के अध्ययन की समाप्ति के बाद दूसरे वेद का अध्ययन प्रारंभ करना चाहिए।

---

१. वेदारंभ-
पारम्पर्यागतो येषां वेदः सपरिवृहणः।
यच्छाकाकर्म कुर्वीत तच्छाखाध्ययनं तथा।।

नोटः चारों वेद संस्कृत मूल
ऋग्वेद संहिता, अथर्ववेद संहिता, यजुर्वेद संहिता, सामवेद संहिता
मूल्य ७००/-
चारों वेद मोटा टाइप अर्थ सहित आठ खण्डों में १०००/-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

।।वेदारम्भ विधि।।

शुभ दिन शुभ वार शुभ लग्न में आचार्य संकल्प करावे- **अद्येत्यादि० ममास्य पुत्रस्य श्रौतस्मार्त्तकर्ताधिकार सम्पादक ब्रह्मगायत्री मंत्र दृढ़िकरणार्थं यजुर्वेदादिक्रमेण वेदारंभ करिष्ये।।**

यजमान ब्राह्मण का पूजन कर वरण कर दे-**ॐ अद्येत्यादि कर्त्तव्यवेदारंभाङ्गिभूतहवनकर्मणि कृताऽकृतावेक्षणरूप ब्रह्मकर्म कर्तु अनेन वरण द्रव्येणाममुक देवतानां अमुक शर्माणं ब्राह्मणं ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे।।** गणपति आदि देवताओं का पूजन कर पंचभू संस्कार पूर्वक अग्नि का स्थापन कर दक्षिण में ब्रह्मा स्थापित कर ब्रह्मा से अन्वारब्ध हो श्रुव से घी की आहुति दें-

ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम।।

ॐ इन्द्राय स्वाहा। इदं इन्द्राय न मम।।

ॐ अग्नये स्वाहा। इदं अग्नये न मम।।

ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय न मम।।

ॐ भूः स्वाहा। इदं अग्नये न मम।

ॐ भुवः स्वाहा। इदं वायवे न मम।।

ॐ स्वः स्वाहा। इदं सूर्याय न मम।

'हरिनाम' अग्नि का पूजन गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीपक नैवेद्य से कर लेंवे। प्रायश्चित होम-

ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अवयासिसीष्ठाः

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यजिष्ठो वह्नितमः। शोशुचानो विश्वा द्वेषा ँ सिप्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा।१॥ इदं अग्नी वरुणाभ्याम्॥ ॐ सत्वन्नो अग्ने वमोभवोतीनेदिष्ठो अस्या उषसोव्युष्टौ। अवयक्ष्व नो वरुण ँ रराणो व्वीहि मृडीक ँ सुहवो न एधि स्वाहा॥२॥ इदमग्नीवरुणाभ्याम्॥ ॐ अयाश्चाग्ने स्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्व मया असि। अयानो यज्ञं वहास्य यानो धेहि भेषज ँ स्वाहा॥३॥ इदंमग्नये॥ ॐ ये ते शतं वरुणं ये सहस्त्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तस्तेभिर्नो अद्यसवितोत विष्णुर्विश्वे मुंचन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा॥४॥ इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यः॥ उदुत्तमं वरुणपाशमस्मद-वाधमं विमध्यम ँ श्रथाय। अथावयमादित्य व्रते तवाना-गंसो अदितये स्याम स्वाहा॥५॥ इदं वरुणायां दितये॥

यजुर्वेद हवन-

ॐ अन्तरिक्षाय स्वाहा। इदं अन्तरिक्षाय न मम॥

ॐ वायवे स्वाहा। इदं वायवे न मम॥

ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। इदं ब्रह्मणे न मम॥

ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा। इदं छन्दोभ्यो न मम॥

ऋग्वेद हवन-

ॐ पृथिव्यै स्वाहा। इदं पृथिव्यै न मम॥

ॐ अग्नये स्वाहा। इदं अग्नये न मम॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। इदं ब्रह्मणे न मम।।

ॐ छन्दोभ्यो स्वाहा। इदं छन्दोभ्यो न मम।।

सामवेद हवन-

ॐ दिवे स्वाहा। इदं दिवे न मम।।

ॐ सूर्याय स्वाहा। इदं सूर्याय न मम।।

ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। इदं ब्रह्मणे न मम।।

ॐ छन्दोभ्यो स्वाहा। इदं छन्दोभ्यो न मम।।

अथर्ववेद हवन-

ॐ दिग्भ्यः स्वाहा। इदं दिग्भ्यः न मम।।

ॐ चन्द्र मसे स्वाहा। इदं चन्द्रमसे न मम।।

ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। इदं ब्रह्मणे न मम।।

ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा। इदं छन्दोभ्य न मम।।

ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम।।

ॐ देवेभ्यः स्वाहा। इदं देवेभ्यो न मम।।

ॐ ऋषिभ्यः स्वाहा। इदं ऋषिभ्यो न मम।।

ॐ श्रद्धायै स्वाहा। इदं श्रद्धायै न मम।।

ॐ मेधायै स्वाहा। इदं मेधायै न मम।।

ॐ सदस्पतये स्वाहा। इदं सदस्पतये न मम।।

ॐ अनुमतये स्वाहा। इदं अनुमतये न मम।।

ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये।।

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा। इदं अग्नये स्विष्टकृते।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पूर्णपात्र संकल्प-

अद्येत्यादि० कृतस्य वेदारंभसाङ्गता सिद्ध्यर्थं हवन कर्मणी प्रतिष्ठार्थमिदं सदक्षिणां पूर्णपात्रं प्रजापति दैवतममुकगोत्राय अमुक शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे॥

वेद सरस्वती पूजन संकल्प-

अद्येत्यादि० तिथौ ब्रह्मवर्चस सिद्ध्यर्थं
वेद सरस्वती- पूजनमहं करिष्ये।।

वेद सरस्वती पूजन मंत्र-

ॐ वेदोसियेनत्वन्देवव्वेददेवेभ्योव्वेदोभवस्तेनमह्यं वेदो भूयाः॥

ॐ पावकानः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती। यज्ञं वष्टुधियावसुः॥

भगवते वेदनारायणाय नमः तथा च भगवती महासरस्वत्यै नमः।। वेद सरस्वती का पूजन शोडषोपचार या पंचोपचार से पूजन कर प्रार्थना-

शुक्लां ब्रह्म विचारसारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनीं।
वीणा पुस्तक धारिणीमभयदां जाड्यान्धकारा पहाम्॥
हस्ते स्फाटिक मालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थिताम्।
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम्॥

यजुर्वेद[१] मंत्र-

ॐ इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु

---

१. पारम्पर्या गतो एषां वेदः सपरिवृंहणः।
यच्छाखाकर्म कुर्वीत तच्छाखाध्ययनं तथा।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्रेष्ठतमाय कर्मणऽआप्यायध्वमध्न्याऽइन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा ऽ अयक्ष्मा मा व स्तेन ऽ ईशत माघस ँ सो ध्रुवा ऽ अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि।। यजुर्वेदाय नमः।।

ऋग्वेद मंत्र-

ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्।
होतारं रत्नधातमम्।। ॐ ऋग्वेदाय नमः।।

सामवेद मंत्र-

ॐ अग्नऽआयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये निहोता सत्सि वर्हिषिः।। ॐ सामवेदाय नमः।।

अथर्ववेद मंत्र-

ॐ शन्नो देवीरभिष्टय ऽ आपो भवन्तु पीतये। शँयोरभिस्त्रवन्तु नः।। अथर्ववेदाय नमः।। ॐ स्वस्तिः।।

इस प्रकार वेद मंत्रों का अध्ययन आचार्य कुमार को करावे पुनः दक्षिणा संकल्प-

अद्येत्यादि० कृतस्य वेदारंभाख्यस्य कर्मणः साङ्गता-सिद्ध्यर्थं इदं द्रव्यं अमुकगोत्रायामुक शर्मणे ब्राह्मणाय (गुरुवे) तुभ्यमहं सम्प्रददे।।

यजमान ब्राह्मण भोजन दक्षिणा दान कर आशीष ग्रहण करे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

॥ केशान्त संस्कार॥

चूड़ाकर्म और केशान्त संस्कार का प्रयोजन एक ही समान है। बाल कटवाना जब प्रारम्भ करे तो यह संस्कार किया जाता है यह संस्कार वेदाध्ययन की सामप्ति पर किया जाता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

॥अथ केशान्त संस्कार॥

गणेशादि देवताओं का पूजन कर ब्रह्मचारी रहे बालक के केशान्त संस्कार[१] के लिए पिता संकल्प करे-

अद्येत्यादि० अस्य ब्रह्मचारिणः केशान्ताख्य कर्माहं करिष्ये॥

नान्दिश्राद्ध आदि कर केशान्त संस्कार में पञ्चभू संस्कार पूर्वक सूर्य नाम से अग्नि का पूजन सीमान्तोनयन संस्कारवत् आहुति आदि देवे। गर्म जल से बालों को धो देवे। पुनः प्रदक्षिणा क्रम में चूड़ाकर्मवत् संस्कार कर क्षुर का पूजन करे। बाल काटने का मंत्र-

ॐ यत् क्षुरेण मज्जयता सुपेशसा वपत्वा वा वपति केशांश्छिन्धि शिरो मास्यायुः प्रमोर्षीर्मुखम्॥

बाल काटकर पूर्णाहुति आदि पूर्ववत् कर यजमान आचार्य को गायदान तथा दक्षिणा से सन्तुष्ट कर आशीष ग्रहण करें॥

---

१. केशान्त संस्कार

केशान्त षोडशे वर्षे ब्राह्मणस्य विधियते।
राजन्य बन्धोर्द्वाविंशे वैश्यस्य द्व्यधिकेतनः॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

॥ समावर्त्तन संस्कार ॥

केशान्त होने पर यह संस्कार किया जाता है इस संस्कार में ब्रह्मचारी के रूप निखारने के लिए घड़ों से अभिषेक सुगन्धित द्रव्य लेपन तथा स्नातक के नियम ब्रह्मचारी को आचार्य द्वारा बताये जाते हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

॥ समावर्त्तन संस्कार ॥

कुमार जब ब्रह्मचर्य से युक्त होकर (यज्ञोपवतीत संस्कार के बाद) वेदाध्ययन समाप्ति तथा युवावस्था प्राप्तकर गुरुगृह से लौटकर (समावर्तिन होने पर) गृहस्थाश्रम में आता है, इस नव जन्म को प्राप्त करता है तब यह समावर्तन संस्कार किया जाता है। इस संस्कार के अन्तर्गत यज्ञ, आठ घड़ो द्वारा जलाभिषेक स्नान, वस्त्र, अलंकार धारण आदि कार्य किये जाते हैं। गणेशादि देवताओं का पूजन तथा आठ अन्य कलश पूजन करके पिता संकल्प करें-

अद्येत्यादि० अमुको ऽहममुकराशे अस्य वटोः स्नाकत्व सिद्धये समावर्त्तन कर्म करिष्ये॥ पंच भू संस्कार पूर्वक अग्नि का राजपुत्र नाम से स्थापन कर दक्षिण में ब्रह्मा स्थापना करे ब्रह्मा से अन्वारब्धकर श्रुव से घी की आहुति दें- **ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम। ॐ इन्द्राय स्वाहा। इदं इन्द्राय न मम॥ ॐ अग्नये स्वाहा। इदं अग्नये न मम। ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय न मम॥** अग्नि का पूजन करके पुनः वेदारंभोक्त चतुर्वेदहोम प्रायश्चित होमादि करके ब्राह्मण को पूर्णपात्र दान संकल्प-**अद्य० कृतस्य समावतर्त्तनाख्यस्य कर्मणः सांगता सिद्धयर्थं ब्रह्मन् इदं पूर्णपात्रं सदक्षिणाकं तुभ्यमह सम्प्रददे॥** आचार्य प्रणीता विमोक संस्त्रव प्राशनपूर्वक कर देवे। पुनः ब्रह्मचारी श्रुव में हवन (ईंधन) करें- **अग्ने सुश्रवः इत्यादीनां पंचाना मंत्राणा ब्रह्मऋषियजूंषि छन्दासि अग्निदेवता अग्निसमिन्धने विनियोगः॥**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ अग्ने सुश्रवः सुश्रवसं मा कुरु स्वाहा॥१॥ यथा त्वमग्ने सुश्रवः सुश्रवा असि स्वाहा॥२॥ एवमा ँ सुश्रवः सैश्रवसं कुरु स्वाहा॥३॥ यथात्वमग्ने देवानां यज्ञस्य निधिपा असि स्वाहा॥४॥ एवमहं मनुष्याणां देवस्य निधियो भूयास ँ स्वाहा॥५॥ ब्रह्मचारी दक्षिण हस्त से ईशान से ईशान तक हवन वेदी के बाहर जल घुमा लेवे। पुनः उठकर प्रादेश मात्र पलाश की एक समिधा का हवन करे। विनियोग व मंत्र-**अग्न य इति मंत्रस्य प्रजापतिर्ऋषिः आकृतिश्छन्दः समिद्देवता समिदाधाने विनियोगः॥ ॐ अग्नये समिधमाहार्षबृह-तेजातवेदसे॥ यथा त्वमग्ने समिधा समिध्यस ऽएवमहमायुषामेधयावर्च्चसाप्रजयापशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन समिन्धेजीवपुत्रोम माचार्यो मे धाव्यहमसान्यनिरा-करिष्णुर्यशस्वी तेजस्वी ब्रह्मवर्चस्य न्नादो भूया स ँ स्वाहा॥** इस प्रकार मंत्र से पुनः दो बार और होम कर फिर अग्नि जलावे-**ॐ अग्ने सुश्रवः सुश्रवसंमाकुरु॥ ॐ यथा त्वमग्ने सुश्रव सुश्रवा ऽ असि॥ ॐ एवमाँ सुश्रवः सौश्रवसं कुरु॥ ॐ यथा त्वमग्ने देवानांयज्ञस्य निधिपा ऽअसि॥ ॐ एवमहं मनुष्याणा वेदस्य निधिपोभूयासम्॥ अग्नेः पर्युक्षणम्** ब्रह्मचारी अग्नि के बाहर पुनः जल घुमाकर हाथ गरम कर मुँह पर लगावे विनियोग व मंत्र- **तनूप अग्न इत्यादीनां प्रजापतिऋषि बृहती छन्द (बृहद्यजूंषि छन्दासि) अग्नि दैंवता अग्नुपस्थाने विनियोगः ॥ॐ तनूपा अग्नेसि तन्वमे पाहि॥१॥ आयुर्दाऽग्ने स्यायुर्मे देहि॥२॥ वर्चोदा ऽग्नेसि वर्चो मे देहि॥३॥ अग्नेयन्मे तन्वाऊनं तन्म ऽआपृण॥४॥**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मेधां मे देवः सविता आदधातु ॥५॥ मेधां मे देवी सरस्वती आदधातु॥६॥ मेधामश्विनौ देवावाधतां पुष्करस्त्रजो ॥७॥ इस प्रकार ब्रह्मचारी सातबार मुंह पोंछकर पुनः सारे शरीर पर शिर से पैर तक हाथ लगावे- **ॐ अङ्गानिच आप्यायतमिति शिर प्रभृति पादान्तं सर्वाङ्गन्यालभेत्॥**

ॐ वाक्चमऽ आप्यायताम्। मुख पर॥ **ॐ प्राणश्चमऽआप्यायताम्।** नाक पर॥ **ॐ चक्षुश्चम ऽ आप्यायताम्।** आंखों पर॥ **ॐ श्रोत्रं चम ऽ आप्यायताम्॥** दक्षिण कर्ण तथा पुन मंत्रोचारण के बाद वाम कर्ण॥ **ॐ यशोबलं चमऽ आप्यायताम्॥** इस मंत्र से दोनों बाहु का स्पर्श कर ले। जलस्पर्श कर पूर्णाहुति का विनियोग एवं मंत्र-**पूर्णादर्वीति मंत्रस्य पूर्णनाभऋषि त्रिष्टुप छन्दः अग्निर्देवता पूर्णाहुति होमे विनियोगः ॐ पूर्णादर्वि परापत ॐ सुपूर्णा पुनरापत वष्णेव विक्रीणावहा इषमूर्ज ॐ शतक्रतो स्वाहा।**

पुनः बैठकर त्र्यायुष निकाल कर लगाने का विनियोग व मंत्र **त्र्यायुषमिति नारायण ऋषि उष्णिक् छन्दः शिवो देवता त्र्यायुषं करणे विनियोगः॥ ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेरिति ललाटे** (मस्तकरपर) **कश्यपस्य त्र्यायुषमिति ग्रीवायाम्** (गले पर) **यद्देवेषु त्र्यायुषमिति दक्षिण बाहू मूले** (दाहिने पुनःवाम बाहु मूल में) **तन्नो अस्तु त्र्यायुषमिति हृदि॥** (हृदय पर) ब्रह्मचारी अग्नि गुरु आदि का अभिवादन करे **अमुक गोत्रः अमुकप्रवरान्वितः अमुकशर्माऽहं भो वैश्वानर त्वामभिवादयामि॥ आयुष्मान भव सौम्य॥** ऐसा आचार्य

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कहे **भो गुरो त्वामभिवादयामि।। आयुष्मान्भव सौम्य।। भो आचार्य त्वामभिवादयामि।। आयुष्मान् भवं सौम्य।। भो मातापितरौ युवामभिवादयामि।। आयुष्मान् भव सौम्य।। भो सूर्य चन्द्रमसौ युवामभिवादयामि।। आयुष्मान् भव सौम्य।। सर्वान् ब्राह्मणान् अभिवादयामि।। आयुष्मान् भव सौम्य।।**

आचार्य हवन वेदी के उत्तर से दक्षिण तक हरे कुशाओं को बिछाकर पहले वरुण कलश के समय पूजित आठ कलशों को स्थापित कर दे। पुनः प्रथम कलश के जल से निम्न मंत्र द्वारा जल निकाल ले- **ॐ येऽप्स्वन्तरग्नयः प्रविष्टागोह्यु उपगोह्यो मयूषो मनोहास्खलो विरुजनस्तन्-पादुषुरिन्द्रियहातान् विजहाभियो रोचनस्तमिह गृह्णामि।।** जल को ताम्रपात्र में डाल दें। इस मंत्र से ही पांच कलश से जल निकाल कर ताम्रपात्र में रख दे। जल से आचार्य ब्रह्मचारी का अभिषेक करवाये मंत्र- **तेन माम भिषिचांमि श्रियै यशसे ब्रह्मणे वर्चसे।।१।। येन श्रियमकृणुतां येनाममृषता ॐ सुरान् येनाक्षावभिषिंचतां यद्वाह दशिवनायशस्तेन मामभिषिंचताम्।।२।। ॐ आपो हिष्ठा मयो भुवस्तान ऊर्ज्जेदधातनः महेरणाय चक्षसे ।।३।। यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः उशतीरिव मातरः।।४।। तस्माअरंगमामवो यस्यक्षयाय जिन्वथ। आपोजन यथाच नः ।।५।।** छठवे सातवे आठवें कलश के जल से विनामंत्र स्नान करवाये तथा कलशो के शेष बचे हुए जल से निम्न मंत्र से स्नान करवाये।

ॐ यत्ते केशेषु दौर्भाग्यं सीमन्ते यच्च मूर्धनि।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ललाटे कर्णयोरक्ष्णोरापस्तद्ध्नन्तुं सर्वतः।। ब्रह्मचारी शिरमार्ग से मेखला निकाल ले, विनियोग व मंत्र **उदुत्तममिति शुनः शेफ ऋषि त्रिष्टुप् छन्दो वरुणो देवता मेखलोन्मोके विनियोगः। ॐ उदुत्तमंवरुणपाशमश्मदवाधमं विमध्यम ँ श्रथाय अथावयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम।।**

ब्रह्मचारी दण्ड आदि का त्याग कर देवे, नये वस्त्र पहन ले और आचार्य सूर्य दर्शन करवाये, विनियोग व मंत्र-**उद्यन्निति प्रजापतिर्ऋषिः शक्वरी छन्दः आदित्योदेवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।। ॐ उद्यन्भ्राजिष्णुरिन्द्रोमरुद्भिरस्थाः प्रातर्यावद्भिरस्था दशसनिरसिदशसनि मा कुर्वाविदन्मागमयोद्यन्भ्राजिष्णुरिन्द्रो मरुद्भिरस्थाद्दिवायावभिरस्थाच्छतशनिरसि-शतशनिंमाकुर्वा विदन्मागमयोद्यन्भ्राजिष्णुर्मरुद्भिरस्थाः सायंयावभिरस्थात्सहस्त्र शनिरसि सहस्त्रशनिंमाकुर्वाविदन्मागमयेति।।** सूर्यदर्शन कर ब्रह्मचारी तिलदधि खाये। नाई द्वारा बालदाढ़ी नाखून कटवाकर पुनः शीतल जल से स्नान कर लेवे। तथा दन्तधावन काष्ट बारह अंगुल प्रमाण का ग्रहण कर दान्तुन करे, विनियोग व मंत्र- **अन्नाद्यायेति अथर्वण ऋषिरनुष्टुप छन्दः सोमो देवता दन्त धावने विनियोगः।। ॐ अन्नाद्यायव्यूहध्व ँ सोमो राजाय मागमत्। समेमुखं प्रमाक्ष्र्यतेयशसाच भगेन च।।** इसके बाद ब्रह्मचारी सुगन्धिद्रव्य से स्नान कर पुनः गर्मजल से स्नान कर चन्दन ग्रहण करे विनियोग व मंत्र-**प्राणापानाभ्यामिति प्रजापतिऋषिर्यजुश्छन्दः प्राणापानौ देवते चन्दनोप ग्रहणे विनियोगः।। ॐ प्राणापानौमेतर्प्पय चक्षुर्मे तर्प्पय श्रोत्रं में तर्प्पयनासि-**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कामेतर्प्यय।। मंत्र से ब्रह्मचारी मस्तक पर चन्दन लगाकर हाथ पैर धोकर अपसव्य होकर दक्षिण मुख हो पितृ तीर्थ से भूमि का सिंचन करे। विनियोग व मंत्र-**पितर इति प्रजापत्यशिवसरस्वतीन्द्रा ऋषयो यजुश्छन्दः पितरो देवता सौत्रामण्यां विनियोगः।। ॐ पितर शुन्धध्वमिति पितरः शुन्धध्वनम्।।** पुनः सव्य हो जाये। पुनः जप के लिए विनियोग व मंत्र- **सुचक्षाहमिति प्रजापतिर्ऋषिर्यजुश्छन्दो लिङ्गोक्ता देवताजपे विनियोगः।। ॐ सुचक्षा अहमक्षी भ्यां भूयासं सुवर्चामुखेन सुश्रुत कर्णाभ्यां भूयासम्।।** अधो वस्त्र पहनने का विनियोग व मंत्र- **परिधास्याइत्याथर्वणऋषिः पङ्क्ति छन्दो वासो देवता ऽधोवासः परिधाने विनियोगः।। ॐ परि धास्यैयशोधास्येदीर्घायुत्वायजरदष्टिरशिम। शतं च जीवामिशरदः पुरुचीरायस्पोषमभिसंव्ययिष्ये।।** ब्रह्मचारी को आचार्य नूतन यज्ञोपवीत पहनाये। विनियोग व मंत्र-**यज्ञोपवीत मिति मंत्रस्य परमेष्ठीऋषि त्रिष्टुप्छन्दो लिङ्गोक्ता देवतोपवीत परिधाने विनियोगः।। ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुंच शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।** उत्तरीयवस्त्र बह्मचारी पहनें, विनियोग व मंत्र-**यशसामिति मंत्रस्य अथर्वण ऋषि पंक्ति छन्दो लिंगोक्ता देवता उत्तरीय परिधाने विनियोगः।। ॐ यशसामाद्यावा पृथिवी यशसेन्द्रा बृहस्पति। यशोभगश्चमाविऽ विदन्दद्यौ मा प्रतिपद्यताम्।।** पुनः ब्रह्मचारी आचमन कर पुष्प ग्रहण कर ले। विनियोग व मंत्र-**या आहरदितिमंत्रस्य भारद्वाज ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः सुमनसो देवता पुष्प ग्रहणे विनियोगः।।**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ याआहर ज्जमदग्निः श्रद्धायै मेधाये कामयेन्द्रियाय ता अहं प्रति गृह्णामि यशसाचभगेन च॥ ब्रह्मचारी को माला पहनाने का विनियोग व मंत्र-**ॐ यद्यशोप्सरसमिति मंत्रस्य भारद्वाज ऋषि अनुष्टुप् छन्दः सुमनसे देवता माला बन्धने विनियोगः॥ ॐ यद्यशोप्सरसामिन्द्रश्च कारविपुलं पृथु। तेन संग्रथिताः सुमनस आवध्नामि यशोमयि॥** ब्रह्मचारी शिर को वस्त्र से ढक दे। विनियोग व मंत्र-**युवेतिमंत्रस्य विश्वामित्रर्ऋषि यजुश्च्छन्दः शिरोदेवता शिरोवेष्टनेविनियोगः। ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात्सउश्रेयान भवतिजायमानः। तंधीरासः कवयउन्नयन्ति स्वाध्योमनसादेवयंतः॥** ब्रह्मचारी को कुण्डल तथा अलंकार पहनाने का विनियोग व मंत्र-**अलंकरण मितिमंत्रस्य प्रजापति ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः श्री देवताऽलंकरण परिधाने विनियोगः॥ ॐ अलङ्करण मसिभूयोलङ्करणं भूयात्॥** ब्रह्मचारी को नेत्र में अंजन लगाने का विनियोग व मंत्र-**वृत्रस्येतिमंत्रस्य प्रजापतिर्ऋषिः यजुश्छन्दोऽञ्जनदेवता नेत्राञ्जने विनियोगः॥ ॐ वृत्रस्यासिकनीनिकश्चक्षुर्दा असिचक्षुर्मेदेहि॥**

ब्रह्मचारी को दर्पण दिखाने का विनियोग व मंत्र **रोचिरिष्णुरिति मंत्रस्य प्रजापति ऋषि यजुश्छन्दः आदर्शो देवता दर्पणो दीक्षणे विनियोगः॥ ॐ रोचिष्णुरसि॥** क्षत्र ग्रहण करने का विनियोग व मंत्र-**बृहस्पतेइति मंत्रस्य गौतम ऋषि बृहती छन्दः आकाशो देवता छत्रग्रहणे विनियोगः॥ ॐ बृहस्पते छदिरसिपाप्मनोमामन्तर्धेहितेजशोयशसोमा-मन्तर्धेहि॥** उपानह ग्रहण करने का विनियोग व मंत्र-**प्रतिष्ठेति**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मंत्रस्य प्रजापति ऋर्षि विराट छन्दः उपानहौ देवता उपानग्द्रहणे विनियोगः॥ ॐ प्रतिष्ठेतो विश्वतोमापातम्॥ दण्डग्रहण करने का विंनियोग व मंत्र –**ॐ विश्वाभ्यो मिति मंत्रस्य याज्ञवल्क्य ऋषि त्रिष्टुप्छन्दः दण्ड ग्रहणे विनियोगः॥ ॐ विश्वाभ्यो मानाष्ट्राभ्यस्परिपाहि॥** ब्रह्मचारी दण्डग्रहण कर आचार्य के मुख से सावधान होकर स्नातको पयोगी वाक्यों को सुने (आचार्य कहे)-

गानवादित्र नृत्यानि क्रियमाणानि चापरैः॥
न पश्येन्न स्वयं कुर्य्याच्छ्रुतिराह सनातनी॥१॥
नक्तं ग्रामान्तरे यानं तथा धावन मेव च।
कूपावलोकनं वृक्षारोहणं फलकृन्तनम्॥२॥
नग्नस्नानं शैलगर्त्तलंधनं सन्धिसर्प्पणम्॥
असत्य भाषणं त्याज्यं श्रुतिराह सनातनी॥३॥
उदितास्त मयंसूर्य न पश्येत्स्वमुखं जले॥
स्नानं विना भैक्ष्य वृत्तिं स्वीकुर्याच्छ्रुतिराहच॥४॥
न कुत्रचिद्गमंकुर्याद्देवे वर्षति सर्वदा॥
आवश्यकेऽयं मे वज्रः पाप्मानमपहनत्पठेत॥५॥
स्त्रियं नोपहसेत्केशरहितां गुर्विणीं तथा॥
परस्त्रियं च विजने न ब्रुयान्न रमेत्क्वचित्॥६॥
क्लीवं जनं नोपहसेत्सदाऽत्र स्यादृढव्रतः॥
स्वकीयकैः परैः सार्धं कुर्य्यात्सख्यं सदैवहि॥७॥
वत्सं धयन्तिं परगां चरन्ती क्षेत्र मध्यतः॥
न ब्रूयात्स्वामिने तस्याः श्रुतिराह सनातनी॥८॥
तृणानन्तर्हितायां च सस्यवतां तथा भुवि॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तथोत्सर्प्प्न्समुत्तिष्ठन्न मूत्रं न मलं त्यजेत्।।९।।
प्रशीर्णे नाऽपि काष्टेन प्रमृजीतं गुदं सदा।।
मंजीष्ठा रंजितं वासो विकृतं नैव धारयेत्।।१०।।

तीन रात्रि तक पालने योग्य नियम-

न मृन्मये पिबेत्तोयं नाद्यान्मासं च कर्हिचित्।।
स्त्रीशूद्र कृष्ण शकुनिशुनां दर्शनकं त्यजेत्।।१।।
तत्सम्पर्कान्न पानीयं तैः सार्धं भाषणं तथा।।
आतपष्ठिवनं मूत्रं पुरीषं नैव संत्यजेत्।।२।।
नान्तर्दधीत स्वात्मानं सूर्यात्तप्तोदकेन च।।
अर्थादृते न च स्नायादित्याह परमा श्रुतिः।।३।।
नकुलश्च भगालं च कपालं च मणेर्धनुः।।
न पश्मेदन्त्य रात्रौ च नाश्नीयादन्न मेव च।।४।।
सत्यावाणी प्रवक्तव्या त्रिधेयं गुरुवन्दनम्।।
पंचयज्ञा प्रकर्तव्या इत्याह परमा श्रुति।।५।।

आचार्य ब्रह्मचारी को अनेक प्रकार के सदुपदेश सुनावै। पुनः आचार्य को दक्षिणा देने का संकल्प-ॐ **अद्येत्यादि० मम पूर्वाङ्गत्वेन पूजिता इमाः स्वर्णादि प्रतिमा अग्न्यादि देवताः नवग्रहादि प्रीतये अमुकामुकगोत्रेभ्योऽमुक शर्मभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य दातुमहमुत्सृजे।।** पुनः-**अद्येत्यादि० ममोपनयन वेदारंभ समावर्त्तन कर्मसु कारितस्य ब्राह्मण द्वारा सकलाचार्य ऋत्विग जप पाठ साङ्गफलावाप्तये इमां स्वर्ण रजतताम्रादिखण्डकल्पितां दक्षिणां अमुक गोत्रेभ्योऽमुकशर्मेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्यदातुमहमुत्सृजे।।**
ब्राह्मण ब्रह्मचारी को वेद मंत्रों (पुराणमंत्रों) के द्वारा आशीर्वाद देवे।

।।इति समावर्तन संस्कार।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

॥वाग्दान विधिः॥

विवाह से कुछ दिन पूर्व विवाहोक्त नक्षत्र में शुभ लग्न में कन्या का पिता वर के पिता को बुलाकर गणेश वरुण आदि देवताओं का पूजन कर वाग्दान संकल्प करे-

ॐ अद्येत्यादि० अमुकोहं करिष्यमाण कन्यादान कर्मणः पूर्वाङ्गत्वेन वाग्दान करिष्ये।

पुनः इन्द्राणी पूज़न स्वर्ण प्रतिमा में करे संकल्प-

अद्येत्यादि० अमुकगोत्रोत्पन्ना अमुकराशि अमुकी देव्यहं सर्व सौभाग्य समृद्धये स्वर्णादिमूर्तौ इन्द्राण्याः पूजनं करिष्ये॥

पूजन हेतु ध्यान करे-

वामे करे प्रकर्त्तव्या सौम्या सन्तान मञ्जरी।
वरदा मंडिता भूषैर्द्विभुजा सवर्दा शची॥

पूजन का विनियोग व मंत्र-

आदित्यैराष्णासीति मंत्रस्यदध्यङ्गाथर्वण ऋषिः यजुश्छन्दः इन्द्राणि देवतेन्द्राण्या वाहने विनियोगः॥ ॐ आदित्यैरास्नासीन्द्राण्या उष्णीषः। पूषासि धर्माय दीष्व॥ ॐ भूर्भुव स्वः इन्द्राणीइहागच्छ इह तिष्ठ॥

इन्द्राणि पूजन-

देवेन्द्राणि महाभागे सर्वसौख्य परायणे॥
आगच्छ मम कल्याणं साधयस्व शिवप्रदे॥१॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

देवेन्द्राणि नमस्तुभ्यं देवेन्द्र प्रिय भामिनी।
वरं सौभाग्यमारोग्यं पुत्रलाभं च देहि मे॥२॥
धान्यंदेहि धनं देहि पशून् देहीन्द्र भामिनी॥
यशोदेहि सुखं देहि सर्वकार्य करी भव॥३॥

पंचोपचार या षोडषोपचार से पूजन करके प्रार्थना मंत्र-

इन्द्राणींद्रपदस्थे त्वं ज्ञानतोऽज्ञानतो मया॥
य पूजितासि वरदे क्षमस्व प्रणतः प्रिये॥

आचार्य दोनों पक्षों का तीन बार गोत्रोच्चारण कर दाता संकल्प करे-

अद्येत्यादि० अमुक गोत्रोहं अमुक प्रवरो अमुक शाखिनो अमुक वेदाध्यायीने अमुक शर्माहं अमुकगोत्रोत्पन्नाय अमुक प्रवराय अमुक वेदाध्यायीने अमुक शर्मणः प्रपौत्राय अमुक शर्मणः पौत्राय अमुक शर्मणः पुत्राय अमुक शर्मणेः विष्णुस्वरूपिणे कन्यार्थिने वराय (वर) **अमुकगोत्रोत्पन्ना अमुक प्रवरस्यामुक शाखिनो अमुक शर्मणः प्रपौत्री अमुकगोत्रस्यामुकप्रवरस्यामुकशाखा- ध्यायिनो अमुक शर्मणः पौत्रीम् अमुकगोत्रस्यामुक प्रवरस्यामुकशाख-ध्यायिनीमुक शर्मणः पुत्रीम् अमुकनाम्निं रूपिणी (कन्या) वरार्थिनोमिमाकन्यां ज्योतिर्विदादिष्टे मुहूर्ते तुभ्यं दास्ये।**

दाता कांसे की थाली में चावल भरकर श्रीफल यज्ञोपवीत

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वस्त्र स्वर्णाङ्गुली को रखकर कन्या का पिता खड़ा उठकर वर के पिता को देवे, मंत्र-

वाचादत्ता मया कन्या पुत्रार्थ स्वीकृता त्वया।
कन्यावलोकनविधौ निश्चितस्त्वं सुखीभव॥१॥
अष्टवर्षादिक कन्या पुत्रवत्पालिता मया।
त्वत्पुत्राय प्रदास्यामि स्नेहेन परिपाल्यताम्॥२॥
व्यङ्गक्लीवः पङ्तिहीनोनिर्विद्यो व्यसनी ऋणी।
तावत् तव सुयो न स्यात्कन्यां दास्यामि निश्चयात्॥३॥

थाली का द्रव्य ग्रहण कर फिर वर का पिता कहे-

वाचादत्ता त्वया कन्या पुत्रार्थो स्वीकृता मया।
वरावलोकन विधौ निश्चितस्त्वं सुखीभव॥

उपरोक्त मंत्र के बाद कन्या का पिता वर के पिता को थाली में रखे द्रव्य को लेकर। **'स्वस्तीति प्रतिवचनम्'** (वर का पिता कहे) वर के घर से आये हुए सौभाग्य द्रव्य वस्त्र आदि कन्या को सुवासिनी पहना दे। वर तथा कन्या पक्ष के दाता ब्राह्मणो को दक्षिणा देकर आशीर्वाद ग्रहण कर लेवें।

॥ इति वाग्दान विधिः॥

सम्पूर्ण हवन रहस्य भाषा टीका लेखक- शिव स्वरूप यज्ञिक
इस पुस्तक में यज्ञ कुण्ड बनाने के स्वरूप, यज्ञ कुण्ड पूजा, हवन संकल्प, नवीन ग्रह प्रवेश हवन, चतुःषष्ठि योगनी हवन, विष्णु याग, गायत्री याग, रुद्र याग, दुर्गा याग, अभिषेक मंत्र आदि बहुत अच्छे प्रकार से दिया गया है, प्रत्येक के लिए उपयोगी पुस्तक। मूल्य-५०/-रु०
कर्मसिंह अमरसिंह पुस्तक विक्रेता, बड़ा बाज़ार हरिद्वार

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

।।विवाह संस्कार।।

विद्याध्ययन के बाद ब्रह्मचारी को विवाह संस्कार करने की आज्ञा शास्त्र देते हैं। विद्वान तथा शीलवान वर को कन्या के पिता द्वारा बुलाकर, कन्या को उत्तम वस्त्र और आभूषणों से अलंकृत कर कन्यादान करना श्रेष्ठ है इस विधि के द्वारा विवाह होने के उपरान्त उत्पन्न पुत्र दश अगली, एक स्वयं, दश पिछली अर्थात् इक्कीस पीढ़ी को पवित्र कर पितरों का उद्धार करता है। विवाह संस्कार का उद्देश्य संतान उत्पत्ति के साथ पितरों का उद्धार करना भी है अतः स्त्री और पुरुष के धर्म सम्मत संस्कार के द्वारा सन्तान की उत्पत्ति करना इस संस्कार का प्रमुख उद्देश्य है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

।।विवाह संस्कार स्वरूप।।

सोलह संस्कारों में सबसे महत्वपूर्ण संस्कार विवाह है पुरुषत्व और स्त्रीत्व का संयोग तथा सृष्टि का मूल कारण ही विवाह संस्कार है विवाह संस्कार भिन्न-भिन्न रीतियों के द्वारा सम्पन्न होता है हिन्दूओ में होने वाले आठ प्रकार के विवाह है-

ब्राह्मों दैवस्तथैवार्षः प्राजापत्यस्तथा सुरः।
गांधर्वो राक्षसश्चैव पैशाचश्चाष्टमोधमः।। (मनु0३/२१)

ब्राह्म, दैव, आर्ष, प्रजापत्य, आसुर, गाधर्व राक्षस पैशाच आठ प्रकार के विवाह मनुस्मृति में बताये गये हैं। ब्राह्म अर्थात् कन्या को सुसज्जित कर वर को बुलाकर कन्या दान करना। दैव अर्थात् ऋत्विक् को वस्त्र आदि से सुसज्जित कर कन्या देना। तथा यज्ञादिक कार्य के लिए वर से गौ आदि लेकर कन्यादान करना आर्ष। वर कन्या को गृहस्थ धर्म का पालन करने की आज्ञा देना प्राजापत्य। कन्या के कुटुम्बियो को धन देकर जो विवाह किया जाता है आसुर विवाह। वर कन्या के परस्पर अनुराग से जो विवाह किया जाता है गन्धर्व विवाह। कन्या को बलपूर्वक हरण कर जो विवाह किया जाता है राक्षस विवाह। कन्या के साथ बलपूर्वक जो समन्ध किया जाता है उसे पैशाच विवाह कहते हैं।

उपरोक्त आठ प्रकार के विवाहों में प्रथम चार विवाह[१] करने की शास्त्र आज्ञा देता है तथा चार शेष की निन्दा[२] की

---

१. ब्राह्मादिषु विवाहेषु चतुर्ष्वेवानु पूर्वशः।
ब्रह्मवर्च स्विनः पुत्रा जायन्ते शिष्ट सम्यता।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गई है।

प्रथम कहे चार विवाहों में भी हिन्दू शास्त्रों में ब्राह्म विवाह को पवित्र माना जाता है।

विवाह संस्कार को देशाचार से (जिसको गांव घर की वृद्ध महिलायें बताती हैं उसको) भी सम्पन्न करवाने चाहिए क्यों कि उसमें भी वर कन्या के उज्जवल भविष्य की कामनाऐं रहती हैं।

कन्यादान के दिन माता पिता को उपवास करना चाहिए यदि असमर्थ हो तो जल, मूल, फल, भी दूध आदि का उपयोग कर सकते हैं।

विवाह के दिन वर कन्या के घर में शुभ लग्न तथा विवाहोक्त नक्षत्र में वर कन्या का मंगल स्नान किया जाता है। शुभ लग्न में ब्राह्मण वर कन्या के मंगल स्नान हेतु गणेशादि के पूजन हेतु वर या कन्या के पिता से संकल्प करावे।

ॐ तत्सदद्येत्यादि अमुक गोत्रोत्पनोहं स्व पुत्रस्य कन्यका वा विवाहोत्सांगता सिद्धमर्थ गणपतिस्थापनं पूजनं करिष्ये।

इस प्रकार संकल्प कर ब्राह्मण गणेश मातृका वसुधारा कुल देवी का पूजन वरुण पूजन आदि कर वर या कन्या का मंगल स्नान करे, मंगल स्नान में देशाचार द्वारा वर कन्या को सौभाग्यवती स्त्रियों के द्वारा तेल चढ़ाया जाता है दूर्वा से वर कन्या को तेल के साथ हल्दी, दही एवं शारीरिक कोमलता के लिए उवटन लगाया जाता है इस अवसर पर वर कन्या को

---

२. कुविवाहै क्रियालोपैर्वेदान ध्ययनेन च।
कुलान्यकुलतां यान्ति ब्राह्मणाति क्रमेण च।। (मनु०)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कंकण बन्धन का नियम है मौलि से लाल कपड़े पर सरसो सुपारी आदि बांध दिया जाता है जो एक प्रकार से वर कन्या का रक्षा सूत्र होता है इसी समय वर कन्या का स्नान कराकर ब्राह्मण सूर्य को अर्ध्यदान करा दे।

॥मण्डप निर्माण॥

मण्डप पूजन सभी जगह किया जाता है मण्डप निर्माण काष्ट या केले के स्तम्भों से किया जाता है। मंण्डप के बीच चार हाथ लम्बी चार हाथ चौड़ी एक हाथ ऊंची वेदी का निर्माण करना चाहिए, यह मण्डप घर के वाम भाग में होना चाहिए। १६ स्तंभो से युक्त मण्डप होना चाहिए। स्तंभ पूजन क्रम निम्न प्रकार से है- कन्या का पिता संकल्प करे-

॥स्तम्भ पूजन॥

स्तम्भ पूजन के लिए आचार्य कन्या के पिता से संकल्प कराये-

ॐ अद्येत्यादि० अमुक शर्माहं ममास्या: कन्याया: बीजगर्भ-समुद्भवै नौनिवर्हणपूर्वक दाम्पत्यैश्वर्याभिवृद्धये करिष्यमाण विवाह संस्कार कर्मणि वरुण विधिना षोडश वरुण पूजन पूर्वकं ब्रह्मादि षोडश कदलीमय स्तम्भ पूजनं करिष्ये॥

१. अन्तर ईशान में पहले वरुण कलश पूजन कर ब्रह्मा स्तंभ (कदली) पूजन करने का मंत्र व विनियोग-

ब्रह्म यज्ञानमिति गौतम ऋषिस्त्रिष्टुप
छन्दो ब्रह्मादेवता ब्रह्मावाहने विनियोग:॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आवाहन- **एह्येहि विप्रेन्द्र पितामहेश हंसाधिरूढ़ त्रिदशैकवंद्य। श्वेतोत्पलाभास कुशाम्बु हस्त गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।।**

पूजन-**ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेनऽआवः। सबुध्न्याऽउपमाऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः।। स्थूणनागमात्रिकाय ब्रह्म दैवत संज्ञकस्तम्भाय नमः पाद्यादिभिः सम्पूज्य प्रार्थयेत्।।** पूजन कर प्रार्थना-**कृष्णाम्बरा जिनधरपद्मासन चतुर्भुज।**

जटाधर जगद्धातः प्रसीद कमलोद्भव।।

ॐ सावित्र्यै नमः। ब्राह्मयै नमः। गङ्गायै नमः।। पूजन कर स्तम्भ छूकर नागमात्रिकाओ का पूजन- **ॐ ऊर्ध्वऊषुण ऊतये तिष्ठाः देवो न सविता। ऊर्ध्वोवाजस्य सनिता यदञ्जिभिर्वाद्यदिभर्विह्वयामहे। स्तम्भ शिरसि नागमात्रे नमः सम्पूज्य।।**

पूजन कर शाखा बाध दें।। **ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमीद सदन्मातरं पुरः पितरं च प्रयन्त्स्वः।।** पुनः प्रार्थना कर दें-**ॐ यतोयतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः।। वनस्पतिसमुद्भूतो निर्मितो विश्वकर्मणाः। स्थिरो भवात्ररक्षार्थं यावत्कार्य समाप्तये।।**

२. विष्णुस्तंभपूजन-**अन्तराग्नेये इदं विष्णुरितिमेधा-तिथिर्ऋषि गायत्री छन्दो विष्णु देवता विष्णवावाहने विनियोगः।।** (कलश पूजन सब स्तंभो में करें)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आवाहन-**एह्येहि नारायण दिव्यमूर्ते सर्वामरैरर्चितपादपदम्। शुभा शुभानन्द शुचामधीश गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।।**

पूजन-**ॐ इदं विष्णुविचक्रमेत्रेधानिदधे पदम्। समूढमस्यपा ँ सुरे स्वाहा।। विष्णवे नमः** पूजन कर प्रार्थना-

देव देव जगन्नाथ विष्णोयज्ञपते विभो।
पाहि दुःखाम्बुधेरस्मान् भक्तानुग्रह कारक।।

ॐ लक्ष्म्यै नमः। ॐ नन्दायै नमः। ॐ वैष्णव्यै नमः। ॐ ऊर्ध्वऊषुण ऊतये० से यावत्कार्य समाप्तये।। तक पूरे मंत्र बोलें।

३. रुद्रस्तंभपूजन-**नैर्ऋत्ये नमस्तइति परमेष्ठी ऋषिर्गायत्री छन्दो रुद्रो देवता रुद्रावाहने विनियोगः।।**

आवाहन-**एह्येहि गौरीश पिनाकपाणे शशाङ्कमौले वृषभादिरूढ। देवाधि देवेश महेश नित्यं गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।।**

पूजन-**ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतोत इषवे नमः। बाहुभ्यामुतते नमः।।** पूजन कर प्रार्थना।

पंचवक्त्र वृषारुढ़ त्रिलोचन सदाशिव।
चन्द्रमौले महादेव मम स्वस्ति करोभव।।

ॐ माहेश्वर्यै नमः। ॐ गौर्यै नमः। ॐ शोभनायै नमः।।
पुनः **ऊर्ध्व ऊषुण ऊतये०** से यावत कार्य समाप्तये तक पूरे मंत्र बोलें।।

४. इन्द्र पूजन-**वायव्यै त्रातारमिति गर्ग ऋषि त्रिष्टुप छन्दः इन्द्रो देवता इन्द्रावाहने विनियोगः।।**

आवाहन-**एह्र्येहिवृत्रघ्नगजाधिरूढ सहस्त्रनेत्र त्रिदशैकवन्द्य।**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शचीपते शक्र सुरेश नित्यं गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते॥

पूजन-**ॐ त्रातार मिन्द्र मवितार मिन्द्र ँ हवे हवे सुहव ँ शूर मिन्द्रम् ह्वयामि शक्रं पुरहूतमिन्द्र ँ स्वस्तिनो मघवाध त्विन्द्रः॥**

इन्द्र का पूजन कर के प्रार्थना-

देवराज गजारूढ़ पुरंदरशतक्रतौ।
वज्रहस्त महावाहौ वांछितार्थप्रदोभवः॥

ॐ इन्द्राण्यै नमः। ॐ आनन्दायै नमः। ॐ विभूत्यै नमः॥

पुनः **ऊर्ध्व ऊषुण ऊतये०** से **यावत्कार्य समाप्तये** तक पूरे मंत्र बोले॥

५. सूर्य पूजन- **बहिरीशाने चित्रमिति कुत्स ऋषि विराट छन्दः सूर्योदेवता सूर्यावाहने विनियोगः॥**

आवाहन-**एह्येहि सप्ताश्व सहस्त्रभानौ सिन्दूरवर्ण प्रतिमावभास! । छायापते सूर्य दिनेश नित्यं गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते॥**

पूजन-**ॐ चित्रं देवानां मुदगादनीकंचक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः। आप्राद्यावापृथिवी अन्तरिक्ष ँ सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च॥**

पूजन कर प्रार्थना-**पद्महस्तरथारूढ पद्मासन सुमङ्गल। क्षमां कुरु दयालो त्वं ग्रहराज नमोस्तु ते॥**

ॐ सावित्र्यै नमः। ॐ मङ्गलायै नमः। ॐ भूत्यै नमः॥

पूजन कर पुनः **ऊर्ध्व ऊषुण ऊतये०** से **यावत्कर्म समाप्तये** तक पूरे मंत्र बोलें।

६-गणेश पूजन-**ईशान पूर्वयोर्मध्ये गणानान्त्वेति प्रजापतिर्ऋषि यजुश्च्छन्दो गणपतिर्देवता गणपत्यावाहने विनियोगः॥**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आवाहन- **एह्येहि हेरम्ब महेश पुत्र समस्त विघ्नोघविनाश दक्षः। मागल्यपूजा प्रथमं प्रधानगृहाण पूजां भगवन्नमस्ते॥**

पूजन कर प्रार्थना- **लम्बोदर नमस्तुभ्यं सततं मोदक प्रिय। अविघ्नं कुरु मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा॥**

ॐ विघ्न हारिण्यै नमः। ॐ जयायै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः॥ पूजन कर पुनः **ऊर्ध्व ऊषुण ऊतये० से यावत्कर्म समाप्तये** तक बोलें॥

७- अनन्त पूजन- पूर्वाग्नेययोर्मध्ये नमोस्त्विवति देव श्रवाऋषि त्रिष्टुप छन्दो अनन्तो देवता अनन्ता वाहने विनियोगः॥

आवाहन-**एह्येहि नागेन्द्र धरामरेश नागाङ्गनाकिन्नरगीयमान। अनन्तयक्षोरगलोकसघैर्गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते॥**

पूजन-**ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्योः ये केच पृथिवीमनुये अन्तरिक्षे येदिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥ अनन्ताय नमः।** पूजन कर प्रार्थना-**आशीविष समोपेत नागकन्या विराजित। पाहि यज्ञमिमं देव फणासप्तकमण्डित॥**

ॐ अधरायै नमः। ॐ पद्मायै नमः। ॐ महापद्मायै नमः॥

पूजन कर पुनः **ऊर्ध्व ऊतये० से यावत्कर्म समाप्तये।** तक बोलें।

८. स्कन्द पूजन-**बाह्याग्नेये यदक्रन्द इति भार्गवजमदग्निदीर्घतमस ऋषि त्रिष्टुप छन्दः स्कन्दो देवता स्कन्दा वाहने विनियोगः॥**

आवाहन-**एह्येहि गौरीसुत देवदेवषट्कृत्तिकारक्षित देह यष्टे। मयूरवाह प्रणतार्तिहारिन् गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते॥**

पूजन-**ॐ यद क्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन् समुद्रादुत वा**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्यबाहू उपस्तुत्यं महिजातं ते अर्वन्॥ स्कन्दाय नमः॥ पूजन कर प्रार्थना-मयूरवाहन स्कन्द गौरीसुत षडानन।

कार्तिकेय महाबाहो दयां कुरु दयानिधे।

ॐ जयायै नमः। ॐ विजयायै नमः। ॐ पश्चिम संध्यायै नमः। पूजन कर पुनः ऊर्ध्वऊषुण ऊतये० से यावत्कर्म समाप्तये। तक बोले।

९. यम पूजन-आग्नेय दक्षिणयोर्मध्ये यमायत्वेतिदध्यगाथर्वण ऋषिर्यजुश्छन्दो यमो देवता यमावाहने विनियोगः॥ आवाहन-एह्येहिवैवस्वत धर्मराज सर्वामरैरर्चित धर्ममूर्ते।

विशालवक्षः स्थलरुद्ररूप गृहाणपूजां भगवन्नमस्ते॥

पूजन- ॐ यमायत्वा मखाय त्वा सूर्यस्य त्वा तपसे देवस्त्वा सविता मध्वा नक्तु पृथिव्यास ॐ स्पृशस्पाहि अर्चिरसि शोचिरसि तपोसि॥ यमाय नमः॥ पूजन कर प्रार्थना-

धर्मराज महाकाय दण्डहस्त वर प्रद।

रक्तेक्षण महाबाहो पाहियज्ञं नमोस्तुते॥

ॐ पूर्व संध्यायै नमः। ॐ क्रूरायै नमः। ॐ नियन्त्रै नमः॥ पूजन कर पुनः ऊर्ध्व ऊषुण ऊतये० से यावत्कर्म समाप्तये॥ तक बोले॥

१०. वायुपूजन-दक्षिणनैर्ऋत्यमध्ये वायुरिति वशिष्ठऋषि त्रिष्टुप छन्दो वायु देवता वाय्यावाहने विनियोगः॥ आवाहन-एह्येहिवायो मम रक्षणाय मृगाधिरूढ़ः सहसिद्ध संघैः।

प्राणाधिपः कालकवेः सहाय गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पूजन-ॐ वायुरग्रेगा यज्ञप्रीः साकं गन्मनसा यज्ञं शिवो नियुद्भि शिवाभिः। वायवे नमः।।

पूजन कर प्रार्थना

नमोधरणि पृष्ठस्थ ध्वजधारिन् समीरण।
पाहियज्ञमिमं देव प्रसन्नो भव सर्वदा।

ॐ तीब्रायै नमः। ॐ गायत्र्यै नमः। ॐ वायव्यै नमः।।

पूजन कर पुनः ऊर्ध्व ऊषुण ऊतये० से यावत्कर्म समाप्तये। तक बोलें।

११. सोम पूजन-नैर्ऋत्ये सोमममिति बन्धु ऋषिर्गायत्रीछन्दः सोमो देवता सोमावाहने विनियोगः।।

आवाहन-एह्येहिसोमा ध्वर देवदेव विधत्स्व रक्षां भगणेनसार्धम्।
सर्वोषधीभीः पितृभिः सहैव गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।

पूजन- ॐ सोम ँ राजानं साग्नि मन्वार माहवे आदित्यान् विष्णु ँ सूर्य ब्रह्माण च बृहस्पति ँ स्वाहा।। सोमायनमः।।

प्रार्थना- क्षीरार्णव समुद्भूतं द्विजराज सुधाकर।
सोम त्वं सोम्य भावेन ग्रहपीणां निराकुरु।।

ॐ सावित्र्यै नमः। ॐ अमृतकलायै नमः। ॐ विजयायै नमः।।

पूजन कर पुनः ऊर्ध्व ऊषुण ऊतये० से यावत्कर्म समाप्तये। तक बोले।।

१२. वरुण पूजन-पश्चिमनैर्ऋत्यमध्ये इमं मे वरुणेति वत्सऋषिर्बृहतीछन्दो वरुणो देवता वरुणावाहने विनियोगः।।

आवाहन-

एह्येहि यादो गणवारि धीशं प्रजन्य देवप्सरसा गणेन।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विद्याधरेन्द्रामरगीयमाना गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।।
पूजन-ॐ इम मे वरुण श्रुधि हवमद्या च मृडय त्वाम वस्युराचके। वरुणाय नमः। पूजन कर प्रार्थना-

शंखस्फटिक वर्णाभश्वेतहाराम्बरा वृत।
पाशहस्त महाबाहो वरुण त्वं दयां कुरु।।

ॐ वारुण्यै नमः। ॐ बार्हस्पत्यै नमः। ॐ पाशधारिण्यै नमः।।
पूजन कर पुनः-ऊर्ध्व ऊषुण ऊतये० से यावत्कर्म समाप्तये तक बोले

१३. वसुपूजन-पश्चिम वायव्य मध्ये सुगाव इति वशिष्ठ ऋषिर्गायत्री छन्दो वसुर्देवता वस्वावाहने विनियोगः।।
आवाहन-एह्येहि देवेश्वर दिव्यदेह वसो प्रसन्नात्म दृगष्ट मूर्ते। ममास्य यागस्य सुरक्षणार्थ गृहाण पूजा भगवन्नमस्ते।।
पूजन-ॐ सुगावो देवाः सदना आकर्म्मय आजग्मेद ँ सर्वतं जुषाणाः। भरमाणा वहमाना हवि ँ ष्यस्मै धत्त वसवो वसूनि स्वाहा। वसवे नमः।। पूजन कर प्रार्थना-

दिव्य वस्त्राष्टमूर्त्ते त्वं दिव्य देह धर प्रभो।।
पाहि यज्ञ मिमं देव वरदं त्वां नमाम्यहम्।।

ॐ विनितायै नमः। ॐ गरिमायै नमः। सम्भूत्यै नमः।।
पूजन कर पुनः ऊर्ध्व ऊषुण ऊतये० से यावत्कर्म समाप्तये तक बोलें।

१४. कुबेर पूजन-वायव्ये सोमोधेनुमिति गौतम ऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दो धनदो देवता धनदावाहने विनियोगः।।
आवाहन-एह्येहि रक्षोगणनायक त्वं विशाल वेताल पिशाच सघैः। ममाध्वरं पाहि कुवेरदेव गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पूजन-ॐ सोमो धेनुꣳ सोमोअर्वन्तमाशु ꣳ सोमो वीरं कर्मण्यं ददाति। सादन्यं विदथ्य ꣳ सभेयं पितृश्रवणं यो ददाशदस्मै। धनदाय नमः।। पूजन कर प्रार्थना-

दिव्य देह धनाध्यक्ष पीतहाराम्बरावृत।
उत्तरेश महाबाहो वांच्छितार्थ प्रदोभव।।

ॐ अदित्यै नमः। ॐ सिनीवाल्यै नमः। ॐ लघिमायै नमः। पूजन कर पुनः ऊर्ध्व ऊषुण ऊतये० से यावत्कर्म समाप्तये तक बोले।

१५. बृहस्पति पूजन-उत्तरवायव्य मध्ये बृहस्पत इति गृत्समद ऋषि त्रिष्टुप्छन्दो बृहस्पति देवता बृहस्पत्या वाहने विनियोगः।।

आवाहन-एह्येहि देवेन्द्र गुरो मखेशं बृहस्पते यज्ञपते सुयागे।
रक्षार्थमंत्रोपविशानुकंपिन् गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।।

पूजन-

ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अर्हा द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु।
यद्दी दयच्छवस ऋत प्रजात् तदस्मांसुद्रविणं धेहि चित्रम्।।
बृहस्पतये नमः।।

प्रार्थना-देवाचार्य यथा शक्त्या पूजितोसिमयामुदा।
क्रूरग्रहोपशान्ति त्वं कुरु नित्यं नमोस्तु ते।।

ॐ पौर्णमास्यै नमः। ॐ वेदमात्रे नमः। सन्नत्यै नमः पूजन- कर पुनः ऊर्ध्व ऊषुण ऊतये० से यावत्कर्म समाप्तये तक बोलें।

१६. विश्वकर्मा पूजन-

उत्तरेशानयोर्मध्ये विश्वकर्मन्निति शास ऋषि त्रिष्टुछन्दो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विश्वकर्मा देवता विश्व- कर्मावाहने विनियोग:।।

आवाहन-

एह्येहि शिल्पीश्वर विश्वकर्मन् मूर्त्यादिनिर्माण करैक मुख्य। दोर्दण्ड संसाधित विश्वकर्मन् गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।।

पूजन-**ॐ विश्वकर्मन् हविषां वर्धनेन त्रातारमिन्द्रम कृणोरवध्यम् तस्मै विश: समनमन्त पूर्वीरयमुग्रो विहव्यो यथा सत्।। विश्वकर्मण्यै नम:।।**

पूजन कर प्रार्थना-

विश्वकर्मन् प्रसीदत्वं शिल्पशास्त्र विशारद।
दण्डपाणे महाबाहौ तेजोमूर्ति धर प्रभो।।

ॐ वास्तु देवतायै नम:। ॐ वैश्व कर्मण्यै नम:। ॐ शारदायै नम:। पूजन कर पुन: **ऊर्ध्व ऊषुण ऊतये०** से **यावत्कर्म समाप्तये।** तक बोले।।

कन्या के घर में स्तभ पूजन के बाद स्वागतार्थ बारात आने के समय गणेश पूजन का विधान भी है अत: जब बारात बैठ जाये तब आचार्य वर के हाथ से गणेश पूजन करा लेवे तथा मङ्गल पिठाई आदि कर लेवे। पुन: लग्नानुसार विवाह संस्कार के कार्य वर पूजन (धूल्यार्घ) कन्यादान, लाजा होम, भावरे सप्तपदी आदि कार्य सम्पन्न कराये जाते हैं।

---

१. वरमाला-प्राय: आजकल बारात के स्वागत के समय वरमाला का प्रचलन हो रहा है जो धर्मसम्मत नहीं है क्योंकि वरमाला तो स्वयंवर का निमय है अर्थात् जो वर कन्या की कुछ शर्तो को पूरा करे अथवा कन्या स्वयं वर का वरण करे तो वर माला पहनाई जाती है। ब्राह्म विवाह में नहीं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

।।विवाह संस्कार।।

घूल्यर्घ विधि

आचार्य पूजन- कन्या का पिता स्नान कर शुद्ध वस्त्र पहन आचमन लें, भूत शुद्धि कर वरण सामग्री सहित आचार्य पूजन हेतु संकल्प करे-

ॐ अद्येत्यादि० ममास्या कन्यायाः करिष्यमाण विवाह संस्कार कर्मणिः एभिर्गन्धाक्षत पुष्प पूगीफल द्रव्य यज्ञोपवीत पुष्पमाला वासोऽलंकारणादिभिश्च आचार्यकर्म कर्तु आचार्यत्वेन त्वामहं वृणे।। कन्या का पिता आचार्य को संकल्प देकर पुनः प्रार्थना करे-

आचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पतिः।
तथा त्वं भगवन् चात्र आचार्यो भव सुव्रतः।।

कन्यापिता पुनः कहे **अस्मिन् कन्या विवाह कर्मणि त्वं मे आचार्यो भवः** आचार्य कहे-**आचार्योऽहं भवानि** अब धूल्यार्घ का कार्य आचार्य विवाह मण्डप के दरवाजें के बांये भाग में करावे आचार्य कन्या के पिता से गणेशपूजन कर वरार्चन संकल्प करावे-

ॐ तत्सत् अद्येत्यादि० ममास्य कन्यायाः भर्त्रासह धर्म प्रजोत्पादन गृह्य परिग्रह धर्माचरेणस्वधिकार सिद्धि द्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थ विवाहाख्यं संस्कारं करिष्ये। तदङ्गतया विहितं निर्विघ्नतासिध्यर्थ गणपति पूजनं स्वस्तिपुण्याहवाचनं कलश स्थापनं मातृका ग्रह पूजनम् करिष्ये। ऐसा संकल्प कन्या का पिता करके आचार्य गणेशादि पूजन करा लेवे। पुनः संकल्प सपरिवार कन्या का पिता करे-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ तत्सत् अद्येत्यादि अमुक गोत्रोहं अमुक शर्माहं ममास्याः कन्याः दाम्पत्य ऐश्वर्य सिद्ध सम्पादक सत्पुत्रोत्पादनादि गार्हस्थ्य सुख वाप्तये गृहागतं विष्णुरूपिणंवरं अर्चयिष्ये।।

संकल्प छोड़कर कन्या का पिता जल लेकर विनियोग करें-

विनियोगः ॐ साधु भवानास्तामिति प्रजापतिर्ॠषि ब्रह्मादेवता यजुश्छदो वरार्चने विनियोगः। जल छोड़कर पुनः कन्या का पिता कहे-**साधु भवानास्तामर्चयिष्यामो भवन्तम्।** वर कहे-**अर्चय।** कन्या का पिता पच्चीस कुशाओ से निर्मित विष्टर हाथ में लेकर **ॐ विष्टरो विष्टरो विष्टरः। विष्टरः प्रतिगृह्यताम्।** ऐसा कहे। फिर वर बोले-**ॐ विष्टरं प्रतिगृह्णामि।** कहकर वर विष्टर को दाहिने हाथ में लेकर पुनः बांये हाथ में रख ले फिर आचार्य वर को बैठने के लिए विनियोग करे-**ॐ वर्मोस्मीति अथर्वण ॠषि अनुष्टुप् छन्दः विष्टरो देवता उपवेशने विनियोगः।** आसन पर विष्टर का अग्रभाग उत्तर को रख, वर उस पर पैर[1] रख दे मंत्र- **ॐ वर्मोस्मिसमानामुद्यतामिव सूर्यः। इमं तमभि तिष्ठामि यो मां कश्चाभिदासति।।** इस तरह वर विष्टर के ऊपर पैर रखे कन्या पिता कास्य पात्र में जल लेकर वर से कहे-**पाद्यं पाद्यं पाद्यम्। ॐ पाद्यं प्रतिगृह्यताम्।** वर कहे-**पाद्यं प्रतिगृह्णामि।।** कन्या पिता जल से विनियोग कर वर का चरण धोये-**ॐ विराजोदोहोसीति मंत्रस्य प्रजापतिॠषिरनुष्टुप्**

---

1. याद प्रक्षालन- ब्रह्मणो दक्षिणं पादं पूर्व प्रक्षालयेत् सदा।
क्षत्रादि प्रथमं वाममिति धर्मानुशासनम्।। (पद्म पुराण)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

छंदः आपोदेवता पाद प्रक्षालने विनियोगः॥ कन्या का पिता विनियोग छोड़कर पैर धोये-**ॐ विराजोदोहोऽसि विराजोदोहमशीयमयिपाद्यायै विराजोदोहः॥** फिर कन्या पिता दूसरा विष्टर हाथ में लेकर कहे-**ॐ विष्टरो विष्टरो विष्टरः। विष्टरं प्रतिगृह्यताम्॥** वर कहे-**विष्टरं प्रतिगृह्णामि॥** वर दूसरे विष्टर[1] को ग्रहण करे कन्या पिता जल लेकर विनियोग मंत्र पढ़े-**ॐ वर्मोस्मीति अथर्वण ऋषिरनुष्टुप् छन्दो विष्टरो देवता उपवेशने विनियोगः॥** वर पुनः मंत्र के बाद दूसरा पैर विष्टर के ऊपर रखे-मंत्र **ॐ वर्मोस्मि समनामुद्यतामिवसूर्यः। इमंतमभितिष्ठामि यो मां कश्चाभिदासति॥** कन्या का पिता पूर्ववत् पाद्य लेकर कहे-**ॐ पाद्यं पाद्यं पाद्यं, पाद्यं प्रतिगृह्यताम्** वर कहे-**पाद्यं प्रतिगृह्णामि॥ ॐ विराजो दोहोसि विराजोदोहमशीय मयि पाद्यायै विराजोदोहः॥** कन्या पिता वर का दूसरा चरण धो देवे।

अर्घ्यकरणम्-कन्या का पिता कांस्यपात्र में दूर्बा, चावल, सुपारी, चन्दन, पुष्प, जल, तिल, कुशा लेकर अर्घ्य पात्र बनावै आचार्य कहे-**अर्घो ऽ र्घो ऽ र्घः।** कन्या का पिता कहे-**स्वागतोऽसि वर श्रेष्ठ, सर्व कामार्थ सिद्धये।**

प्रतिग्रह समर्थोऽसि गृहाणार्घ्य नमोस्तुते॥

ॐ अर्घ्यः प्रतिगृह्यताम्॥ कन्या पिता कह कर **अर्घ्यः** वर को दे, वर कहे **अर्घ्यः प्रतिगृह्णामि॥** वर अर्घ्य ग्रहण करे ग्रहण करने का विनियोग-**ॐ आपस्थः इति मंत्रस्य सिन्धु**

---

१. पंचशद्भि भवेद् ब्रह्मा तदर्धेन तु विष्टर।
दक्षिणावर्त्तको ब्रह्मा वामवर्त्त तु विष्टरः॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

द्वीप ऋषिरनुष्टुप् छन्दः आपोदेवताऽर्घाक्षतादि ग्रहणे विनियोगः।। ग्रहण करने का मंत्र-**ॐ आपस्थ युस्माभिः सर्वान् कामान वाप्नुवामि।।** वर ने जो अर्घ्य ग्रहण किया है इसको ईशान दिशा में प्रवाहित करे। विनियोग व मंत्र-**समुद्र व इति अथर्वण ऋषिर्बृहति छंदो वरुणो देवता ऽर्घजल प्रवाहे विनियोगः।। ॐ समुद्रं वः प्रहणोमि स्वायोनिमभि-गच्छत। अरिष्टोस्माकं वीरा मा परासेचिमत्पयः।।** कन्या का पिता आचमन में जल लेवे आचार्य कहे-

ॐ आचमनीयमाचमनीयमाचमनीयम्।। कन्या का पिता कहे-**आचमनीयं प्रतिगृह्यताम्।** वर कहे-**आचमनीयं प्रतिगृह्णामि।।** वर कन्या के पिता से आचमनी जल ग्रहण करे, वर का आचमनी जल लेने का मंत्र व विनियोग-**ॐ आमागन्निति परमेष्ठि ऋषि बृहतीछन्द आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।। ॐ आमागन्यशसा स ँ सृज वर्चसा। तम्माकुरु प्रियं प्रजाना मधिपतिं पशूनामरिष्टिं तनूनाम्।।** वर आचमन के जल को दायें हाथ में रखकर तीन बार आचमन करे तथा कहे-**ॐ गंगा विष्णुः गंगा विष्णुः गंगा विष्णुः।।**

मधुपर्क विधान[1]-कन्या का पिता कांस्य पात्र में दही, घी, शहद रखकर दूसरे पात्र से ढक देवे, **आचार्य कहे-मधुपर्को मधुपर्को मधुपर्क।** कन्या का पिता कहे-**मधुपर्कः प्रतिगृह्यताम्।** वर कहे-**मधुपर्कः प्रतिगृह्णामि** कन्या के पिता

मधुपर्क- सर्पिरिक गुणं प्रोक्तं शोधितं द्विगुणं मधुः।
मधुपर्क विधौ प्रोक्तं सर्पिषां च समंदधि।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के हाथ में वर मधुपर्क को देखे, देखने के लिए विनियोग व मंत्र- **ॐ मित्रस्येति प्रजापति ऋषि पंक्तिश्छन्दो मित्रोदेवता दातृकरस्थ मधुपर्क दर्शने विनियोगः॥ ॐ मित्रस्य त्वा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्तां। मित्रस्यत्वा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे मित्रस्य त्वा चक्षुसा सर्वाणि भूतानि समीक्षामहे॥** वर यजमान के हाथ से मधुपर्क पात्र दाये हाथ में लेकर पुनः बांये हाथ में रखे। ग्रहण करने का मंत्र व विनियोग-**देवस्यत्वेति बृहस्पतिरांगिरस ऋषिर्यजुश्छन्दः सविता देवता मधुपर्क ग्रहणे विनियोगः॥ ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनो र्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यां प्रतिगृह्णामि॥** वर पुन अपने हाथ में रखे मधुपर्क को देखकर अनामिका अंगुष्ठ से तीन बार प्रदक्षिणा क्रम से घुमाकर तीन बार पृथ्वी में छींटा देवे। विनियोग व मंत्र-**ॐ नमः श्यावास्येति प्रजापतिः ऋषिर्यजुश्छन्दः सविता देवता स्वहस्तगत मधुपर्कवेक्षणे विनियोगः। ॐ नमः श्यावास्यायान्नशने। यत्तआविद्धं तत्ते निष्कृन्तामि॥** वर तीन बार मधुपर्क का भक्षण करे, विनियोग व मंत्र- **यन्मधुनइति कुत्सऋषिर्जगति छन्दो मधुपर्को देवता मधुपर्कप्राशने विनियोगः॥ ॐ यन्मधुनो मधव्यं परम ꣳ रूपमन्नाद्यं तेनाहं मधुनो मधव्येन परमेण रूपेणानाद्येन परमोमधव्योऽन्नोदोऽसानि॥** बाकी मधुपर्क को उत्तर दिशा की तरफ रख दे- **ततो मधुपर्कशेषमसंचर[१] देशे उत्तरतो वा निदध्यात॥** वर तीन आचमन करे। एक दोने में जल,

१ संचर देश-जलेवा बालुकायां वा वने वा पर्वते ऽथवा।
भवनोपरि देशे वा ह्य सञ्जर इतीर्यते॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चावल, पान, सुपारी मौलि, दक्षिणा को कन्या पिता दाहिने हाथ में रख नीचे लिखे श्लोक के प्रमाण से वर के अंगों से लगाता जाये।। **ॐ वाङ्म आस्येस्तु।।** मुख से **ॐ नासोर्मे प्राणोऽस्तु।।** नासिका से। **ॐ अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु।।** नेत्रों से। **ॐ कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु।।** कानों से। **ॐ बाह्वोर्मे बलमस्तु।।** भुजाओ से **ॐ ऊर्वोमे ओजोऽस्तु।।** जंघाओ से। **ॐ अरिष्टानि मे ऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सहसन्तु।।** सब अंगो का स्पर्श करे।

गोदान

आचार्य कहे-**गौ र्गो गौः।।** कन्या पिता विनियोग करे-**माता रुद्राणामिति मंत्रस्य ब्रह्मात्रृषि स्त्रिष्टुप् छन्दः शौर्रिदेवताभिमंत्रणे विनियोगः।।** कन्या का पिता और वर एक लम्बे दूर्बा के तिनको को पकड़ कर तोड़े-

ॐ माता रुद्राणां दुहिता वसूनां ॐ स्वसादित्या नाममृतस्य नाभिः। प्र नु वोचं चिकितुषे जनाय मा गामनागा मदिति वधिष्ठ।। अर्थात् गौ रुद्रो की माता है, भगवान विष्णु ने समुद्र मंथन कर गौ को उत्पन्न किया अतः विष्णु की पुत्री आदित्यों की बहन, अमृत का आश्रय गौ का बध न करके तृण देना ही गौ का पूजन स्तुति व पालन है। कन्या पिता गोदान संकल्प करे अथवा गोमूल्य का संकल्प करे-**ॐ अद्येत्यादि० अमुकगोत्रो अमुक शर्माहं महापातक निवृत्ति पूर्वक्र श्रुत्युक्त फल प्राप्त्यर्थं स्वकीय कन्योद्वाहे मधुपर्क संबंधि गोप्रति निधि भूतमिदं द्रव्यं श्री नारायण रूप अमुक शर्मणे वराय तुभ्यमहं संप्रददे।।** ऐसा कहकर गो या गोमूल्य संकल्प वर को देवे, वर गाय अथवा तदुचित मूल्य

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ब्राह्मण को देवे तथा धूल्यर्घ दक्षिणा देकर कन्या पिता वर को वरण द्रव्य दे-**अद्येत्यादि० अमुकोहं ममास्याः कन्याया बीजगर्भसमुद्भवैनोनिबहर्ण पूर्वक दाम्पत्यैश्वर्य फला भि वृद्धये करिष्माण विवाह संस्कार कर्मणि एभिः स्वर्णाङ्गुलीय वासोभिरग्निबृहस्पति दैवतैरमुकगोत्र प्रवर शाखिनममुक वेदाध्यायिनममुकशर्माणं ब्राह्मणं विष्णुरूपिणं वरं कन्यादान प्रतिग्रहत्वेन त्वां वृणे॥** ऐसा कहकर कन्या पिता वरण द्रव्य वर को देवे, वर कहे-**वृतोस्मि** कन्या पिता वर के हाथ में रक्षासूत्र भी बांध दे- **ॐ यदा बध्नं दाक्षायणा हिरण्य ঁ शतनिकाय सुमनस्यमानाः। तन्म आबध्नामि शतशरदायुष्माञ्जरदष्टिर्य्यथासम्॥** वर को तिलक देने का मंत्र-**ॐ स्वस्ति नऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नश्ताक्ष्यो ऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्ददातु॥**

अग्निस्थापन

अग्नि का पंच भू संस्कार पूर्ववत् कर अग्नि स्थापन कर पूजन कर लेवे-**योजक नाम अग्नेः शांडिल्य गोत्र शाण्डिल्यासित देवलेति त्रिप्रवरान्वित भूमिमातः वरुण पितः मेषध्वज मम संमुखोभव॥ वस्त्र परिधान**-कन्या का पिता वर को चार वस्त्र देवे संकल्प-**अद्यामुकगोत्रस्यामुक प्रवरस्यामुकः शर्माहं आत्मनः कन्या विवाह सांगताफलसिद्धयर्थ श्री यज्ञपुरुष नारायण प्रीत्यर्थे चतुर्वस्त्रं विष्णु दैवतो यथा नाम गोत्राय ब्राह्मणाय विष्णुरूपाय वराय तुभ्यमहं सम्प्रददे॥** वर दो वस्त्र कन्या को प्रदान करे-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विनियोग व मंत्र-**जरां गच्छेति मंत्रस्य प्रजापतिऋषि त्रिष्टुप् छन्दवासोदेवता वस्त्र परिधाने विनियोग।।** विनियोग कर वर पहला वस्त्र कन्या को दे-**ॐ जरांगच्छ परिधत्स्व वासो भवाऽकृष्टी नाम भिशस्तिषावा। शतं च जीव शरदः सुवर्चारयिं च पुत्राननु संव्ययस्वा युष्मतीदं परिधत्स्व वासः।।** पुनः दूसरा वस्त्र-**या अकृतंन्मिति प्रजापतिर्ऋषि त्रिष्टुप् छन्दो वासो देवतोत्तरीय परिधाने विनियोगः।। ॐ या अकृतंन्नवन् या अतन्वत याश्च देवस्तन्तूनभितोततन्थ। तास्त्वा देवीर्जरसे संव्ययस्वा युष्मतीदं परिधत्स्ववासः।।** पुनः वर दो वस्त्र पहन ले पहला वस्त्र पहनने का विनियोग व मंत्र-**परिधास्येइत्याथर्वणऋषिः पंक्तिश्छन्दो वासो देवताऽधोवासः परिधाने विनियोगः।। ॐ परिधास्यै यशोध ास्यै दीर्घायुत्वाय जरदष्टिरस्मि। शतं च जीवामिशरद पुरूचीरायस्पोषमभिसंव्ययिष्यै।।** पुनः दूसरा वस्त्र धारण करने का मंत्र व विनियोगः- **यशसमिति अथर्वण ऋषिः पंक्तिश्छन्दो वासो देवता कंचुकादिपरिधाने विनियोगः।। ॐ यशसा मा द्यावा पृथिवी यशसेन्द्राय बृहस्पतिः यशोः भगश्च मा विदद्यशो मा प्रतिपद्यताम्।।** वर कन्या वस्त्र धारण कर आचमन कर लें। कन्या का पिता वर कन्या के मध्य वस्त्र रखे। विनियोग व मंत्र- **समञ्जत्विति मंत्रस्य अथर्वण ऋषिरनुष्टुप्छन्दो लिंगोक्ता देवता अन्तर्पटकरणे विनियोगः।। ॐ समञ्जन्तु विश्वेदेवाः समापो हृदयानि नौ। संमातरिश्वा संघाता समुद्रेष्ट्री दधातु नौ।।** ऐसा वर पढ़े अब वर कन्या परस्पर देख ले (अन्तर्पटहटाकर) इसको संमुखीकरण कहते हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

।।शाखोच्चार।।

आचार्य वर और कन्या द्वारा गणेशादि पंचांग देवताओं का पूजन कर लग्न समय ग्रहदानादि कर लेवें तत्पश्चात दोनों पक्षों के पुरोहित (आचार्य) वर कन्या का गोत्रोच्चारण करें-पहले वर की तरफ से पुरोहित शाखोच्चार पढे-

हेरम्बः सुरपूजितो गुणमयो लम्बोदरः श्रीयुतः।
श्री शुण्डो गज कर्णको गजमुखो गंभीर विद्यागुणी।।
गौर्यापुत्र गणेश्वरो हरसुतो गोविन्द पूजाकृता।
यात्रा जन्म विवाह कार्य समये कुर्यात्सदा मंगलम्।।
अमुक गोत्रस्य[१] अमुक प्रवरस्य, अमुक शाखिनो
अमुक वेदाध्यायिन अमुक शर्मणः प्रपौत्राय।।१।।
श्रीमत्पंकजविष्टरो हरिहरौ वायुर्महेन्द्रो ऽनलः।
चन्द्रो भास्कर वित्तपाल वरुणो प्रेताधिपो नैर्ऋतिः।।
प्रद्युम्नः नल कूवरौ सुरगज चिंतामणि कौस्तुभः।
स्वामीशक्तिधरश्च लांगलधरः कुर्वन्तु नो मंगलम्।।
अमुक गोत्रस्य, अमुक प्रवरस्य, अमुक शाखिनो
अमुक वेदाध्यायिन अमुक शर्मणः पौत्राय।।२।।
गंगा गोमति गोपतिगर्णपति गोविन्द गोवर्धनो।
गीता गोमयगोरिजा गिरिसुता गंगाधरो गौतमः।।
गायत्री गरुड़ो गदाधर गया गंभीर गोदावरी।
गंधर्वा ग्रहगोप गोकुलगणाः कुर्वन्तु नो मंगलम्।।
अमुक गोत्रस्य अमुक प्रवरस्य आमुक शाखिनो
अमुक वेदा ध्यायिन अमुक शर्मणः पुत्राय।।३।।

---

१ वर का पुरोहित वर के गोत्र प्रवर शाखा आदि का उच्चारण करे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अब कन्या की तरफ से पुरोहित शाखोच्चार पढ़े-

नेत्राणां त्रितयं शिवंपशुपतेरग्नित्रयं पावनम्।
यन्तदविष्णु पदत्रय त्रिभुवने ख्यातं च रामत्रयम्।।
गंगावाह पदत्रयं सुविमलं देवत्रयं ब्राह्मणाम्।
सन्ध्यानां त्रितयं द्विजैरभिहितं कुर्वन्तु नो मंगलम्।।
अमुक गोत्रस्य[1] अमुकप्रवरस्य अमुक शाखिनो
अमुकवेदाध्यायिनो अमुक शर्मणः प्रपौत्रीम्।।४।।
बाल्मीकि सनकः सनन्दन मुनिर्व्यासो वशिष्ठभृगु।
र्जाबालिजमदग्नि राम जनको गंगाधरौ गौतमः।।
मान्धाता भरतो नृपश्च सगरो धन्योदिलीपो नृपः।
पुण्यो धर्मसुतो ययातिनहुषः कुर्वन्तु नो मंगलम्।।
अमुक गोत्रस्य अमुक प्रवरस्य अमुक शाखिनो
अमुक वेदाध्यायिनो अमुक शर्मणः पौत्रीम्।।५।।
गौरी श्री रदितिः सुपर्ण जननी कद्रुमहेन्द्र प्रिया।
सावित्री च सरस्वती च सुरभि सत्यव्रताऽरुन्धती।।
सत्याजाम्बवती चरुक्म भगिनी स्वाहा पितृणा प्रिया।
वेलाचाम्बु निधेः समीनमकरा कुवन्तु नो मंगलम्।।
अमुक गोत्रस्य अमुक प्रवरस्य अमुक शाखिनो
अमुकवेदा ध्यायिनो अमुक शर्मणः पुत्रीम्।।६।।

दोनों पक्ष के पुरोहित अन्य मंगल श्लोकों को भी पढ़ सकते है-

शेषः तक्षक कालकूटकुमदाः पद्मास्तथा वासुकि।
कर्कोट खलु पद्म शंखकइति ख्याताश्वये पन्नगा।।

१-कन्या का पुरोहित कन्या के पिता का गोत्र प्रवर शाखा आदि का उच्चारण करे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अन्य कानननगह्वरे जलनिधो ये चान्तरिक्षे स्थिता।
स्ते प्रातः स्मरेणन च प्रतिदिनं कुर्वन्तु नो मंगलम्।।७।।
गंगा सिंधु सरस्वती च यमुना गोदावरी नर्मदा।
कावेरी सरयू महेन्द्र तनया चर्मण्वती वेदिका।।
क्षिप्रा वेत्रवती महासुरनदी ख्याता च या गण्डकी।
पुण्याः पुण्यजलैः समुद्र सहिता कुर्वन्तु नो मंगलम्।।८।।
लक्ष्मी कौस्तुभ पारिजातक सुरा धन्वन्तरिश्चन्द्रमा।
गावः कामदुधाः सुरेश्वरगजो रंभादि देवांगना।।
अश्वः सप्तमुखस्तथा हरि धनु शंखविपंचामृतम्।
रत्नानीति चतुर्दश प्रतिदिनं कुवन्तु नो मंगलम्।।९।।
ब्रह्मज्ञान रसायनम् श्रुतिकथावैद्यस्तथा ज्योतिष।
व्याकंरण च धनुर्धर जलतर मंत्राक्षरं वेदिकम्।।
कोक वाहन वाजिनं नटनृते संबोधनं चातुरी।
विद्यानाम चतुर्दश प्रतिदिनं कुर्वन्तु नो मंगलम्।।१०।।
ब्रह्मा वेदपतिः शिवः पशुपतिः सूर्यो ग्रहाणांपतिः।
शक्रो देवपतिर्नलो नरपतिः स्कंदश्च सेनापतिः।।
विष्णुर्यज्ञपतिर्यमः पितृपतिस्तारा पतिश्चन्द्रमा।
इत्येते पतय सुपर्ण सहिता कुर्वन्तु ते मंगलम्।।११।।
अश्वत्थो वटवृक्षचन्दनतरुर्मदार कल्पद्रुमो।
जम्बू निम्बकदम्ब नूतन रसा बृक्षाश्च ये क्षारिणः।।
रम्यं चैत्ररथं सन्दनवनं वैराजितं राजते।
सर्वते फलमिश्रिता प्रतिदिनं कुर्वन्तु नो मंगलम्।।१२।।
इत्येवं वर मंगलाष्टकमिदं पापौघ विध्वंसनम्।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पुण्य सन्मति कालिदास कविना प्रातः प्रबोधंकृतम्।।
य प्रातः श्रणुयात्समाहितमना दत्वा महादक्षिणाम्।
गंगा सागरं संगमोद्भव फलं प्राप्नोति पुण्यंमहत्।।१३।।

वर तथा कन्या पक्ष, दोनों पुरोहितों को शाखोच्चार दक्षिणा देवे- संकल्प-**अद्येत्यादि० विवाह कर्मणि द्विज द्वारा कारितस्य शाखोच्चार कर्मणः सांगता सिद्ध्यै इमां दक्षिणां ब्राह्मणाय दास्यै।।**

।।कन्यादान।।

कन्या का पिता अपनी स्त्री से गठजोडा बांधकर कन्या पिता उत्तर[1] मुख, पश्चिम मुह कन्या, वर पूर्व मुख होकर कन्या दान[2] के समय बैठे कन्या पिता वर का पूजन करे-

दाताऽहंवरुणो राजा द्रव्यमादित्य दैवतम्।
वरौऽसौ विष्णु रूपेण प्रतिगृहत्वयंरिति।।

कन्या का पिता पुनः कन्या पूजन करे-**ॐ अम्बे अम्बिके ऽम्बालिके न मानयति कश्चन सस्वस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्** मंत्र कहकर कन्या पिता कन्या व वर का पूजन कर लेवे।

आचार्य ग्रन्थिबन्धन हेतु वर कन्या के दुपट्टा में एक कोने पर

---

१ सर्वत्र प्राङ्मुखो दाता प्रतिग्राही उदङ्मुख।
एवं एव विधिर्यत्र कन्यादाने विपर्ययः।।

२. कन्यादान फल- अश्वमेध सहस्त्रस्य वाजपेय शतस्य च।
एक कन्या प्रदानेन फलं प्राप्नोतिना कले।।
कन्यादानं समारंभे दाता शंखे समाददेत्।
दूर्वाक्षतं फलं पुष्पं चन्दनं जलमेव च।। (वृहत्पाराशर)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दूर्वाअक्षत सुपारी बांध दे कन्या पिता शंख में[३] दूर्वा अक्षत तुलसी फल पुष्प दक्षिणा चन्दन, कुशा, जल तथा दाहिने हाथ में कन्या का दाहिना अंगूठा रखकर संकल्प करे-

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णु: श्रीमद्भगवतोमहापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयप्रारार्द्धे श्री श्वेतवाराह कल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भूर्लोके भारतवर्षे भरत खण्डे आर्यावर्त्तैक देशान्तर्गत अमुक क्षेत्रे भागीरथ्या अमुक भागे अमुक संवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमुक तिथौ अमुक वासरे अमुकगोत्रस्याऽमुकप्रवरस्य अमुक शाखाध्यायिनो ऽमुकशर्मण: प्रपौत्राय अमुक गोत्रस्याऽमुका प्रवरस्य अमुक शाखाध्यायिनो अमुक शर्मण: पौत्राय अमुक गोत्रस्याऽमुक प्रवरस्य अमुक शाखाध्यायिनो अमुक शर्मण: पुत्राय अमुक वराय अमुक गोत्रस्य अमुक प्रवरस्य अमुक शाखा ध्यायिनो प्रपौत्रीम्, पौत्रीम्, पुत्रीम् अमुकनाम्नीम् इमां कन्यां सुस्नातां यथाशक्त्य ऽ लङ्कृतां प्रजापति दैवत्यां शतगुणीकृत ज्योतिष्टोमातिरात्रशतफल प्राप्ती काम: अमुक शर्मणे विष्णु स्वरूपिणे वराय पत्नीत्वेन तुभ्यमहं सम्प्रददे॥

कन्यादान व विक्रय फल-

श्रुत्वा कन्या प्रदानं च पितर: प्रपितामहा।
विमुक्ता सर्व पापेभ्यो ब्रह्मलोके ब्रजन्ति ते॥१॥
कुंभीपाके महाघोरे यावच्चन्द्राऽर्क तारकम्।
पच्यते स्वकुलै सार्ध: कन्याविक्रय कारक:॥२॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

॥कन्यादान का विस्तृत संकल्प॥

ॐ अद्यतत्सद् ब्रह्म अथानन्तवीर्यस्य श्रीमान्नारायणा-स्याचिन्त्याऽपरिमितानन्त शक्ति समन्वितस्य स्वकीय मूल प्रकृति परमशक्त्या प्रकीड मानस्य सच्चिदानन्द सन्दोह रूपे स्वात्मनि सर्वाधिष्ठाने स्वज्ञान कल्पितानां महाजलौघ मध्ये परिभ्रम्यमाणा नामनेक कोटि ब्रह्माण्डा नामनेक तमेऽस्मिन् ब्रह्माण्डेऽव्यक्त महदहंकार पृथिव्यप्तेज वाय्वा-काशादभिर्दश गुणौत्तरै रावरणै रावृते आधार शक्ति श्री कूर्म वराह धर्मानन्ताष्ट दिग्गजादि प्रतिष्ठिते ऐरावत पुण्डरीक वामन कुमुदांजन पुष्पदन्त सार्वभौम सुप्रतीकाख्याष्ट दिग्दन्ति शुण्डा दण्डोत्तण्डिते तद् ब्रह्माण्ड खण्डयोऽरन्तर्गत भूर्लोक भुवर्लोक स्वर्लोक महर्लोक जनलोक तपोलोक सत्यलोकाख्यानां सर्वज्ञ सर्वशक्ति समन्वित सर्वोत्तम सर्वाधिप श्री चतुर्मुख प्रभृति स्वस्व लोकाधिष्ठात्तृ पुरुषाधिष्ठितानामधोभागे फणिराज राजस्य शेषस्य सहस्त्रफण मंडलै फणोपरि सर्षपैक कणाय मान मही मंडलान्तर्गत अतल वितल सुतल तलातल महातल रसातल पातालानां स्व स्वाधिष्ठानां धिष्ठितानां उपरितले सुमेरु मेरुमंदिर मंदराचल निषध हिम गिरि श्रृंग वद्धेम कूट दुर्धर्ष पारियात्र शैल महाशैल महेन्द्र सह्याद्रि मलयाचल विध्न्यर्ष्यमूक चित्रकूट मैनाक मानसोत्तर त्रिकूटोदयाचला- स्ताचल पर्यन्ता नेकाभिधानादि गणप्रतिष्ठतायां जम्बू प्लक्ष शाल्मली कुश क्रौंच शाक पुष्कराख्य सप्तद्वीपवत्यां लवणेक्षु सुरा सर्पिर्दधि क्षीर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शुद्धोदकाख्य सप्तसागर समन्वितायां समस्त भूरेखायां कमल कदंब गोलकारायां वर्तमाने कुवलय कोशान्र्तगत दल वद्विराजमाने उत्तर कुरु हिरणमय रम्यक भद्राश्व केतु मालेलावृत हरिवर्ष किम्पुरुष भारताख्य नव खंडवति जम्बूद्वीपे सर्वेभ्योऽय्यतिरिक्त सारवति देवादिभिरप्य भीष्ट सुकृत क्षेत्र भूत हेतु नाभिलषिततमे अंग वंग कलिंग काम्बोज सौवीर सौराष्ट्र महाराष्ट्र बंगाल उत्कल मगध मालव नेपाल केरल चोल गौड मल पांचाल सिंहल मत्स्य द्रविड़ कर्णाट राटव शूर सेन कौंकण टौंकण पाण्डय पुलिन्ध्रान्ध्र द्रौण दशार्ण विदेह विदर्भ मैथिल केकय कौशल कुन्तल सैन्धव जावल सार्वसिन्ध मद्र मध्य देश पर्वत काश्मीर पुष्ठाहार सिन्धु पारसिक गांधार बाह्लीक प्रभृति बहुविध देश विशेष सम्पन्ने दण्डकारण्य महारण्य द्वैतारण्य कामुकारण्य सैन्धवारण्य प्रभृत्यनेकारण्य श्री गंगा यमुना सरस्वती गोदावरी नन्दा अल्कनन्दा कौशिकी नर्मदा सरयू कर्मनाशा चर्मण्वती क्षिप्रा वेत्रवती कावेरी फल्गु मार्कण्डेय रामगंगा असिगंगा वरुणा मोक्ष नदी नवला नदी शंखधारा हत्याहारिणीनदी भीमगंगा देवगंगा श्याम गंगा शतद्रु विपाशैरावती चन्द्रभागा वितस्ता सिंधु दृषद्वती प्रभृत्य नेकनद नदीवती कुरुक्षेत्र भास्कर प्रयाग क्षेत्र हरिद्वार क्षेत्र हरिप्रयागक्षेत्र माल क्षेत्रादि बहुक्षेत्रान्विते भारतखण्डे तत्रापि मध्यरेखा कुरुक्षेत्रादमुकदिग् भागे श्री श्वेतवाराह कल्पे वैवस्वत मन्वन्तरेऽष्टाविंशतितम कलियुगस्य प्रथम चरणे बौद्धावतारे श्रीमन्नृपतिविक्र

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मार्कसमयात् सम्वतसराणां समयेनाति क्रन्तानां षष्ट्यव्दानां मध्ये अनुकनाम संवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ अमुक-मासे अमुक पक्षे-अमुक वासरे-अमुक योगे-अमुक करणे-अमुक मुहूर्ते-अमुकस्थे सूर्य-चन्द्रे-भौमे-बुधे-गुरौ-शुक्र-शनौ-राहौ-केतो एवं गुण विशेष विशिष्ठायां अमुक गोत्रस्य-अमुक प्रवरस्य-अमुक शाखिनो-अमुक वेदाध्यायिनो-अमुक शर्मणः प्रपौत्राय, अमुक गोत्रस्य-अमुक प्रवरस्य अमुकशाखिनो-अमुक वेदाध्यायिनो-अमुकशर्मण पौत्राय, अमुक गोत्रस्य अमुक प्रवरस्य अमुक शाखिनो अमुक वेदाध्यायिनो अमुक शर्मणः पुत्राय विष्णु स्वरूपिणे कन्यार्थिने अमुक शर्मणै वराय अमुक गोत्रस्य-अमुक प्रवरस्य अमुक शाखिनो अमुक वेदाध्यायिनो अमुक शर्मणः प्रपौत्रीम्, अमुक गोत्रस्य अमुक प्रवरस्य अमुक शाखिनो अमुक वेदाध्यायिनो अमुक शर्मणः पौत्रीम्, अमुक गोत्रस्य अमुक प्रवरस्य अमुकशाखिनो अमुक वेदाध्यायिनो अमुक शर्मणः पुत्रीम्, आयुष्मतीं श्री रूपिणी वरार्थिनीं अमुक नाम्नीइमां कन्यां यथाशक्त्य अलंकृतां यथा शक्त्युप-कल्पितयौतुक युतां प्रजापति देवतां मम पुराणोक्त शतगुणीकृत ज्योतिष्टोमाति रात्रीसमफलप्राप्तिपूर्वकं मम समस्त पितृणांनिरतिशयानन्द ब्रह्मलोका वाप्त्यादिफलावाप्ति पूर्वकं श्री लक्ष्मीनारायण प्रीतये च तथानेन वरेणास्या कन्यायां उत्पादयिष्यमाण सन्तत्या दश पूर्वान् दशपरान मां चैकविंशति पुरुषान् पवित्रीकर्तु देव अग्नि गुरु ब्राह्मण सन्निधौ अग्न्यादि साक्षिकतया सह धर्मचरणाय पत्नीत्वेन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ब्राह्मविवाह विधिना तुभ्यमहं सम्प्रददे। कन्या का पिता कन्या के अंगुष्ठ सहित शंख वर के हाथ में देवे, वर ग्रहण करे मंत्र कहे-**ॐ द्यौ स्त्वा ददातु पृथ्वी त्वा प्रतिगृह्णातु॥** वर कन्या का अंचली ग्रन्थी बन्धन भी आचार्य करवाले। कन्या दान लेकर वर कहे-**ॐ कोदात्कस्माऽअदात् कामोदात् कामायादात्। कामोदाता कामः प्रतिगृहीता कामैततै॥** वर पुनः कन्या के प्रति कहे-**ॐ यदेषि मनसा दूरं दिशोनुपवमानोवा हिरण्यपर्णो वैकर्णः। सत्वामन्मनसां करोतु॥** कन्या पिता वर से प्रार्थना कर ले-

ॐ कंन्या लक्षण सम्पन्नां कनका भरणैर्युतम्।
ददामि विष्णवेतुभ्यं ब्रह्मलोक जिगीषया॥१॥
ऋषयः सर्व भूतानां साक्षिणः सर्व देवता।
इमां कन्यां प्रदास्यामि पितॄणां ताराणाय च॥२॥

पुनः कन्या पिता कन्या से भी प्रार्थना करे-

कन्ये ममाग्रतो भूयाः कन्ये देवि पार्श्वयोः।
कन्ये मे पृष्ठतोभूया स्त्वदानान्मोक्षमाप्नुयाम्॥१॥
त्रैलोक्यनाथ देवेश सर्वभूर्त दयानिधे।
दानेनानेन मे प्रीतो भव शान्ति प्रयच्छ मे॥ २॥

पुनः कन्या पिता वर को कन्या अर्पण कर कहे-

धर्मे चार्थे च कामे च त्वयेय मति चारतः।
न त्याज्याऽज्याहुतिरिव भूमौ संसार भूतिदा॥

कन्या गृह भोजन विचार-

अप्रजायां तु कन्यायां न भुञ्जीत कदाचन।
दौहित्रस्य मुखं दृष्टवा किमर्थमनु शोचति॥ (मदनरत्ने)
विष्णु जामातरं मन्ये तस्य कोपं न कारयेत्।
अप्रजायां तु कन्यायां नाश्नीयात्त तस्य वै गृहे॥ (आदित्य पुराण)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यस्त्वया धर्मश्चरितः कर्तव्याश्चानया सह।
धर्मेचार्थे च कामे च नातिचार्या त्वयां क्वचित्॥

वर भी कन्या का हाथ ग्रहण करते हुए कहे-

धर्मार्थ कामकैः कार्येः देहच्छायैव सर्वदा।
अहं नाति चरामीह यदुक्तं भवता मयि॥

वर कन्यादान के ग्रहण प्रायश्चित रूप में गोमूल्य बराबर दक्षिणां ब्राह्मण को दे।

अद्यकृतैतद् कन्यादान ग्रहण प्रायश्चित निमित्यर्थ गोमूल्योपकल्पितं हिरण्यादि द्रव्यं अमुकगोत्रोत्पन्नाय ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे॥ ब्राह्मण वर कन्या दोनों पर पुष्प छोड़ दे-**ॐ मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णा सन्तु मनोरथाः। शत्रूणां बुद्धिनाशाय मित्राणामुदयस्तव॥**

देशाचार द्वारा सौभाग्यवती स्त्रियां कन्या को वर द्वारा लाये गये आभूषण आदि पहना देवे। कन्या दान हेतु अन्य सामग्री भी कन्या पिता कन्या हेतु दान कर देवे।

देशाचार द्वारा छोलिका दान-जिस स्त्री का पति व पुत्र जीवित हो वह कन्या के हाथ से कांस्यपात्र में रखे फल दक्षिणा ब्राह्मणों को पांच या सात बार देवे-**ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः बृहस्पतिप्रसूतास्तानो मुंचन्त्व ँ हसः ॥१॥** (ब्राह्मण को)**ॐ अन्नपते नस्य नोदेह्यनमीवस्य शुष्मिण। प्रप्रदातारं तारिष ऊर्ज नो धेहिद्विपदेशं चतुष्पदे॥२॥** (दूसरे ब्राह्मण को) **हिरण्यगर्भः समवर्त्त ताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥३॥** (तीसरे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ब्राह्मण को) **ॐ रूपेणवोरुपमभ्यागातुंथो वो विश्वेदेवा विभजेतु ऋतस्य पन्थाः प्रेत चन्द्रदक्षिणा विश्वः पश्यव्यन्तरिक्षं यतस्व सदस्यैः॥४॥** (कन्या को) **ॐयदश्वायवास उपस्तृणंत्यधीवासं या हिरण्यान्यस्मै संदानमर्वतंषड् वीशं प्रियोदेवेश्वायामयंति॥५॥** पांचवा फल दक्षिणा सहित सुवासिनी लेवे॥

वर कन्या अब वेदी के लिए प्रस्थान करे आचार्य विनियोग छोड़े-**ॐ यदैषीति अथर्वणऋषिः अनुष्टुप्छन्दोः दिग्देवता निष्क्रमणे विनियोगः॥ ॐ यदैषि मनसादूरं दिशोनुपमानोवा हिरण्यपर्णो वैकर्णः सत्वा मन्मनसां करोतु। श्री अमुकि देवीति पठन वरस्तां निष्क्रामति॥**

वर वधू परस्पर निरिक्षण-कन्या का पिता कन्या से वर को तथा वर से कन्या को देखने के लिए कहे कन्या को देखते हुए वर निम्न मंत्र बोले-विनियोग व मंत्र

अघोर चक्षुरित्यादि चतुर्णां मंत्राणां प्रजापतिऋषित्रिष्टुप निष्टुप् छन्दांसी कुमारी देवता परस्परनिरीक्षणे विनियोगः॥ ॐ अघोर चक्षुरपतिघ्नेधि शिवा पशुभ्यः सुमनाः सुवर्चाः।

वीर सूर्द्देवकामा स्योना शन्नोभव द्विपदे शं चतुष्पदे॥१॥
ॐ सोमः प्रथमोविविदे गन्धर्वो विविद उत्तरः।
तृतीयो अग्निष्टे पतिस्तुरीयस्तेमनुष्य जाः॥२॥
ॐ सोमो ददद्ग न्धर्वाय गन्धर्वोददग्नये।
रयिं च पुत्राँश्चादादग्नीर्मह्यमथोऽमाम्॥३॥
सा नः पूषा शिवतमामैरयसान उरुउशतीविहर।
यस्यामुशंतः प्रहराम शेषंयस्यामुकामो बहवोनिविष्टये॥४॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वर वधू परस्पर निरिक्षण कर षोडश स्तंभो की परिक्रमा कर वर दक्षिण पैर वेदी के ऊपर रखे वधू को दक्षिण की ओर बैठावे[१] और फिर स्वयं भी बांये बैठ जावे। वेदी से दक्षिण दिशा में जलभरे पंचपल्लव युक्त कलश को लेकर एक ब्राह्मण खड़ा हो जावे तथा मार्जन करे, मार्जन के समय तक मौन रहे।

कुश कण्डिका करणम्-वर रोली चावल कलावा पुष्प व दक्षिणा पान रखकर संकल्प करे-**ॐ अद्यैत्यादि० मासानां मासोत्तमे मासे अमुकगोत्रोऽहं अमुक शर्माऽहमद्य कर्तव्य विवाह होम कर्मणि कृताऽकृतावेक्षणरूप ब्रह्मकर्म कर्तुममुकगोत्रममुक शर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्प चन्दन ताम्बूल वासोभिर्बह्मत्वेन होतृत्वेन च त्वामहं वृणे॥**

वर कलावे को ब्राह्मण के हाथ में बांध तिलक कर दे। **ब्राह्मण बृतोस्मि** कहे।

ततोऽग्नेर्दक्षिणतः शुद्धमासन दत्वा तदुपरि प्राग्रगान कुशानास्तीर्य अग्नि से दक्षिण में ब्रह्मा[२] के लिए पत्ते का आसन देकर पूर्वमुह कुशा धरे।

ब्राह्मणमग्नि प्रदक्षिणक्रमेणानीय अत्र त्वं मे ब्रह्मा भवेत्यभिधाय कल्पितासने समुपवेशयेत्॥ पचास कुशाओं

१- सीमन्ते च विवाहे च तथा चातुर्थ्य कर्मणि।
मखेदाने व्रते श्राद्धे पत्नि दक्षिणतो भवेत्॥
व्रतबन्धे विवाहे च चतुर्थी सहभोजनै।
ब्रत-दाने मखे श्राद्धे पत्नी तिष्ठति दक्षिणे॥

२. दक्षिणे दानवा प्रोक्ता पिशाचोरग राक्षसाः।
तेषां संरक्षणार्थाय ब्रह्मा तिष्ठति दक्षिणे॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

का ब्रह्मा बनाकर अग्नि की प्रदक्षिणा कराके पत्ते का जो आसन धरा है उसके ऊपर उत्तर मुह रख दे।

ततः प्रणीता पात्रं पुरतः कृत्वा वारिणापरिपूर्य कुशैराछाद्य ब्रह्मणो मुखमवलोक्य अग्नेरुत्तरतः कुशोपरि निदद्यात्।

प्रणीतापात्र में जल भरे उसे दो कुशाओं से ढक ब्रह्मा की तरफ देखकर अग्नि से उत्तर एक कुशा के ऊपर प्रणीता पात्र रखे।

ततः बर्हि परिस्तरणम्[1]। वेदी के चारों ओर कुशा धरे।

बर्हिषश्चतुर्भागमादाय। कुशाओं के चौथो भाग को लेकर पहला भाग-

आग्नेयादीशानान्तम्। अग्नि से ईशान तक पहला भाग धरे।

ब्रह्माणोऽग्निपर्यन्तम्। दूसरा भाग ब्रह्मा से अग्नि तक धरे। **नैर्ऋत्याद् वायव्यान्तं।** नैऋत्य से वायव्य तक तीसरा भाग रखे। **अग्नितः प्रणीता पर्यन्तम्।** चौथा भाग अग्नि से प्रणीता पात्र तक रखे। **ततोऽअग्नेरुत्तरतः पश्चिम दिशि पवित्रछेदनार्थं कुशत्रयम्।**

अग्नि से उत्तर की तरफ पश्चिम दिशा में तीन कुशा पवित्र छेदन के लिए धरे।

पवित्र करणार्थं साग्रमनन्तर्गर्भं कुशपत्र द्वयम्। तीन कुशा के बीच की कुशा निकालकर दो पत्रोंवाली कुशा वेदी के उत्तर में पवित्री बनाने के लिए धरे। **प्रोक्षणी पात्रम्।** उत्तर

---

१. कृमी कीट पतंगाश्च विचरन्ति महीतले।
तेषां संरक्षणार्थाय परिसमूह रेति क्रीयते॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

में एक पात्र प्रोक्षणी के लिए धरे। **आज्यस्थाली।** एक पात्र में घी। **सम्मार्जनार्थ कुशत्रयम्।** तीन कुशाये वेदी के उत्तर में मार्जन के लिए धरे **उपयमनार्थं[1] वेणीरूप कुशत्रयम्।** उपयमन के लिए बटकर तीन कुशा धरे।

प्रादेशमात्रं समिधस्तिस्त्रः। प्रदेश मात्र परिमाण की तीन लकड़ी उत्तर में धरे। **षट्पंचाशदुत्तरवरमुष्टिशतद्वया-वच्छिन्नतण्डुल पूर्णपात्रम्।** एक पात्र में दो सौ छप्पन मुट्ठी चावल पूर्णपात्र धरे। **पवित्रच्छेदन कुशानां पूर्व पूर्व दिशिक्रमेणा सादनीयम्।**

पवित्रच्छेदन कुशाओं से पूर्व पूर्व दिशा में सब वस्तुयें रख दें।

तस्यामेव दिशि शमी पलास मिश्रा लाजाः। आम, ढाक या शमी की लकड़ी तथा लाजा धरे। **दृषदुपलम्** सिल। **कुमारी भ्राता** कुमारी भाई। **शूर्पः।** सूप। **दृढ़ पुरुषः** दृढ़ पुरुष **आलेपनादि द्रव्यम्।** लेपनादि वस्तु धरे।

ततः पवित्रच्छेदनकुशैः पवित्रे छित्वा प्रादेशमितं पवित्र करणम्।

दो कुशा के ऊपर तीन कुशा रखकर दो कुशाओं के मूल को घुमाकर तीन कुशाओं को तोड़कर दो कुशा को पवित्री बनावे तथा तीन कुशाओं को त्याग दे।

ततः सपवित्र करेण प्रणीतोदकं त्रीः प्रोक्षणीपात्रे निधाय। पवित्री सहित हाथ करके प्रणीता का जल तीन बार प्रोक्षणीपात्र में डाले।

१. उपयमन कुशा अग्नि नियन्त्रण के लिए बायें हाथ में रखते हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अनामिका अंगुष्ठाभ्यां उत्तराग्रे पवित्रंगृहित्वा त्रिरुत्पवनम्। अनामिका और अंगुठे में पवित्री पकड़कर प्रोक्षणी के जल को तीन बार उछाले। **प्रणीतोदकेन त्रिः प्रोक्षणीप्रोक्षणम्।** प्रणीता के जल को तीन बार प्रोक्षणी पात्र में डाले। **ततः प्रोक्षणी जलेन यथा सादितवस्तुसिंचनम्।** पवित्री से प्रोक्षणी पात्र के जल का सब वस्तुओं पर छींटा लगावें। **ततोऽग्निप्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणी पात्रं निधाय, आज्यस्थाल्यामाज्य निर्वापः।** अग्नि और प्रणीतापात्र के बीच में प्रोक्षणी पात्र को रखकर घी के कटोरे में घी रखकर देख ले कि कोई अशुद्ध वस्तु न पड़ी हो। **ततोऽधिश्रयणम्।** घी का कटोरा अग्नि पर रखे। **ततोज्वल तृणादिना हविर्विष्टयित्वा प्रदक्षिणा क्रमेण वह्नो तत्प्रक्षेपः।** एक तृण जलाकर वेदी व घृत के चारों ओर दाहिनी ओर घुमाकर अग्नि में डाल दे। **पर्यग्निकरणम्।** अग्नि जला दे। **ततः श्रुवप्रतपनं कृत्वा संमार्जन कुशानामग्रैरन्तरतो मूलैबार्ह्यतः।** श्रुव को अग्नि में तपाकर संमार्जन कुशाओं को लेकर अग्र मध्य मूल से श्रुव के आदि मध्य और अन्त में लगावे। **श्रुवं संमृज्य प्रणीतोदकेना भ्युक्ष, पुनः प्रतप्य दक्षिणतो निदध्यात्।** फिर श्रुव को तपाकर कुशा के ऊपर दक्षिण में धरे। **ततः आज्यस्याग्नेरवतारणम्, आज्यस्य प्रोक्षणीवदुत्पवनम्, अवेक्ष्य अपद्रवे तन्निरसनम्।**

घी के पात्र को अग्नि से निकाल कर तीन बार उछाल ले कोई अशुद्ध वस्तु पड़ी हो निकाल लें।

ततः उपयमनकुशान्वाम हस्तेनादाय, उतिष्ठन् प्रजापति मनसा ध्यात्वा तूष्णीमग्नौ घृताक्ताः समिधस्तिस्त्र क्षिपेत्।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उपयमन कुशा को बांये हाथ में रख उठकर मन में प्रजापति का ध्यान कर चुपचाप तीन समिधाओं को धी से भिगोकर अग्नि में छोड़ दे। **ततः उपविश्य सपवित्रः।** कर्मकर्त्ता कुशा को लेकर बैठ जाय। **प्रोक्षण्युदकेनप्रदक्षिणक्रमेणग्निपर्युक्षणं कृत्वा प्रणीता पात्रे निधाय।** प्रोक्षणी के जल का पवित्री से अग्नि के चारों तरफ छींटा लगाकर पवित्री प्रणीता पात्र में धरे। **पातित दक्षिण जानुः कुशेन ब्रह्मणान्वारब्धः समिद्धतमेऽग्नो श्रुवेणऽज्याहुती र्जुहुयात्।** कर्मकर्ता दाहिना घुटना मोड ब्रह्मा का कुशा द्वारा स्पर्श कर प्रज्वलित अग्नि में शंख मुद्रा द्वारा श्रुवा से घी की आहुति देवे।

हवन में जहां-जहां 'इदं' शब्द का प्रयोग आये वहां श्रुव के शेष घृत को प्रोक्षणी पात्र में डाल दें।

'हवन'

ॐ प्रजापतये स्वाहा (मनसे) इदं प्रजापतये न ममः।

आधार[१] आहुति-**ॐ इन्द्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय नम ममः।**

आज्यभाग आहुति-**ॐ अग्नये स्वाहा। इदमग्नये न मम।**

ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय न मम।

आचार्य- **योजकनाम्ने वैश्वानराय नमः।** से अग्नि का पूजन कर पुनः हवन करवाये।

१. अग्नी की शरीर संज्ञा-
आधारो नासिके ज्ञेया आज्य भागौ तु चक्षुसो।
वक्रोदरे कटिश्चैव तिस्त्रे व्याहृत क्रमात्।।
ततौ हस्तौ च पादौ च वह्नेस्याद् पंचवारुणम्।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

महाव्याहृति होम-

ॐ भूः स्वाहा। इदमग्नये न मम।

ॐ भुवः स्वाहा। इदं वायवे न मम।

ॐ स्वः स्वाहा। इदं सूर्याय न मम।

प्रायश्चित होम-ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडोऽअवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वाद्वेषां ᳬ सि प्र मुमुग्ध्यस्मत्। स्वाहा॥१॥

ॐ सत्वन्नोऽग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठोऽ अस्या उषसो व्युष्टौ। अव यक्ष्व नो वरुण ᳬ रराणो विहि मृडीकं सुहवोनऽएधि। स्वाहा॥२॥

ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्व मयाअसि। अयानो यज्ञं वहास्य धेहिं भेषजᳬ स्वाहा॥३॥

ॐ ये ते शतं वरुणः ये सहस्त्र यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। ते भिर्न्नोऽअद्यसवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा॥४॥ ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्म दवाधमं वि मध्यम ᳬ श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसोऽअदितये स्याम स्वाहा॥५॥

आहुति के शेष श्रुव घी को प्रोक्षणी पात्र में न डाले तथा ब्रह्मा तक मिली हुई कुशा भी हटा लें।

ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये।

ॐ अग्नये स्वाहा। इदं अग्नयेस्विष्टकृते।

यह दो आहुति देकर जल स्पर्श कर लें।

राष्ट्रभृत होम-

ॐ ऋताषाड्ऋतधामाग्निर्गन्धर्व्वः। स न ऽइदंब्रह्म क्षत्रं पातु

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तस्मै स्वाहा वाट्। इदमृतासाहे ऋतधाम्ने अग्नयेगंधर्वाय॥१॥ ॐ ऋताषाड्ऋतधामाग्निगंधर्व्व स्तस्यौषधयोऽप्सरसो मुदोनाम। ताभ्यः स्वाहा॥ इदमोषधीभ्योऽप्सरोभ्योमुद्भ्योन मम॥२॥

ॐ स ᳪ हितो विश्वसामा सूर्य्यो गन्धर्वः सनऽ इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट्॥ इद स ᳪ हिताय विश्वसाम्ने सूर्याय गन्धर्वाय न मम॥३॥ ॐ स ᳪ हितो विश्वसाम्ने सूर्यो गन्धर्वस्तस्य मरीचयोऽप्सरसऽआयुवो नाम ताभ्यः स्वाहा। इदं मरीचिभ्योऽप्सरोभ्य आयुभ्यो न मम॥४॥ ॐ सुषुम्णः सूर्य रश्मिश्चन्द्रमा गन्धर्वः सनऽ इदंब्रह्म क्षत्रंपातुतस्मै स्वाहा वाट्॥ इदं सुषुम्णाय सूर्य्यरश्मये चन्द्रमसे गंधर्वाय न मम ॥५॥ ॐ सुषुम्णः सूर्य रश्मिश्चन्द्रमा गन्धर्वस्तस्य नक्षत्राण्यप्सरसो भेकुरयो नाम ताभ्यः स्वाहा। इदं नक्षत्रेभ्योऽप्सरोभ्यो भेकुरिभ्यः न मम॥६॥ ॐ इषिरो विश्वव्यचा वातो गन्धर्वः सनऽ इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट्॥ इदमिषिराय विश्वव्यचसेवाताय गन्धर्वाय न मम॥७॥ ॐ इषिरो विश्वव्यचा वातो गन्धर्वस्तस्यापोऽप्सरस ऊर्ज्जोनाम ताभ्यः स्वाहा। इदमद्भ्योऽप्सरोभ्यः ऊर्ग्भ्यः न मम॥८॥ ॐ भुज्युः सुपर्णोः यज्ञो गन्धर्वः सन इदं ब्रह्मक्षत्रं पातुतस्मै स्वाहा वाट्॥ इदं भुज्यवे सुपर्णाय यज्ञाय गन्धर्वाय न मम॥९॥ ॐ भुज्युः सुपर्णो यज्ञो गन्धर्वस्तस्य दक्षिणा अप्सरसस्तावा नाम ताभ्यः स्वाहा॥ इदं दक्षिणाभ्योऽप्स-रोभ्यस्तावाभ्यो न मम॥१०॥ ॐ प्रजापति र्विश्वकर्मा मनोगन्धर्वः सन इदं ब्रह्म क्षत्रंपातु तस्मै। स्वाहा वाट्॥ इदं प्रजापतये विश्वकर्मणे मनसे गन्धर्वाय न मम॥११॥ ॐ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रजापतिर्विश्वकर्मामनो गन्धर्वस्तस्य ऋक्सामान्यऽप्सर-
सऽएष्टयो नाम ताभ्यः स्वाहा। इदं ऋक्सामेभ्योऽप्सरोभ्य
एष्टिभ्यो न ममः॥१२॥ इतिराष्ट्रभृद्धोमः।

जया होम-

ॐ चित्तं स्वाहा, इदं चित्ताय न मम ॥१॥
ॐ चित्तिश्च स्वाहा, इदं चित्यै न मम॥२॥
ॐ आकूतं च स्वाहा, इदं आकूताय न मम॥३॥
ॐ आकूतिश्च स्वाहा, इदं आकूत्यै न मम॥४॥
ॐ विज्ञातं च स्वाहा, इदं विज्ञाताय न मम॥५॥
ॐ विज्ञातिश्च स्वाहा, इदं विज्ञात्यै न मम॥६॥
ॐ मनश्च स्वाहा, इदं इदं मनसे न मम॥७॥
ॐ शक्वरीश्च स्वाहा, इदं शक्वरीभ्यो न मम॥८॥
ॐ दर्शश्च स्वाहा, इदं दर्शाय न मम॥९॥
ॐ पौर्णमासंच स्वाहा, इदं पौर्णमासाय न मम॥१०॥
ॐ बृहच्च स्वाहा, इदं बृहते न मम॥११॥
ॐ रथन्तरं च स्वाहा, इदं रथन्तराय न मम॥१२॥

ॐ प्रजापतिर्जयानिन्द्रायवृष्णे प्रायच्छदुग्रः पृतनाजयेषु। तस्मै
विशः समनमंत सर्वाः स ऽ उग्रः स ऽ इहव्यो बभूव स्वाहा॥
इदं प्रजापतये जयानिन्द्राय॥१३॥ इतिजया होमः॥

अभ्यातान होम- उदक स्पर्श कर हवन करें-

ॐ अग्निर्भूतानामधिपतिः समाऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्
क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्याम्। पुरोधांयामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या
ँ स्वाहा। इदमग्नये भूतानामधिपतये न मम॥१॥ ॐ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इन्द्रो जेष्ठानामधिपतिः समाऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायां मस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ॐ स्वाहा।। इदमिन्द्राय जेष्ठानामधिपतये न मम।।२।। ॐ यमः पृथिव्या ऽअधिपतिः समावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामा शिष्यस्यां पुरोधायांऽस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याॐ स्वाहा।। इदं यमाय पृथिव्याऽ अधिपतये न मम।।३।। प्रणीता के जल का स्पर्श कर लें।

ॐ वायु रन्तरिक्षस्याधिपतिः समाऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामा शिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ॐ स्वाहा।। इदं वायवे अन्तरिक्षस्याधिपतये न मम।।४।।

ॐ सूर्यो दिवा अधिपतिः समाऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामा शिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ॐ स्वाहा। इदं सूर्याय दिवाधिपतये न मम ।।५।। ॐ चन्द्रमा नक्षत्राणां अधिपतिः समाऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामा शिष्यस्यां पुरोधायामास्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ॐ स्वाहा।। इदं चन्द्रमसे नक्षत्राणामधिपतये न मम।।६।। ॐ बृहस्पति र्ब्रह्मणोऽधिपतिः समावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामा शिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ॐ स्वाहा।। इदं बृहस्पतये ब्रह्मणोऽधिपतये न मम।।७।। ॐ मित्रः सत्यानामधिपतिः समावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामा शिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ॐ स्वाहा।। इदं मित्राय सत्यानामधिपतये न मम।।८।। ॐ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वरुणोऽपामधिपतिः समाऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामा शिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ॐ स्वाहा इदं वरुणाय अपामधिपतये न मम॥९॥ ॐ समुद्र स्त्रोत्यानामधिपतिः समावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामा शिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ॐ स्वाहा॥ इदं समुद्राय स्त्रोतानामधिपतये न मम॥१०॥ ॐ अन्नं साम्राज्यानामधिपतिः समावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामा शिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ॐ स्वाहा। इदमन्नाय साम्राज्यानामधिपतये न मम ॥११॥ ॐ सोमऽओषधीनामधिपतिः समाऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामा शिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ॐ स्वाहा। इदं सोमाय ओषधिनामधिपतये न मम॥१२॥ ॐ सविता प्रसवानामधिपतिः समाऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामा शिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याॐ स्वाहा। इदं सवित्रे प्रसवानामधिपतये न मम॥१३॥ ॐ रुद्रः पशूनामधिपतिः समाऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामा शिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ॐ स्वाहा। इदं रुद्राय पशूनामधिपतये न मम॥१४॥ पुनः प्रणीता के जल का स्पर्श कर लें। ॐ त्वष्टा रूपाणामधिपतिः समाऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामा शिष्यस्यां पुरोध ायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ॐ स्वाहा। इदं त्वष्ट्रे रूपाणामधिपतये न मम॥१५॥ ॐ विष्णुः पर्वतानामधि पतिः समाऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रे स्यामा शिष्यस्यां

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ऽ॑ स्वाहा। इदं विष्णवे पर्वतानामधिपतये न मम॥१६॥ ॐ मरुतो गणनामधिपतय-स्तेनमावन्त्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामा शिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ऽ॑ स्वाहा॥ इदं मरुद्भ्यो गणनामधिपतिभ्यो न मम:॥१७॥ ॐ पितर: पितामहा: परेऽवरे ततास्ततामहा:। इह मा ऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधाया मस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ऽ॑ स्वाहा॥ इदं पितृभ्य: पितामहेभ्य: परेभ्योवरेभ्यस्ततामहेभ्यो न मम॥१८॥ पुन: प्रणीता के जल का स्पर्श कर लें॥

आज्यहोम-ॐ अग्निरैतु प्रथमो देवताना ऽ॑ सौऽस्यैप्रजां मुंचतु मृत्युपाशात्। तदय ऽ॑ राजावरुणोऽन्युमन्यतां यथेय ऽ॑ स्त्री पौत्रमघं न रोदात् स्वाहा। इदमग्नयेन मम॥१॥ ॐ इमामग्निस्त्रायतां गार्हपत्य: प्रजामस्यै नयतु दीर्घमायु: अशून्योपस्था जीवतामस्तु माता पौत्रमानन्दमविभि प्रबुध्यतामिय ऽ॑ स्वाहा। इदमग्नये न मम॥२॥ ॐ स्वस्ति नोऽअग्ने दिवा पृथिव्या विश्वानिधेह्ययथा यजत्रा। यदस्यां महि दिवि जातं प्रशस्तं तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् स्वाहा॥ इदमग्नये न मम॥३॥ ॐ सुगन्नु पंथां प्रदिशन्न एहि ज्योतिष्मध्ये ह्यजरन्नऽआयु:। अपैतुमृत्युरमृतन्न ऽ आगाद् वैवस्वतो नोऽअभयं कृणोतु स्वाहा। इदं वैवस्वताय न मम॥४॥ कन्या को परदे में कर के पांचवी आहुति देनी चाहिये क्योंकि यह आहुति मृत्युदेव[1] की है-ॐ परं

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मृत्योऽनुपरेहि पंथा यस्तेऽन्य इतरोदेवयानात्। चक्षुष्मते श्रृण्वते ते ब्रवीमि मानः प्रजा ँ रीरिषो मोतवीरान् स्वाहा।। इदम् मृत्यवे न मम।।५।। वस्त्र को हटाकर प्रणीता के जल का छींटा लगावें।

लाजा होम- कन्या को आगे वर को पीछे मुंह पूर्व कर वर की अंजली पर कन्या की अंजली रख कन्या का भाई कन्या की अंजली में घी मिश्रित शमीपलाश लाजा रख कन्या हवन करे विनियोग व मंत्र-

अर्यमणामित्यादिमंत्राणामाथर्वण ऋषिरनुष्टुछन्द अर्यमा देवता लाजा होमे विनियोगः।। प्रथम आहुति

ॐ अर्यमणं देव कन्या अग्निमयक्षत। सनोऽअर्यमा देवः प्रेतो मुञ्चतु मा पतेः स्वाहा। इदमर्यम्णे नमम।।१।।

दूसरी आहुति-**ॐ इदं नार्य्यूपब्रूते लाजानावपन्तिका। आयुष्मानस्तु मे पतिरेधन्ता ज्ञातयो मम स्वाहा।। इदमग्नये न मम।।** तीसरी आहुति-**ॐ इमांलाजानावपाम्यग्नो समृद्धिकरणं तव। मम तुभ्यं च संवननं तदग्निरनुन्यतामिय ँ स्वाहा। इदमग्नये न मम।।**

वध्वङ्गुष्ठग्रहण- अब वर वधु के दाहिने हाथ का अंगूठा अपने दाहिने हाथ से पकड़कर चार मंत्र पढ़े। विनियोग व मंत्र- **गृभ्णामिति चतुर्णां मंत्राणां याज्ञवल्क्य**

---

१. अन्तर्पट- रौद्री पैत्र तथा मृत्योः इति कारिकायां दोषः श्रवणाद् वर वधू वस्त्रेणान्तर्धाय मनसा मंत्र पठन् मृत्येव जुहोति।।

अर्थात्- रुद, पिता, और मृत्यु समन्धि मंत्र वधू के साथ ऊंचे स्वर से पढ़ने का दोष कारिका में लिखा है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भारद्वाजाथर्वण प्रजापतयो ऋषयस्त्रिष्टुबुष्णिगनुष्टुप्छन्दांसि भगार्यमसवितृपुरंध्रयो देवता अंगुष्ठ ग्रहणे विनियोगः॥ ॐ गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं मया पत्या जरदष्टिर्यथाऽसः। भगोऽअर्यमा सविता पुरन्धिमर्म्मह्यन्त्वा दुर्गार्हपत्याय देवाः॥ ॐ अमोऽहमस्मि सात्व ॐ सा त्वमस्यमोऽअहम्। सामाहमस्मि ऋक त्वं द्यौरहं पृथिवी त्वं ॥२॥ ॐ तावेव विवहावहै सहरेतोदधावहै प्रजांप्रजनयावहै पुत्रान् विन्दाव है बहून् ॥३॥ ते सनतुजरदष्टयः संप्रियौ रोचिष्णू सुमनस्यमानौ। पश्येम शरदः शतंजीवेम शरदः शत ॐ श्रुणुयाम शरदः शतम् ॥४॥

अश्मारोहण-कन्या उत्तर में रखे हुए पत्थर पर अपना दक्षिण पैर का अंगुठा रखे मुह पूर्व करे वर दक्षिण हाथ से कन्या के दक्षिण अंगुष्ठ का स्पर्श बांये हाथ से कन्या का वाम स्कंद का स्पर्श करे। विनियोग व मंत्र-**आरोहे मम श्मानमश्मेवत्व ॐ स्थिरा भव। अभितिष्ठपृतन्यतोऽवबाध स्वपृत नायतः॥** कन्या इस तरह खड़ी रहे वर पतिव्रतादियों के यश का गान करे- विनियोग व मंत्र-

गाथा-सरस्वतीति विश्वावसुऋषिरनुष्टुछन्दः सरस्वती देवता गाथागाने विनियोगः॥ ॐ सरस्वति प्रेदमव सुभगे वाजिनीवति। यां त्वा विश्वस्य भूतस्य प्रजायामस्याग्रतः॥ यस्याभूतं ॐ समभवद्यस्यां विश्वमिदं जगत् तामद्य गाथां गास्यामि या स्त्रीणामुत्तमं यशः॥

परिक्रमा-पहले तीन परिक्रमाओं में वर पीछे कन्या आगे[1]

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चौथी परिक्रमा में वर आगे कन्या पीछे ब्रह्मा तथा प्रणीता सहित अग्नि की इस मंत्र से परिक्रमा करे। विनियोग व मंत्र-

तुभ्यमग्नेइत्याथर्वणऋषिः अनुष्टुप्छन्दः अग्निर्देवता अग्निपरिक्रमणे विनियोगः। ॐ तुभ्यमग्नेपर्यवहन् सूर्यांवहतुनासह पुनः पतिभ्यो जायांदाग्ने प्रजयासह॥ इस प्रकार अग्नि के पश्चिम से तीन बार लाजाहोम अंगुष्ट, सहित हस्तग्रहण, शिला पर स्थिर करना, गाथा गाना, अग्नि की प्रदक्षिणा करना तीन बार करें तीसरी परिक्रमा के बाद शेष बची हुई खील भाई के देने पर कन्या-**भगाय स्वाहा।** मंत्र से होम कर दें। **इदं भगाय न मम॥**

चौथी परिक्रमा में वर आगे कन्या पीछे चुपचाप परिक्रमा करे पुनः वर कन्या बैठकर **ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम॥** पुनः अन्य परिक्रमा कर लें।

सप्तपदी- अग्नि से उत्तर की दिशा में हल्दी, चावल आदि से उत्तरोत्तर सात मण्डलो का निर्माण करे इन मण्डलों पर कन्या के दक्षिण पैर के अंगूठे को मौली से बांधकर वर दाहिने हाथ से पकड़कर क्रमशः निम्नमंत्र बोले, कन्या मण्डल पर दक्षिण अंगूठा रखे। वर बोले-

ॐ एकमिषे विष्णुस्त्वानयतु॥१॥
ॐ द्वे ऊर्ज्जे विष्णुस्त्वा नयतु॥२॥

---

१. कामस्त्वमोघबाणैः स्वै प्रहरेदति दारुणैः।
तस्मादग्रे भवेत् कन्या बाण भीति प्रशान्तये॥
कन्यकाग्रे वरं कृत्वा ब्राह्मणो ज्ञान दुर्बल।
विधवा जायते नारी निषेधस्ते न हेतुना॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ त्रीणि रायस्पोषाय विष्णुस्त्वानयतु।।३।।
ॐ चत्वारिमयोभुवाय विष्णुस्त्वा नयतु।।४।।
ॐ पंच पशुभ्यो विष्णुस्त्वा नयतु।।५।।
ॐ षड़ऋतुभ्यो विष्णुस्त्वा नयतु।।६।।
ॐ सखे सप्तपदी भव सा मामनुव्रताभव
विष्णुस्त्वा नयतु।।७।।

कन्या की सप्तपदी[१]-

धनधान्यं च मिष्ठान व्यञ्जनाद्यं च यद्‌गृहे।।
मदधीनं च कर्तव्यं वधूराद्ये पदे वदेत्।।१।।
कुटुम्ब पालयिस्यामि ते सदा मंजुभाषिणी।
यथालब्धेन सन्तुष्टा ब्रतू कन्या द्वितीय के ।।२।।
पतिभक्तिरता नित्यं क्रीडयामि त्वया सह।
नाहं परंपतिं यायां तृतीये सा ब्रवीद्वचः।।३।।
लालयामि सुकेशांते गन्धमाल्यान्नु लेपनै।
कांचनैभूषणैस्तुभ्यं तुरीयेषा पदे वदेत्।।४।।
आर्ते आर्ता भविष्यामि सुख दुःख विभागिनी।
तवाज्ञां पालयिष्यामि पंचमेतद् ब्रवीम्यहम्।।५।।
यज्ञे होमे च दानादौ भवेयं तव वामतः।
यत्रत्वं तत्र तिष्ठामि वधू षष्ठे पदे वदेत्।।६।।
सर्वेच साक्षिणस्त्वं मे पति भूतोऽसिसाम्प्रतम्।
देहोमयार्पितंस्तुभ्यं सप्तमेसा वदेत् पदे।।७।।

१. स्वगोत्राद् भ्रश्यते नारी विवाहात् सप्तमे पदे।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दृढ़पुरुष निम्न मंत्रों से वर वधू का अभिषेक पंचपल्लव से करे-विनियोग व मंत्र-**आप इतिप्रजापतित्रृषिर्यजुश्च्छन्दः आपो देवता वरवधू मूर्धाभिषेचने विनियोगः॥ ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शांता शान्ततमातास्ते कृण्वन्तुभेषजम्॥१॥ ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्ज्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे॥ योवः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेहनः। उशतीरिव मातरः। तस्माऽअरङ्गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः॥२॥**

सूर्य ध्रुव दर्शनः-यदि विवाह दिन में हो तो सूर्य तथा रात्री में हो तो वर कन्या को आचार्य ध्रुव के दर्शन करा दे। विनियोग व मंत्र-

तच्चक्षुरिति दध्यङ्ङाथर्वणत्रृषिर्ब्राह्मी त्रिष्टुप् उष्णिक् छन्दः सूर्यो देवता सूर्योदीक्षणे विनियोगः॥ ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत ँ श्रृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शत मदीनाः श्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्॥

ध्रुव दर्शन- **ध्रुव मसीति प्रजापतित्रृषिः पक्ति छन्दः ध्रुवोदेवता दीक्षणे विनियोगः॥ ॐ ध्रुवमसि ध्रुवं त्वा पश्यामि ध्रुवेधि पोष्ये मयिमह्यं त्वादात्। बृहस्पतिर्मया पत्या प्रजावती संजीव शरदशतम्॥**

वर वधू के दाहिने कंधे पर अपना दाहिना हाथ ले जाकर निम्न मंत्रो को बोलते हुए स्पर्श करे। विनियोग व मंत्र-

ममव्रतेत इति प्रजापतित्रृषि स्त्रिष्टुपछन्दः प्रजापतिर्देवता

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वधू हृदयालंभने विनियोगः।। ॐ ममब्रतेते हृदयंदधामि। मम चित्तमनुचित्त ते अस्तु ममवाचमेकमना जुषस्वप्रजापतिष्ट्वानियुनक्तु मह्यम्।।

कन्या परिणीता तब मानी जाती है जब वामाङ्ग में बैठे इसलिए वर वधू से वामाङ्ग[1] में बैठने के लिए कहता है-

स्त्रीणा स्थितिर्वाम पार्श्वे कथं त्वं दक्षिणे स्थिता।
मया विवाहिता दत्ता तव पित्रा च बन्धुभिः।।१।।
उतिष्ठ वाम भागं मे पत्निभावं भज प्रिये।
यतकिंचित्तव चित्तेऽस्मि तद् वदस्व ममाग्रतः।।२।।

कन्या का प्रत्युत्तर-

तीर्थ व्रतोद्यापन यज्ञदानं मया सहत्वं यदि किन्न कुर्याः।
वामांगमायामि तदात्वदीयं नत्वन्यथा दक्षिणपार्श्वतोहम्।।१।।
हव्यप्रदानैरमरान् पितृंश्च कव्यप्रदानैर्यदि पूजयेथा।
वामांगमायामि तदात्वदीयं नत्वन्यथादक्षिणपार्श्वतोहम्।।२।।
कुटुम्ब रक्षा भरणेयदि त्वं कुर्यात् पशूनां परिपालनं च।
वामाङ्गमायामि तदा त्वदीयं नत्वन्यथा दक्षिण पार्श्वतोहम्।।३।।
आयव्ययौ धान्य धना दिकानां पृष्टवा निवेशंच गृहेनिदध्याः।
वामाङ्ग मायामि तदा त्वदीयं न त्वन्यथा दक्षिण पार्श्व तोहम्।।४।।
देवालयाराम तडाग कूप वापिर्विदध्याः यदि पूजयेथा।
वामाङ्गमायामि तदात्वदीयं नत्वन्यथा दक्षिण पार्श्व तोहम्।।५।।
देशान्तरे वा स्वपुरान्तरे वा यदा विदध्याः क्रयविक्रयोत्वम्।

१. मण्डपं मधुपर्कं च लाजा होम स्तथैव च।
यावत् कन्या न वामांगे तावत् कन्या कुमारिका।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वामाग्रमायामि तदा त्वदीयं नत्वन्यथा दक्षिणपार्श्वतोहम्।।६।।
न सेवनीया परपारकीया त्वया भवोद्भवनिकामिनीति।
वामाङ्गमायामि तदा त्वदीयं न त्वन्यथा दक्षिणापार्श्वतोहम्।।७।।

वर कन्या को अपनी स्वीकृति प्रदान करें।

वर का प्रत्युत्तर-

मदीय चित्तानुगतं च चित्तं सदा ममाज्ञापरिपालनं च।
पतिव्रताधर्म परायणा त्वं कुर्याः सदा सर्वमिमं प्रयत्नम्।।१।।
आदौ धर्म परायणा च सुखदा तथ्यप्रिया भाषिणी।
क्रीधालस्य विवर्जिता सुखकरी नित्यवचः कारिणी।।२।।
पित्रोर्मेऽपचितौरथाथ भगिनी प्रेमार्द्र चित्तातथा।
चैवं सैवगुणादि भूषित तनुः पाल्याभवित्रि मम।।३।।
उद्याने मद्यपस्थाने गमनं। च परालये।
परपुरुषां रतिगीर्तं हास्य वर्ज्यं त्वया सदा।।४।।
अन्तर्गेहे स्थितानित्यं सुखदुखानु भागिनी।
यदा तिष्ठति भद्रे त्वं पालनीया सदा मम।।५।।
द्वारोपवेशनं नित्यं गवाक्षेण निरिक्षणम्।
असत् प्रलापोहास्यं च दूषणं कुल योषिताम्।।६।।
पानं दुर्जन संसर्गः पत्या च विरहोठनम्।
स्वप्नोह्नि गेहे वासश्च नारी संदूषणा निषट्।।७।।
अग्नि नारायणः साक्षी ब्राह्मणः ज्ञाति बान्धवाः।।
पंचम ध्रुवमालोक्य स साक्षित्वमुपागताः।।८।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बिना पत्नि कथं धर्म आश्रमाणां प्रवर्त्तते।
तस्मात्वं मम विश्वाता भव वामांग भागिनी॥९॥

मंत्र-**इहेतिप्रजापतिर्ऋषिरनुष्टुप्छन्दो लिंगोक्ता देवता वधूपवेशने विनियोगः॥ ॐ इहगावो निषीदत्विहाश्वा इहं पुरुषाः इहो सहस्त्रदक्षिणो यज्ञऽइह पूषा निषीदतु॥**

वधू को सिन्दूर दान- वर दाहिने हाथ से वधू की मांग में सिन्दूर दे। विनियोग व मंत्र-**सुमंगलीरिति प्रजापतिर्ऋषि-रनुष्टुप्छन्दो लिङ्गोक्ता देवता वध्वभिमंत्रणे विनियोगः॥ ॐ सुमंगलीरियं वधूरिमा ॐ समेत पश्यत। सौभाग्यमस्यै दत्वा यथास्तं विपरेतन॥** इसके पश्चात् देशाचार द्वारा दधि गुड़ प्राशन तेलमार्जन कर पुनः ब्रह्मा से अन्वारब्ध कर श्रुव से घी की आहुति दें-**ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा। इदमग्नये स्विष्टकृते न मम॥**

हवन के बाद श्रुव के शेष धृत को प्रोक्षणी पात्र में डालकर आचमन कर लें। हुत शेष के धृत का वर कन्या प्राशन्न कर लें।

पूर्णपात्र दान-कार्य में कमी की पूर्ति के लिए ब्रह्मा के लिए पूर्णपात्र (चावल, चीनी, घी से भरे पात्र) का संकल्प-**ॐ अद्यकृतैतद् विवाह होम कर्मणि कृताऽकृतावेक्षण रूप कर्म प्रतिष्ठार्थ इदं पूर्ण पात्रं सदक्षिणाकं प्रजापति दैवतम् अमुकगोत्रायाऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे॥ ॐ स्वस्ति॥** ऐसा ब्रह्मा कहे इस प्रकार संकल्प कर आचार्य को भी दक्षिणा दे तथा अन्य ब्राह्मणों को भी दक्षिणा से कर्ता

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

संतुष्ट करें।

प्रणीता विमोक-कुश निर्मित ब्रह्मा की ग्रन्थी खोलकर ब्राह्मण प्रणीता पात्र को बांये हाथ में लेकर पवित्री से वर वधू तथा यजमान को सपत्नीक मस्तक पर नीचे लिखे मंत्रों से अभिषेक करें। **ॐ सुमित्रिया न आपः ओषधयः सन्तु। दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तुयोऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः॥**

प्रणीता पात्र को ईशान कोण में उलट दें-

वर्हिहोम-वेदी के चारों ओर विछाई गई कुशा को घी में भिगोकर निम्न मंत्र से हवन कर दे-**ॐ देवागातु विदोगातु वित्वागातु मित मनस्पत इमं देवयज्ञ ँ स्वाहा वातेधाः स्वाहा। इदं वाताय॥**

त्र्यायुषकरण-श्रुव से भस्म निकालकर अनामिका से भस्म धारण करने का मंत्र-**ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः** ललाट पर। **ॐ कश्यपश्य त्र्यायुषम्।** गले पर। **ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम्** दक्षिणबाहू मूल में। **ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्॥** हृदय पर भस्म धारण करें।

आचार्य वर कन्या को तिलक आशीर्वाद देकर वर वधू से देवताओं का विसर्जन करा दें।

देवता विसर्जन मंत्र-

ॐ गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थानं परमेश्वर।
यत्र ब्रह्मा दयोदेवास्तत्र गच्छ हुताशन॥१॥

विवाहादि क्रियायांच शालायां वास्तु पूजने।
नित्यहोमे बृषोत्सर्गे पूर्णाहुति न कारयेत्॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम्।
इष्ट काम समृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च॥२॥
प्रमादात कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेवतद् विष्णोः सम्पूर्णस्यादिति श्रुतिः॥३॥
यस्यस्मृत्या व नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां यातु सद्यौवन्दे तमच्युतम्॥४॥

देशाचार- इस अवसर पर चतुर्थो कर्म, गौदान, मंगल पाठ शय्या दान यथाकुल देशाचार जहां-जहां के जैसे हों करने चाहिये।

॥शय्यादान संकल्प॥

शय्या[1] को सजा कर उसके पास वस्त्र बर्तन आदि रख कर वर कन्या उत्तर मुंह हो कर बैठे यजमान पूर्व की ओर शय्या के सिरहाने के पावे में कलावा बांधकर अपने दाहिने हाथ में कलावा जल चावल प्रतिष्ठा लेवे आचार्य संकल्प पढ़े-**ॐ अद्येत्यादि० मासानां मासोत्तमे मासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकगोत्रोऽहं अमुकशर्म्माहं श्रुति स्मृति पुराणोक्त फल प्राप्त्यर्थं आत्मनः कन्या विवाहे श्री लक्ष्मीनारायण प्रीत्यर्थं इमां शय्यां सोपस्करां धनवस्त्राभरणभूषितां धातुपात्रसहितां विविध सिद्धान्न सहितां प्रजापति देवतां रजत सुवर्णमणि भूषण भूषितां शय्या अमुक गोत्राय अमुकनाम्ने वराय सपत्निकाय तुभ्यमहं सम्प्रददे**

कलावा दक्षिणा सहित वर को देवें। वर कहे-

स्वस्तिति प्रतिवचनम्॥ विवाह होने के पश्चात जब

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बारात वर द्वार में पहुंचती है तब वहां पर भी गणेशादि पूजन आचार्य वर कन्या के हाथ से करवा ले। तथा देशाचार के कार्य भी आचार्य सम्पन्न करवाये।।

।।चतुर्थी कर्म।।

विवाह के चौथे दिन[१] वर और वधू स्नान कर रात्री के समय आसन के ऊपर पूर्व मुख होकर आचमन प्राणायाम कर शान्ति पाठ गणेश पूजन ग्रहादि पूजन आचार्य करवा ले तथा वर वधू से अग्नि स्थापन के लिए संकल्प करावे-

ॐ देशकालौ सङ्कीर्त्य अमुक गोत्रोहं अमुकशर्म्माहं सपत्नीकोऽहं मम अस्याभार्यायाः सोमगन्धर्वान्ऽग्न्युपभुक्त दोष परिहारार्थ विवाह व्रतसमाप्ति विहितं विवाहा-च्चतुर्थ्यामपररात्रे चतुर्थीकर्म करिष्ये। पुनः जल अक्षत लेकर-

अस्मिन् चतुर्थी कर्मणि पञ्च भू संस्कारपूर्वकम् अग्नि स्थापनं च करिष्ये।

अग्नि स्थापन के लिए एक चौकोर वेदी का निर्माण कर उसे कुशा के द्वारा साफ करे-**हस्त परिमितां चतुरस्त्रां वेदीं कुशैः परिसमूह्य।** गोबर से वेदी लीपकर स्रुवा से तीन रेखा खींचकर अनामिका और अंगूठे के द्वारा मिट्टी हटाकर पुनः जल छिड़क लें-**गोमयोदकेनोपलिप्य स्त्रुवमूलेनोत्तरोत्तर क्रमणे त्रिरुलिख्य अनामिकाङ्गुष्ठाभ्यांमृदमुद्धृत्य जलेनाऽभ्युक्ष्य।** अग्नि का पूजन निम्न मंत्र से कर लेवे-**ॐ**

---

१. कन्यार्थे कनकं धेनु दासी रथ मही गृहाः।
महिष्य श्‍व गजाशय्या महादानानि वै दशः।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अग्निं दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवाँ आसादयादिह॥

वर हाथ में जल पुष्प अक्षत तथा वरण सामग्री लेकर ब्रह्मा का वरण कर सामग्री दे दे।

ॐ अद्येत्यादि० देशकालौ सङ्कीर्त्य, अस्यां रात्रौ कर्त्तव्य चतुर्थीहोम कर्मणि कृताऽकृताऽवेक्षणरूप ब्रह्मकर्मकर्तुम् अमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणम् एभिः पुष्प-चन्दन-ताम्बूल वासोभिर्ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे। ब्रह्मा कहे-**वृतोऽस्मि** पुनः वर ब्रह्मा से कहे- **यथाविहितं कर्म कुरु।** ब्रह्मा भी कहे-**यथाज्ञानं करवाणि।** अब आचार्य पूर्व लिखित रीति से कुशकण्डी करावे तदन्तर नीचे लिखे मंत्रों से आहुति दे-

ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये, (इतिमनसा)

ॐ इन्द्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय (इत्याधारौ)

ॐ अग्नये स्वाहा। इदमग्नये।

ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय। (इत्याज्यभागौ)

अब घी की पांच आहुतियों में स्थालीपाक (हलवा) की आहुति देने के बाद श्रुवे में बचे हुए धृत को प्रोक्षणी पात्र में डालें-

ॐ अग्ने प्रायश्चिते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि। ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामि या ऽस्यै पतिघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा॥ इदमग्नये ॥१॥ ॐ वायो

चतुर्थी कर्म आवश्यकता-

अप्रदानाद भवेत् कन्या प्रदानान्तरं वधूः।
पाणीग्रहे तु पत्नीस्याद् भार्या चतुर्थी कर्म्मणि॥
चतुरशीति दोषाणि कन्या देहेतु यानि वै।
प्रायश्चित करं तेषां चतुर्थी कर्म ह्यचरित्॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रायश्चिते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि। ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामि याऽस्यै प्रजाघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा। इदं वायवे ॥२॥ ॐ सूर्य प्रायश्चिते त्वं देवानां प्रायश्चितिरसि। ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामि याऽस्यै पशुघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा। इदं सूर्याय ॥३॥ ॐ चन्द्रप्रायश्चिते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि। ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामियाऽस्यै गृहघ्नी तनस्तामस्यै नाशय स्वाहा। इदं चन्द्रमसे ॥४॥ ॐ गन्धर्व प्रायश्चिते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि। ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामि याऽस्यै यशोघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा इदं गन्धर्वाय॥५॥

पुन: स्थालीपाक से नीचे लिखी आहुति दे-

ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम॥ (इतिमनसा)

अब ब्रह्मा से कुशा घुटने तक मिलाकर घी और स्थालीपाक से स्विष्टकृत होम की आहुति दें-

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा। इदमग्नये स्विष्टकृते न मम॥

पुन: घी से आहुति दें-

ॐ भू स्वाहा। इदमग्नये॥१॥

ॐ भुव: स्वाहा। इदं वायवे ॥२॥

ॐ स्व: स्वाहा। इदं सूर्याय ॥३॥ (एता महाव्याहृतय)

ॐ त्वन्नोऽग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अवयासिसीष्ठा:। यजिष्ठो वह्नितम: शोशुचानो विश्वा

भार्या मूल गृहस्थस्य भार्या मूलं सुखस्य च।
भार्या धर्म फलावाप्त्यै भार्या सन्तान वृद्धये॥ (स्कं.का.अ. ४)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

द्वेषा ऽं सि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा। इदमग्निवरुणाभ्यां इदन्नमम॥४॥

ॐ सत्वन्नोऽग्ने वमो भवोति नेदिष्ठोऽस्याउषसोव्युष्ठौ। अवयक्ष्व नो वरुण ऽं वीहि मृडीक ऽं सुहवो न एधि स्वाहा। इदमग्निवरुणाभ्यां न मम ॥५॥ ॐ अयाश्चाग्नेस्यन-भिशस्ति याश्च सत्यमित्वमयाअसि। अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषज ऽं स्वाहा। इदमग्नये न मम ॥६॥ ॐ ये ते शंत वरुण ये सहस्त्रियं यज्ञिया पाशा वितता महान्तः। ते भिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मदरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम॥७॥ उदुत्तमं वरुण पाशमस्म दवाधमं विमध्यमं श्रथाय। अथावयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा। इदं वरुणायऽदित्यायदितये न मम॥८॥

ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम॥९॥ मंत्रों से नव आहुति देकर श्रुवावशिष्ट घृत प्रोक्षणी पात्र में छोड़ दे। वधू श्रुवे में लगे घी को अनामिका अंगुली से लगाकर चाटे फिर आचमन कर लेवे। वर हाथ में जल लेकर ब्रह्मा को पूर्णपात्र प्रदान करे-

ॐ अद्येत्यादि० अस्या रात्रौ कृतैच्चतुर्थी होम कर्मणि कृताऽकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्म प्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्र प्रजापति दैवतंऽमुकगोत्रायामुक शर्म्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहंसम्प्रददे।

ब्रह्मा **'स्वस्ति'** ऐसा कहे फिर ब्रह्मा की गांठ खोल पवित्रे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

से वर वधू को प्रणीता के जल से छींटा दें-

ॐ सुमित्रियान आप ओषधयः सन्तु। दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टियं वयंद्विष्म।। छीटे देकर प्रणीता को ईशान दिशा में उल्टा रख वेदी के चारों ओर की कुशा को घृत में भिगोकर अग्नि में डाल दें-

ॐ देवा गातु विदो गातुं वित्वा गातु मितः।

मन सस्पते इमं देवयज्ञ ँ स्वाहा। वातेधाः स्वाहा।।

कलश के जल से वर वधू के ऊपर आम के पत्तो से आचार्य जल के छींटे देवे-

ॐ याते पतिघ्नि प्रजाघ्नि पशुघ्नि गृहघ्नि यशोघ्नि निन्दिता तनूर्जारघ्नि ततएनां करोमि। साजीर्य्यत्वं मया सह श्री......... देवी[1]**।।** पुनः वर निम्न मंत्रों से चार बार वधू को तथा चार बार वधू वर को स्थाली पाक को खिलावे-**ॐ प्राणैस्ते प्राणान् संदधामि।।१।। ॐ अस्थिभिरस्थीनि संदधामि।।२।। ॐ मांसेस्ते मांसानि संदधामि।।३।। ॐ त्वचां ते त्वचं संदधामि।।४।।** इसके बाद वर वधू के हृदय को स्पर्श कर निम्न मंत्र पढ़े-**ॐ यत्ते सुशीमे हृदयं दिवि चन्द्रमसिश्रितं वेदाहं तन्मां तद्विद्यात्।। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत ँ श्रृणुयाम शरदः शतम्।।**

आचार्य वर वधू के कंकण की गांठ[1] लोकरीति के अनुसार खोल दे, तथा घी, फल श्रुवे में रखकर पूर्णाहुति दिलावे-**ॐ मूर्द्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानर**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मृतमाजातमग्निम्। कवि ॐ सम्राजमतिथिं जनाना मासन्नपात्रं जनयन्तु देवाः स्वाहा। पूर्णाहुति देकर आचार्य श्रुवे से होम की भस्म निकाल कर वर वधू के लगावे-**ॐ त्र्यायुषं जगदग्ने, इति ललाटे** (माथेपर)

ॐ कश्यपश्य त्र्यायुषमिति, ग्रीवायाम्। (गले पर)

ॐ यद्देवेषुत्र्यायुषमिति, दक्षिण बाहूमूले। (दाहिने कन्धे पर)

ॐ तन्नोऽअस्तुत्र्यायुषमिति, हृदये। (छाती पर)

अब वर संकल्प पूर्वक आचार्य एवं अन्य ब्राह्मणों को दक्षिणा देकर उनसे आशीर्वाद ग्रहण करें।

।।आशीर्वाद के मन्त्र।।

आचार्य कलश को हाथ में लेकर आम्र पल्लवों से जल के छींटे सपरिवार यजमान के ऊपर देवे-

ॐ स्वस्तिनऽ इन्द्रोवृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषाविश्ववेदाः। स्वस्तिन स्ताक्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु। ॐ पयः पृथिव्याम्पयऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षेपयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तुमह्यम्।। ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्त्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि। वैष्णवमसि विष्णवे त्वा ।। अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रा देवताऽदित्या देवता

१. यहां पर वर, वधू के नाम का उच्चारण आदर पूर्वक करे।

कंकण मोचन- कंकणं मोचयामद्य रक्षांसि न कदाचन।
मयि रक्षां स्थिरां दत्त्वा स्वस्थानं गच्छ कंकण!।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मरुतो देवता विश्वे देवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता। द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ॐ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिब्रह्म शान्तिः सर्व ॐ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्ति रेधि॥ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव। यद्‌भद्रं तन्न ऽ आ सुव॥

श्रीवर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधात् पवमानं महीयते।
धान्यं धनं पशुं बहुपुत्रलाभं शत्संवत्सरं दीर्घमायुः॥
मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः। शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणमुदयस्तव॥

आयुष्कामो यशस्कामो पुत्र-पौत्रस्तथैव च।
आरोग्यं धन कामश्च सर्वेकामा भवन्तु मे॥
सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वेसन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद दुःखभाग्भवेत्॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

सम्पूर्ण ग्रहनक्षत्र शान्ति रहस्यम्

लेखक- शिव स्वरूप यज्ञिक

प्रस्तुत पुस्तक में गणेश पूजन, संकल्प विधि, कलश, मातृका, ग्रह पूजन के साथ नवग्रह शान्ति, वास्तु शान्ति, गण्डमूल शान्ति, गोमुख शान्ति, ज्येष्ठा शान्ति, आश्लेषा शान्ति, कार्तिक प्रसूति शान्ति, नाग पूजन, नृसिंह पूजन विधान, शिव पार्थिक पूजन एवं जप विधि, सन्तान गोपाल मंत्र एवं जप विधि, २७ नक्षत्रों के जपार्थ मंत्र, संख्या, गायत्री पुरश्चरण एवं जप विधान, पितृ तर्पण आदि प्रयोग को प्रस्तुत किया गया है, जिसका यथाविधि प्रयोग करने पर अनुष्ठान करने कराने वालों की मनोकामना अवश्य फलीभूत होती है। ब्रह्मणों के लिए अनूठी पुस्तक है। जरूर मंगवाकर लाभ उठायें।

कर्मसिंह अमरसिंह पुस्तक विक्रेता

बड़ा बाजार, हरिद्वार फोन-0133-425619

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

॥संस्कार मुहूर्त प्रकरण॥

रजस्वला स्नान मुहूर्त- नक्षत्र रेवती, तीनों उत्तरा, मृगशीर्ष, रोहिणी, स्वाती, अनुराधा और अश्विनी नक्षत्रों में १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १५, १३ तिथियों में रवि, मंगल, बृहस्पति के दिन रजस्वला स्नान शुभ कारक होता है।

गर्भाधान मुहूर्त- यह संस्कार स्त्री के रजस्वला होने के बाद (रजोदर्शन) सोलह दिन तक किया जाता है। रजोदर्शन के ६, ८, १२, १४, १६ दिनों में गर्भाधान पुत्र दायक तथा विषम दिन ५, ७, ९, ११, १३, १५ में गर्भाधान कन्या दायक होता है, उपरोक्त दिनों में भी शुद्ध मुहूर्त का विचार भी किया जाता है। गर्भाधान के लिए १ (कृष्ण पक्ष), २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ शुक्ल पक्ष की तिथियों में सोम, बुध , गुरु, शुक्र वारों में रोहिणी, मृगशीर्ष, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, पुनर्वसु, पुष्य, स्वाति, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा तथा शतमिषा नक्षत्रों में। शुभ लग्न, चन्द्र बल में, रजोदर्शन से प्रथम चार रात्रि का त्याग कर, रिक्ता तिथि, जन्म नक्षत्र, तीनों गंडान्त, श्राद्ध दिन (माता पिता के) तथा पर्वकाल का त्याग करना गर्भाधान के लिए शुभ होता है।

पुंसवन संस्कार मुहूर्त- यह संस्कार गर्भधारण के तीसरे मास में रवि, चन्द्र, मंगल, गुरु, शुक्रवारों में पूर्वोक्त (गर्भाधान) तिथियों में रोहिणी, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, तीनो उत्तरा, श्रवण, अनुराधा एवं रेवती नक्षत्रों में यह संस्कार शुभ होता है। इस संस्कार में गुरु शुक्र अस्त का दोष नहीं माना जाता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सीमन्तोनयन मुहूर्त- गर्भधारण के छठवें या आठवें मास में रवि, मंगल, गुरुवार, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ शुक्ला तिथियों में मृगशीर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, हस्तामूल श्रवण नक्षत्रों में १, ३, ५, ७, ९, ११ लग्नों में यह संस्कार करना शुभ होता है।

जातकर्म संस्कार- कुछ शास्त्रकार नालछेदन के पूर्व प्रसव के समय इस संस्कार को करने की आज्ञा देते हैं परंतु आजकल १६ घटी तक इस संस्कार को किया जाता है। कुछ लोग ११ वे अथवा १२ दिन भी करते हैं।

१ (कृष्ण पक्ष), २, ३, ५, ७, १०, १२, १३ (शुक्ला) चन्द्र बुध गुरु, शुक्र दिनों में। अश्विनी, रोहिणी, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त चित्रा, स्वाति, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतमिषा, रेवती नक्षत्रों में।

मेघाजनन मुहूर्त- जातकर्म के साथ ही जातक के मेधावी बनने के लिए स्वर्ण से मधु, घी अथवा गुड़ मिश्रित घी बालक के तालु में लगाना, शुभकारक होता है।

दुग्धपान मुहूर्त- जन्मान्तर के पांचवें या सातवें दिन १ (कृष्णपक्ष), २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ (शुक्ला) तिथि में। रोहिणी, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त चित्रा, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, रेवती नक्षत्रों में। चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र वारों में १, २, ३, ४, ६, ७, ९, १२ लग्नों में दुग्धपान कराना शुभ होता है।

षष्ठी पूजन मुहूर्त- जातक के छठवें दिन रात्रि में षष्ठी पूजन मंगल व गीतवाद्य के साथ किया जाता है इसमें सूतक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दोष की आपत्ति नहीं होती।

प्रसूता स्नान मुहूर्त-१ (कृष्णपक्ष), २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ (शुक्ला) तिथियों में रवि, मंगल, गुरु वारों में। अश्विनी, रोहिणी, मृगशीर्ष, तीनों उत्तरा, हस्त, स्वाति, अनुराधा, रेवती नक्षत्रों में १, २, ३, ४, ६, ७, ९, १२ लग्नों में सौम्य ग्रह से युक्त या दृष्ट समय स्नान करना शुभ होता है।

नामकरण मुहूर्त- सूतक समाप्ति के बाद १०, ११, १२, १३, १६,, १९, २२ वें दिन यह संस्कार किया जाता है। एक अन्य मत के अनुसार ब्राह्मण को ११ या १२ वें दिन क्षत्रिय को ११ या १२ वें दिन वैश्य को १६ या २० वें दिन। १ (कृष्ण), २, ३, ७, १०, ११, १२, १३ (शुक्ला) तिथियों में चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र वारों में अश्विनी, रोहिणी, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतमिषा, श्रवण, रेवती नक्षत्रों में, १, ४, ६, ७, ९, १२ लग्नों में, लग्न शुभ ग्रह युक्त वा दृष्ट हों। भद्रा, व्यतिपातादि दोष रहित, शुभ ग्रह लग्न से १, ४, ५, ७, ९ तथा १० स्थानों में पाप ग्रह ३, ६, ११ स्थानों में हों तो शुभ होता है।

अन्नप्राशन मुहूर्त- जातक के जन्म मास से ६, ८, १० या १२ वें मास में पुत्र का तथा ५, ७, ९ या ११ वें मास में कन्या का अन्नप्राशन संस्कार करना शुभ होता है। अन्नप्राशन के दिन तीनों उत्तरा मृगशिर, रेवती, विशाखा, अनुराधा, हस्त, पुष्य, अश्विनी, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, स्वाति, शतभिषा नक्षत्र, भद्रादि दोष रहित २, ३, ५, ७, १०, १३, १५

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(शुक्ला) तिथियों में सोम, बुध, गुरु, शुक्र दिनों में, मीन, मेष, वृश्चिक लग्नों को त्याग कर, द्वादश स्थान ग्रह रहित हों, चन्द्रमा १, ६ तथा ८वें स्थान में न हों तो अन्न प्राशन संस्कार शुभ कारक होता है अन्न प्राशन संस्कार में खीर, घी, दही, मधु का भोजन करवायें।

कर्णवेध मुहूर्त- बालक के जन्म से १२, १६ वें दिन या ६, ७, ८ वें मास अथवा ३, ५ वें वर्ष में चैत्र, पौष, हरिशयन (आषाढ़ शुक्ल एकादशी से कार्तिक शुक्ल एकादशी तक) जन्म मास, जन्म नक्षत्र ४, ९, १४ (रिक्ता तिथियां छोड़कर) चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र वारों में २, ३, ६, ७, ९, १२ लग्नों में अश्विनी, श्रवण, धनिष्ठा, पुनर्वसु, मृगशीर्ष, रेवती, चित्रा, अनुराधा, हस्त, पुष्य, अभिजित नक्षत्रों में कर्ण छेदन शुभ होता है। कन्या की नासिका छेदन हेतु उपरोक्त कर्णवेध मुहूर्त के मासों में ही कन्या का नाक बिंधवाया जाता है, शुक्ल पक्ष की २, २, ५, ७, १०, ११, १२, १३, १५ तिथियां शुभ हैं।

जन्म दिन पूजन- सुयोग्य ज्योतिषी द्वारा वार्षिक जन्म दिन का निर्णय किया जाता है अर्थात् जन्म दिन के दिन सूर्य के राशि अंश कला आदि की जब पुनरावृत्ति हो उसी दिन जन्मदिन का नववर्ष प्रवेश माना जायेगा। इस दिन दीपक जलाकर (बुझा कर नहीं) पंचदेव, ग्रह-पूजन, वर्षफल में स्थित अशुभ ग्रहों के दान, दीर्घ जीवियों का ध्यान, ब्राह्मण पूजन, वृद्धों का पूजन करवाया जाता है। जन्मदिन पूजन में तिल स्नान, अन्नदान, दूध सेवन का भी विधान है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चूड़ाकर्म संस्कार मुहूर्त- जन्म समय या गर्भाधान समय से १, ३, ५, ७ इत्यादि विषम वर्षों में उत्तरायण के सूर्य में चैत्र मास को छोड़कर माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ मास २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १३ (शुक्ला) कृष्णा पंचमी तक, सोम, बुध, गुरु, शुक्र दिनों में, अश्विनी, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, ज्येष्ठा, श्रवण, अभिजित, धनिष्ठा और शतमिषा नक्षत्रों में, पर्वकाल का त्यागकर जन्म मास त्याज्य, मुण्डन लग्न जन्म राशि से या जन्म लग्न से अष्टम न हो, बालक की माता रजस्वला या बालक की माता को ५ मास से अधिक का गर्भ स्थित हो तो मुण्डन निषिद्ध है परन्तु ५ वर्ष से अधिक अवस्था वाले बालक के लिए निषेध नहीं है। ज्येष्ठ बालक का मुण्डन ज्येष्ठ मास में शुभ नहीं। ज्योर्तिनिबन्धानुसार- ब्राह्मणों को रविवार, क्षत्रियों को मंगलवार, अन्य जाति वालों को शनिवार भी ग्राह्य होंगे। क्षौर कर्म के लिए भी उपरोक्त ग्राह्य तिथियां वार नक्षत्र शुभ हैं। स्नान, भोजन के बाद अपना शुभ चाहने वाले हजामत न करें। यज्ञ पूर्णाहुति के बाद या मृत्तक कर्म में, कारागार से छूटने के बाद, राजा व ब्राह्मण की आज्ञा से क्षौरकर्म निषेध दिनों में भी कराना शुभ है।

अक्षरारंभ मुहूर्त- जन्म से ५, ७ वें वर्ष में कुंभ के सूर्य को छोड़ उत्तरायण के सूर्य में सोम, बुध, गुरु, शुक्र दिनों में २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों अश्विनी, हस्त, पुष्य, अभिजित, श्रवण, स्वाति, रेवती, पुनर्वसु, आरद्रा, चित्रा और अनुराधा नक्षत्रों में मेष, कर्क, तुला, मकर लग्नों को छोड़कर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शुभ ग्रहों के लग्नों में भद्रादि दोषों को त्याकर अक्षरारंभ शुभ होता है।

विद्यारम्भ मुहूर्त- बालक के ५ वें वर्ष में कुंभ के सूर्य को छोड़कर माघ, चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ मासों में गुरु, बुध, शुक्र वारों में २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ (शुक्ला) तथा पंचमी तक (कृष्ण) मृगशीर्ष, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, तीनों पूर्वा, हस्त, चित्रा, स्वाति, श्रवण, धनिष्ठा, शतमिषा मूल नक्षत्रों में विद्यारम्भ करना शुभ होता है। किसी के मत से तीनों उत्तरा, रोहिणी, रेवती तथा अनुराधा नक्षत्र भी विद्यारम्भ के लिए शुभ नक्षत्र है।

यज्ञोपवीत संस्कार मुहूर्त- ब्राह्मण बालक का ८वें या ११वें वर्ष क्षत्रिय का १२वें वर्ष तथा वैश्य का १६वें वर्ष में यज्ञोपवीत संस्कार शुभ होता है, किसी अन्य के मत से ब्राह्मण १६वें क्षत्रिय २२वें और वैश्य का २४वें वर्ष में यज्ञोपवीत होना शुभ है। ब्राह्मण का यज्ञोपवीत वसन्त में, क्षत्रिय का ग्रीष्म ऋतु में तथा वैश्य का शरद् ऋतु यज्ञोपवीत संस्कार शुभ हैं। शुभ नक्षत्र-हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित, तीनों उत्तरा, रोहिणी, आश्लेषा, स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतमिष, मृगशीर्ष मूल, रेवती, चित्रा, अनुराधा, तीनों पूर्वा और आर्द्रा। शुभवार- रवि, बुध, गुरु, शुक्र एवं सोमवार, शुभ तिथियां- २, ३, ५, १०, ११, १२ शुक्ला तथा २, ३, ५, (कृष्ण) परन्तु आषाढ़ १०, ज्येष्ठ शुक्ल २, पौष शुक्ल ११, माघ शुक्ल १२ तथा संक्रान्ति के दिन छोड़कर मध्यान्ह काल के पहले ही यज्ञोपवीत संस्कार करना शुभ होता है। लग्न

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शुद्धकर चन्द्र शुद्ध करना शुभ कारक है ब्राह्मण का यज्ञोपवीत पुनर्वसु नक्षत्र में न करें।

वर वरण मुहूर्त- तीनों उत्तरा, कृत्तिका, तीनों पूर्वा में, रिक्ता अमावस्या छोड़कर शुभ तिथियों तथा शुभवारों में चन्द्र बल के समय शुभ लग्न में ब्राह्मण या कन्या का भाई वर के घर जाकर वर पूजन कर वर को तिलक वस्त्र श्रीफल यज्ञोपवीतादि से संतुष्ट करे।

कन्या वरण मुहूर्त- उत्तरषाढ़ा, स्वाति, श्रवण, तीनों पूर्वा, अनुराधा, धनिष्ठा, कृत्तिका विवाहोक्त नक्षत्रों में शुभ लग्न में वस्त्र आभूषण फलादि से कन्या वरण करना शुभ होता है।

विवाह मुहूर्त- मेष, वृष, मिथुन, वृश्चिक, मकर, कुंभ राशि के सूर्य में आषाढ़ शुक्ल १० तक, कार्तिक में वृश्चिक के सूर्य, पौष में मकर का सूर्य, चैत्र में मेष का सूर्य हो तो इन महीनों में भी विवाह हो सकता है।

वर वधु के चन्द्र, गुरु, रवि बल विचारकर विवाह दिन निश्चित करे-

विवाह में रवि, चन्द्र, गुरु विचार

ग्रह	रवि	चन्द्र	गुरु
शुभ स्थान	३-६-१०-११	३.६.७.१०.११	२.५.७.९.११
पूज्य स्थान	१-२.५.७.९	१.२.५.९	१.३.६.१०
निन्दित स्थान	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२

उपरोक्त ग्रहों का विचार कर वेध रहित नक्षत्रों में, रोहिणी,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मृगशीर्ष, हस्त, मूल, अनुराधा, मघा, रेवती, तीनों उत्तरा, स्वाति, नक्षत्रों में, सोम, बुध, शुक्र, गुरु वारों में (अन्य वार मध्यम हैं) ४, ९, १४, ३० तिथियों को छोड़कर शुभ लग्न में विवाह करना शुभ होता है वर कन्या जिसको विवाह से पूर्व तैल चढ़ाना हो उसका चन्द्र बल देखकर तैलादि शुभ कार्य हेतु मेषादि राशि वालों को वान निम्न चक्रानुसार देवें-

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुंभ	मीन
७	१०	५	१०	५	७	७	५	५	५	५	७

द्विरागमन मुहूर्त- पिता के घर से दूसरी बार पत्नि पति के घर सोम, बुध, गुरु, शुक्र दिनों अश्विनी, पुष्य, रोहिणी, हस्त, तीनों उत्तरा, श्रवण, धनिष्ठा, पुनर्वसु, स्वाति, मूल, मृगशीर्ष, चित्रा, रेवती, अनुराधा नक्षत्रों में चन्द्र शुद्धि देखकर द्विरागमन शुभ होता है।

॥ संस्कार की सामान्य पूजन सामग्री ॥

रोली, मौली, अक्षत्, पुष्प, दूर्वा, दीपक, नैवेद्य, फल, चन्दन, केशर, रूई, फूलमाला, अक्षत, रंग ४, हवन सा0, समिधा, उड़द, दाल, कुशा, सुपारी साबुत, श्रीफल, पान पत्ते, लवंग, इलायची, कपूर, मेवा, पंचामृत, दूध, दही, शहद, घी, चीनी, गंगाजल, कलश, चौकी, तेल, प्रणीता पात्र, प्रोक्षणी पात्र, पूर्ण पात्र, लाल या पीला कपड़ा, सुगन्धि द्रव्य, पंचपल्लव, पंच रत्न, सप्तमृत्तिका, सर्वोषधी, वरण द्रव्य, धोती, कुर्ता,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

माला, पंचपात्र, गोमुखी, खड़ाऊ आदि कपड़ा-वेदी-चंदोया का रेती या मिट्टी, सरसों, आसन, थाली, कटोरी।

गर्भाधान सामग्री- उपरोक्त सामग्री तथा नारियल।

पुंसवन सामग्री- सामान्य पूजन सामग्री, बड़ के अंकुर, गुडची, ब्राह्मी।

सीमन्तोनयन सामग्री- पूजन की सामान्य सामग्री, उदुम्बर वनस्पति, शल्लकी की का कांटा।

जातकर्म सामग्री- पूजन की सामान्य सामग्री, सुवर्ण शलाका, घृत, मधु, जलपात्र, पंचकलश।

षष्ठि पूजन सामग्री- पूजन की सामान्य सामग्री, श्रृंगार सामग्री, शस्त्र, मूशल, भस्म, सरसों की पोटलिका।

नामकरण सामग्री- पूजन की सामान्य सामग्री, कांस्य थाली, चावल, सुवर्ण शलाका, पीपल पत्ता।

निष्क्रमण सामग्री- पूजन की सामान्य सामग्री, रक्त पुष्प, सूर्य के लिए अर्ध्य, चन्द्रमा पूजन के लिए श्वेत पुष्प।

अन्न प्राशन सामग्री- पूजन की सामान्य सामग्री, कांस्य थाली, खीर, पुस्तक, अंगूठी, लेखनी, शस्त्र।

जन्म दिन पूजन- पूजन की सामान्य सामग्री।

कर्णवेध सामग्री- पूजन की सामान्य सामग्री, धर्मशास्त्र की पुस्तकें, काष्ठ की पाटिका।

केशाधिवास चूड़ाकर्म सामग्री- शीतल गर्म जल, मक्खन, घी, दही, शल्लकी कंट, कंघी, कुशा, ताम्बामिश्रित छुरा, नाई, गोबर (रक्त वृषभ का) कांस्य पात्र तथा अन्य पूजन सामग्री।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यज्ञोपवीत सामग्री- पात्र ८, दण्ड, खड़ाऊ, झोली, जनेऊ, मूंज की रस्सी, पुष्पमाला तथा अन्य पूजन सामग्री।

वेदारंभ सामग्री- वेद पुस्तक तथा पूजन की अन्य सामग्री।

केशान्त संस्कार सामग्री- चूड़ाकर्म के समान सामग्री।

सयावर्त्तन समावर्तन संस्कार सामग्री- ८ जलपूर्ण कलश, ताम्र पात्र, नये वस्त्र, तिल, दधि, नाई, शीतल जल, दन्तधावन, सुगन्धित द्रव्य, पुष्पमाला, अलंकार नेत्रांजन, दर्पण, क्षत्र, उपानह, दण्ड तथा अन्य सामान्य पूजन सामग्री।

स्तम्भ पूजन सामग्री- वेदि निर्माण के लिए ईंट अथवा लकड़ी, ध्वजा, कलश १६, दिवा १६, कदलीवृक्ष फलदार, ध्वजा, कपड़ा वेदी का, कपड़ा चंदोया का, वृक्ष की शाखायें १६, उड़द तथा पूजन की अन्य सामग्री।

विवाह सामग्री- धान का लावा, शिला, विष्टर, सूर्प, कांसे की कटोरी, आम के पत्ते, शंख, परात, चौकी, खड़ाऊ, वर वरण हेतु वस्त्र, आचार्य वरण हेतु वस्त्र, कलश, कांस्य पात्र, ग्रंथि बन्धन का कपड़ा, तुलसी, कंकण, पंचपल्लव युक्त कलश (वेदी का) शय्या, वस्त्र, आभूषण, बर्तन तथा अन्य पूजन की सामग्री।

चतुर्थी कर्म सामग्री- वरण सामग्री, हलुआ, आम के पत्ते।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अथ
यज्ञ मण्डप निर्माण

भूमि पूजन कर के-प्रथम अठारह या सोलह हाथ का समचौरस मण्डप का निर्माण करे जगह की कमी के कारण चौदह या बारह हाथ अथवा दश या आठ हाथ लम्बा चौड़ा सम चौरस यज्ञ मण्डप का निर्माण करे। यज्ञ मण्डप के मध्य में हवन कुण्ड का निर्माण करे। हवन कुण्ड में एक अंगुल कंण्ठ वनावै कुण्ड में सबसे ऊपर की मेखला चार अंगुल ऊँची एवं चौड़ी पीतवर्ण बनावै बीच की मेखला तीन अंगुल चौड़ी ऊची रक्त वर्ण की बनावै तीसरी मेखला सबसे नीचे की 2 अंगुल चौडी ऊँची कृष्ण वर्ण की बनावै योनि बारह अंगुल ऊँची रक्त वर्ण की बनावै कुण्ड का निर्माण कर गोबर से लीप देवें तथा कुण्ड में पंञ्चगव्य का प्रोक्षण करे। यज्ञ कुण्ड के मध्य में नाभिवनावै। मण्डप के नैऋत्य कोण में वास्तु वायव्य कोण में क्षेत्रपाल ईशान में ग्रह अग्निकोण में मातृका तथा पूर्व में प्रधान वेदी का निर्माण करें।

अब षोडषस्तंभ के देवता ध्वजा आदि का रंग का निर्माण निम्न प्रकार से करे पहले चार स्तम्भ यज्ञ कुण्ड के चारों ओर तथा चार यज्ञ मण्डप के चारों कोनों पर तथा आठ स्तंभ चार द्वारों के कोनों पर लगावै। दश दिग्पाल हेतु १० ध्वजा पताका का निर्माण करे दिग्पाल एवं स्तंभ के रंग व ध्वजा निम्न प्रकार लगावें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सम्पूर्ण पूजन रहस्य भाषा टीका (१९९)

लेखक- शिव स्वरूप यज्ञिक

इस पुस्तक में संध्या सभी देवी-देवताओं के पूजन, शांति पाठ, संकल्प मंत्र, स्वस्तिवाचन, कलश पूजन, नान्दी श्राद्ध, षोडश मातृका पूजन, नवग्रह पूजन, यज्ञ निर्माण पूजन, विष्णु पूजन, शिव पूजन, दुर्गा न्यास विधान पूजन, सर्वतोभद्र देवता स्थापना, अग्नि स्थापना, वारुणी हवन, रुद्र सूक्त, श्री सूक्त, गोदान आशीर्वाद मंत्र, महा मृत्युंजय जप पूजन, संकट नाशक गणेश स्त्रोत, नवनाग स्त्रोत, शनि स्त्रोत, श्रीराम स्तवन बहुत अच्छे ढंग से दी गयी है। प्रत्येक ब्राह्मण प्रत्येक व्यक्ति के लिए उपयोगी पुस्तक आज ही खरीदें। मूल्य- ३५/- रुपये

सम्पूर्ण ग्रहनक्षत्रदि शान्ति रहस्य भाषा टीका

लेखक- शिव स्वरूप यज्ञिक

ग्रह नक्षत्रों की शांति, मूल शांति, अश्लेषा, कार्तिक प्रसूता शांति वास्तु शांति आदि सर्व उपयोगी पुस्तक। मूल्य-३५/- रुपये

वृहद नित्य कर्म पद्धति (सर्वदेव पूजा)

(लेखक- पं० ज्वाला प्रसाद शास्त्री)

इस पुस्तक में नित्यकर्म पूजा पाठ, नवग्रह पूजन, गायत्री जप विधि, २४ मुद्राएँ गायत्री, कवच, संध्या विधि, तर्पण विधि, हवन, सभी पूजन विधि, आदित्य हृदय स्तोत्र पाठ, स्तुतियाँ, एकादशी नियम, सब देवताओं के पूजन हैं। मूल्य-३१/-रुपये

वृहद नित्य कर्म पद्धति (सर्वदेव पूजा)

(लेखक- पं० ज्वाला प्रसाद शास्त्री)

इस पुस्तक में दशदान, मोक्षधोनुदान, पिण्डदान, कपाल क्रिया, अस्थित संचयकर्म, दशगात्र विधि, चतुर्दश यम तर्पण, चितानल विधि, घटपूजन, पिण्डदान, पिण्ड पूजन, दशगात्र के संकल्प, एकादशाह, शय्यादान, कपिलादान, उदकुंभ दान, वृषोत्सर्ग, वृषमाताओं का पूजन, प्रेत माताओं का पूजन, अग्निस्थापन, वृष वत्सरी पूजन, विष्णु श्राद्ध प्रयोग, पंचदेव श्राद्ध, उत्तम षोडशी, पिण्डनिर्माण पूजन, पिण्ड निर्माण, पिण्ड दान आदि पूजन दिये गये हैं।

कर्मसिंह अमरसिंह, पुस्तक विक्रेता

बड़ा बाजार, हरिद्वार-249 401 फोन-0133-425619

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वी.पी.पी. से पुस्तकें मंगाएं

असली प्राचीन मन्त्र महार्णव	५००	हस्त रेखाओं में छिपा भविष्य	८०
बृहत् पाराशर होराशास्त्र	५००	कुण्डली दर्पण	८०
प्राइमैक्स होम टेलरिंग गाइड	१२०	नाक्षत्र ज्योतिष	८०
यन्त्र एलबम	६०	सम्पूर्ण रत्न विज्ञान	८०
१२१ हिट स्वर लिपियां	६०	ज्योतिष और रोग	६०
असली प्राचीन गायत्री तंत्र साधना	६०	ज्योतिष सीखिए	६०
असली प्राचीन लक्ष्मी तंत्र साधना	६०	स्त्री जातक दर्पण	८०
असली प्राचीन दुर्गा तंत्र साधना	६०	आप और आपके सितारे	६०
असली प्राचीन शिव तंत्र साधना	६०	दशाफल दर्पण	६०
असली प्राचीन हनुमत तंत्र साधना	६०	ज्योतिष और संतान योग	५०
असली प्राचीन भैरव तंत्र साधना	६०	कालसर्प योग	५०
असली प्राचीन विष्णु तंत्र साधना	६०	अष्टकवर्ग रहस्य	५०
असली प्राचीन गणेश तंत्र साधना	६०	तंत्र विद्या के रहस्य	६०
असली प्राचीन सूर्य तंत्र साधना	६०	अंकों में छिपा भविष्य	६०
असली प्राचीन वृहद लाल किताब	५०१	मंत्र विद्या के चमत्कार	५०
असली प्राचीन वृहत् संहिता	५००	संपूर्ण हस्तरेखा विज्ञान	५०
दश महाविद्या	५००	श्रीयंत्र रहस्य	५०
असली प्राचीन रावण संहिता	४००	अंक विद्या	५०
असली प्राचीन काली किताब	४००	हस्तरेखाएं और व्यवसाय	५०
वास्तु द्वारा लक्ष्मी प्रवेश	३००	तंत्र द्वारा कामना सिद्धि	५०
वास्तुशास्त्र रहस्य	२५०	ध्यान के चमत्कार	४०
कामर्शियल वास्तु के चमत्कार	२५०	प्रश्न प्रदीपिका	८०
वास्तु अपनाएं सुख समृद्धि पाएं	१५०	डामर एवं भूतडामर तंत्र	६०
असली प्राचीन लाल किताब	१२०	काली तंत्र साधना	६०
असली प्राचीन सुलेमानी नक्श	१५०	तारा मंत्र साधना	६०
असली प्राचीन नारद नक्श	१५०	षोडषी तंत्र साधना	६०
असली प्राचीन सुनहरी किताब	१५०	छिन्नमस्ता तंत्र साधना	६०
भजन सरोवर	१२०	मातंगी व कमला तंत्र साधना	६०
श्रीमद्भगवद् गीता	१२०	बेबी हैल्थ गाइड	८०
अष्टावक्र गीता	१००	सम्पूर्ण होम्योपैथी चिकित्सा	६०
१००८ कबरी वाणी-ज्ञानामृत	८०	फलों द्वारा चिकित्सा	६०
प्रश्न शास्त्र	१२०	प्राण चिकित्सा	६०
मनुस्मृति	१२०	भोजन द्वारा चिकित्सा	५०
शुक्रनीति	१२०	स्वास्थ्यरक्षक जड़ी-बूटियां	६०
एक्यूप्रेशर चिकित्सा	१५०	सम्पूर्ण स्वदेशी चिकित्सा	५०
संपूर्ण हस्तरेखा शास्त्र	१५०	प्रसव ज्ञान और शिशुपालन	५०

कर्मसिंह अमरसिंह, पुस्तक विक्रेता, बड़ा बाजार, हरिद्वार

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वी०पी०पी० द्वारा पुस्तकें मंगाएँ

हिन्दुओं के वर्षभर के व्रत, त्यौहार	31
नौ दिन का पाठ नवरात्र व्रत कथा	25
संकट नाशक गणेश चतुर्थी कथा	20
सप्तवार व्रत कथा लम्बी यंत्र सहित	25
सत्यनारायण कथा भाषा टीका	20
सत्यनारायण व्रत कथा भाषा	10
सोलह सोमवार व्रत, सोमवार	10
मंगलवार व्रत कथा	10
बृहस्पतिवार व्रत कथा	10
शुक्रवार व्रत कथा	10
रविवार व्रत कथा	10
शनिवार व्रत कथा	10
श्री वैभव लक्ष्मी व्रत कथा	8
हरतालिका व्रत कथा	10
ऋषि पंचमी व्रत कथा	10
अनन्त चतुर्थी व्रत कथा	10
प्रदोष व्रत कथा (सातों दिन की)	10
दीपावली पूजन, महालक्ष्मी व्रतकथा	10
करवा चौथ, अहोई, दीपावली भैयादूज	10
अन्नपूर्णा व्रत कथा चासीसा सहित	10
श्री पूर्णमासी व्रत कथा आरती सहित	10
श्री धर्मराज की कथा बैकुंठ चतुर्थी कथा	10
श्री चन्दन छठ सूर्यषष्ठी व्रतकथा	10
मंगला गौरी व्रत कथा	10
शिवरात्रि व्रत कथा पूजा विधि	10
संकटा माता व्रत कथा **संकट चौथ**	10
वट सावित्री व्रत कथा	10
श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत कथा	10
प्रजापति दक्ष की कथा	10
अमर कथा शिव पार्वती विवाह	12
करवा चौथ, गणेश चौथ, संकट चौथ	5
नवरात्र व्रत कथा दुर्गा चालीसा सहित	5
सोमवती अमावस, मौनी अमावस	5
अहोई अष्टमी व्रत कथा	5
नौ देवियों की अमर कहानी	15
चण्डी देवी की कथा	15
अमर कथा (तोते वाली)	15
भगवान शंकर के 21 अवतार कथा	15
श्री नीलकण्ठ की कथा	15
बद्रीनाथ जी की कथा	15
पंच केदार दर्शन	20
शाकम्भरी देवी की अमर कहानी	10
नैना देवी की अमर कहानी	10
मंशा देवी की कथा महात्म्य	10
एकादशी महात्म्य 160 पृष्ठ	21
बैशाख महात्म्य भाषा (30 अध्याय)	20
कार्तिक महात्म्य (35 अध्याय)	20
कार्तिक मास की व्रत कथाएं	20
श्रावण मास महात्म्य (30 अध्याय)	20
माघ महात्म भाषा (30 अध्याय)	20
पुरुषोत्तम महात्म्य भाषा 31 अध्याय	20
चालीसा पाठ संग्रह सजिल्द	25
श्री सूक्तम् भाषा टीका	25
श्री दुर्गा कवच अर्गला स्त्रोत्र भा.टी.	25
श्री दुर्गा कवच सरल हिन्दी मोटा टाइप	10
श्री महाकाल शनि मृत्युञ्जय स्तोत्र	10
श्री एक मुखी पंचमुखी सप्तमुखी	10
एकादश मुखी हनुमान कवच भा.टी.	10
श्री काली कवच, काली चालीसा	10
श्री हनुमानबाहुक भाषा टीका	10
श्री हनुमान पाठ (हनुमान उपासना)	10
श्री रामायण मनका रामनाममाला 108	10
श्री अमृतवाणी रामनाम माला सहित	10
श्री दुर्गा अमृतवाणी 108 नाम	10
श्री शिव अमृतवाणी 12 ज्योतिर्लिंग	10
श्री शिव गीता कविता में पूरा पाठ	10
श्री कृष्ण गीता (लालचन्दकृत)	10
श्रीसिद्ध महाविद्या स्तोत्र भा.टी.	7
श्री नित्यकर्मगीता (बलीनाथजी)	8
श्री गजेन्द्र मोक्ष भाषा टीका	6

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री गणपति अथर्व शीर्ष भा.टी.	6
श्री राम रक्षा स्तोत्र भाषा टीका	6
श्रीकनकधारा स्तोत्र, लक्ष्मीस्तोत्र भा.टी.	6
चर्पट मंजरी स्तोत्र भा.टी.	6
श्री गंगा लहरी भा.टी.	6
श्री नारायण कवच भाषा टीका	6
श्री अमोघ शिव कवच भा.टी.	6
अन्नपूर्णा स्तोत्र, अन्नपूर्णा कवच भा.टी.	6
गोरखनाथ चालीसा जाहरवीर चालीसा	10
सूर्य चालीसा सूर्य उपासना सहित	10
सरस्वती चालीसा सरस्वती कवच	10
भैरव चालीसा व बटुक भैरव चालीसा	10
श्री हनुमान सहस्त्रनाम भा.टी.	20
श्री गंगा सहसस्त्रनाम भा.टी.	20
श्री दुर्गा सहस्त्रनाम एवं अन्य स्तोत्र	20
श्री शिव सहस्त्रनाम भाषा टीका	15
श्री गोपाल सहस्त्रनाम भाषा टीका	20
श्री विष्णु सहस्त्रानाम भाषा टीका	15
श्री श्री गोपाल सहस्त्रनामावली	10
श्री शिव सहस्त्रनामावली	10
श्री विष्णु सहस्त्रनामावली	10
रुद्राष्टध्यायी	25
मानसागरी-भा.टी. सहित	100
भृगु संहिता-फलित प्रकाश	150
ताजिक नीलकंठी भा.टी.	100
जातकामरण भा.टी.	100
वृहद पाराशर होराशास्त्र भा.टी.	200
विश्वकर्मा प्रकाश भा.टी.	75
लग्नचन्द्रिका भाषा टीका	40
भारतीय ज्योतिष लाल किताब	120
भारतीय ज्योतिष नेमीचन्द शास्त्री	240
भद्रबाहु संहिता (नेमीचंद शास्त्री)	200
अरुण संहिता लाल किताब (चण्डीगढ़)	500
लाल किताब कष्ट निवारण	144
भारतीय ज्योतिष लाल किताब	153
कर्मविपाक संहिता भाषा टीका	75
श्री वेंकटेश्वर शताब्दिपंचाग 100 साला	600
वृहद होरा चक्र भाषा टीका	30
मुहुर्त चिन्तामणि भा.टी.	60
वृहद हस्तरेखा शास्त्र नारायण श्रीमाली	88
भारतीय ज्योतिष नारायण श्रीमाली	45
अंक ज्योतिष नारायण श्रीमाली	45
अंक दीपिका नारायण श्रीमाली	40
वर्षफल चन्द्रिका नारायण श्रीमाली	40
ज्योतिष योग चन्द्रिका नारायण श्रीमाली	40
कुण्डली दर्पण नारायण श्रीमाली	40
फलित ज्योतिष नारायण श्रीमाली	40
जन्म पत्री रचना श्रीमाली	45
नास्त्रेदमस की विचित्र भविष्यवाणियां	50
अंक विद्या रहस्य	50
हस्त रेखाएं बोलती हैं-कीरो	50
अंकों में छिपा भविष्य-कीरो	50
भाग्य त्रिवेणी-कीरो	50
हस्त संजीवन-कीरो	50
आपकी राशि भविष्य की झांकी	50
हस्त परीक्षा-कीरो	25
जन्मपत्री स्वयं बनाइये	25
अंक चमत्कार-कीरो	25
ज्योतिष सीखिए-कीरो	25
बिना तोड़-फोड़ वास्तुशास्त्र	75
सम्पूर्ण वास्तु शास्त्र	75
वास्तु दोष निवारण	75
पचास वर्षीय पंचाग-देवीदयाल	640
दस वर्षीय पंचाग देवीदयाल	160
ज्योतिष्ज्ञ तत्त्व (गणित खण्ड)	65
ज्योतिष तत्व फलित-I''	250
ज्योतिष तत्व फलित-II''	250
वर्षफल चन्द्रीका	60
तंत्र मंत्र यंत्र	60
उलझे प्रश्न सुलझे उत्तर	50
फलित विकास	80
जातकलंकार भा.टी.	50
भाव मंजरी - लघु पराशरी	50
प्रसव चिंतामणि	50
नष्ट जातकम	50

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

महामृत्युंजय साधना सिद्धि	50	केरलीय ज्योतिष	40
दाम्पत्य सुख	80	वर्षफल विचार	40
दशा फल रहस्य	50	महिलाएं और ज्योतिष	40
दैवज्ञ वल्लभा	50	भुवन दीपक	40
प्रश्न विद्या	50	ज्योतिष और रोग	40
नक्षत्र फल दर्पण	50	गोचर विचार	40
रत्न ज्योतिष विज्ञान रंगीन चित्र	100	चुने हुए ज्योतिष योग	50
उत्तर कालामृत (कालीदास)	100	भावार्थ रत्नाकर-रामानुजाचार्य	40
पूर्व कालामृत (कालीदास)	100	मंत्र शक्ति	40
जैमिनी सूत्रम् भा.टी.	150	तंत्र शक्ति	40
जातक तत्वम्-महादेव पाठक	150	यंत्र शक्ति (2 भागों में)	80
जातक भूषणम भा.टी.	150	फलित सूत्र	40
रुद्रयामल तंत्र भा.टी. रुद्रदेव त्रिपाठी	150	अनिष्ट ग्रह-कारण और निवारण	40
माहेश्वर तंत्र रुद्रदेव त्रिपाठी	50	रत्न परिचय	40
दत्तात्रेय तंत्र रुद्रदेव त्रिपाठी	80	व्यवसाय का चुनाव और आर्थिक स्थिति	40
फलित ज्योतिष में लग्न के फल	80	मूक प्रश्न विचार	40
फलित ज्योतिष में ग्रहों के फल	80	जातक पारिजात	400
अष्टकवर्ग महानिबंध	200	वैदिक नक्षत्र ज्योतिष	200
आयुर्निर्णय 2 भाग	200	सम्पूर्ण लाल किताब	300
ज्योति रत्नाकर देवकी नन्दन	285	काटवे सीरिज (ज्योतिष)	950
फलित मार्तण्ड बाल मुकुन्द	195	गृह सज्जा और वास्तुशास्त्र	75
प्रश्न मार्ग 2 भाग	300	मांगलिक दोष और सहज निवारण	50
बृहज्जातकम् भा.टी.	150	ग्रह और भावबल बी.वी. रमन	30
बृहत संहिता 2 भाग	600	जातक निर्णय बी.वी. रमन 2 भाग	260
शरीर लक्षण एवं चेष्टाएं	150	चमत्कार चिन्तामणी	195
बृहत पाराशर होरा शास्त्रम् 2भाग	400	ज्योतिष तत्व प्रकाश	245
ज्योतिष सर्वस्व	200	ज्योतिष रहस्य	195
वृद्ध यवन जातकम्	600	300 महत्वपूर्ण योग	80
व्यापार रत्न (तेजी मंदी)	300	प्रश्न चन्द्र प्रकाश	75
प्रश्न ज्ञान	50	भारतीय लग्न सारिणी	70
सारावली-कल्याण वर्मा	200	मुहूर्त गणपति	175
जातक सार दीप 2 भाग	400	मुहूर्त मार्तण्ड	135
फलदीपिका	150	लग्न चन्द्र प्रकाश	245
सौन्दर्य लहरी शंकराचार्य कृत	150	लघु पाराशरी भाष्य	165
षटपंचाशिका भा.टी.	40	लघु पाराशरी सिद्धान्त	225
भाव दीपिका भा.टी.	40	वैवाहिक सुख मृदुला त्रिवेदी	125
प्रश्न दर्पण	40	वैवाहिक विलम्ब के विविध मंत्र	90
चन्द्रकला नाड़ी	40	वैदिक गणित	95

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वी०पी०पी० द्वारा पुस्तकें मंगाएँ

एकादशी महात्म्य बड़ा (160 पृष्ठ) मोटे अक्षरों में	21
एकादशी महात्म्य छोटा	15
बैशाख महात्म्य भाषा (सम्पूर्ण 30 अध्याय)	25
कार्तिक महात्म्य (35 अध्याय) तुलसी विवाह, क्षेमकरणी	25
चतुर्मास महात्म्य डिमाई साइज	20
कार्तिक मास की व्रत कथाएं, कहानियां, भजन, आरतियाँ	20
बड़ा कार्तिक महात्म्य 35 अध्याय सम्पूर्ण आरतियों सहित	50
श्रावण मास महात्म्य (सम्पूर्ण 30 अध्याय)	25
माघ महात्म भाषा सम्पूर्ण 30 अध्याय ग्लेज	25
पुरुषोत्तम महात्म्य भाषा 31 अध्याय ग्लेज	25
बड़ा भक्ति सागर	25
आरती संग्रह 24 रंगीन चित्रों सहित (कृष्ण कवर) चमकदार	30
Arti Sanghrah with 24 coloured photo (Roman Letters) English	30
आरती संग्रह आरती रंगीन चित्रों सहित (दुर्गा कवर)	25
आरती माला 50 आरतियां	10
आरतियाँ ही आरतियाँ-नया कवर	15
बड़ा आरती संग्रह (शिव कवर)	10
हरिनाम कीर्तन भजन माला (नया एडीशन)	16
हरीशरण भजनमाला	16
धार्मिक गीत संग्रह	15
लेडीज संगीत (बन्ने, विवाह, लोकगीत)	10
मेरी लागी श्याम संग प्रीत (महेश चन्द्र जी शास्त्री)	10
भजन सरोवर (महेष चन्द्र जी शास्त्री)	10
तू बांका तेरी बांकी नजरिया	10
भगवान तुम्हारे चरणों में (बालाजी भजन संग्रह)	10
बड़ा कीर्तन सागर (नया एडीशन)	15
माता का सम्पूर्ण जगराता (ताराराानी की कथा सहित)	10
धार्मिक भजनावली सन्तों के भजन का संग्रह	10
अनूप जलोटा भजन संग्रेह ग्लेज	10
राम श्याम भजनमाला	10
माता की भेंट तारा रानी की कथा सहित	10
भजन पुष्पांजलि छोटी-भजन, कीर्तन	10
गंगा के भजन-कबीर भजन माला	10
राधेश्याम भजन माला, शंकर भजनमाला नया कवर	10
भोलेनाथ भजन संग्रह, शिव विवाह, भजन कीर्तन	10
दुर्गा कीर्तन भेंट संग्रह, माता की भेंट, श्री कृष्ण भजन माला	10

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्रीराम भजन माला	10
चंचल की भेंट (नई-नई भेंट)	10
कबीर दोहावली अर्थ सहित कबीर जीवन परिचय सहित	10
तुलसी दोहावली अर्थ सहित तुलसीदास जीवन परिचय सहित	10
जयपुरी मेहन्दी ग्लेज	10
मजाकिया चुटकले, चुटकले ही चुटकले 10 मेल	10
हँसी का गोल गप्पा, रंग रंगीले चुटकले	10
हँसी का फव्वारा, सदा बाहर चुटकले, अकबर बीरबल चुटकले	10
तोता मैंना, हातमताई, बेताल, सिंहासनवत्तीसी कहानियां	10
मुकेश, रफी, लता, किशोर के यादगार गीत	10
फिल्मी चित्रहार, गीत गाने, शेरो शायरी 10 मेल	10
कभी प्यासे को पानी पिलाया नहीं (भजन)	10
असली लाहौरी श्रीभगवद्गीता महात्म्य दो रंगी छपाई रंगीन	120
असली लाहौरी भगवद् गीता महात्म्य सहित साजिल्द 240 पृष्ठ	50
श्रीमद् भगवद् गीता सरल हिन्दी गुटका कार्ड कवर (मिनी)	20
श्री भगवद् गीता सरल हिन्दी सम्पूर्ण 18 अध्याय	10
श्रीमद् भगवद् गीता सरल हिन्दी छोटी (लघु आकार)	10
श्रीमद् भगवद् गीता प्लास्टिक पाउच में (ताबीज)	10
श्रीमद् भगवद् गीता अत्यन्त छोटी प्लास्टिक डिब्बी में	20
श्री पंचरत्न गीता मोटा टाइप भाषा टीका	40
श्रीमद् भगवद् गीता मोटा टाइप भाषा टीका	40
श्री भगवद् गीता महात्म्य सहित (ऊर्दू में)	50
श्री भगवद् गीता महात्म्य सहित (गुरुमुखी में)	50
श्रीमद् भगवद् गीता कविता में चक्रधारी बेजर कृत	5
श्रीमद् भगवद् गीता अठारहवां अध्याय महात्म्य सहित	5
श्री नित्यकर्म गीता गुटका (स्वामी बलिनाथजी कृत)	5
श्री गर्भ गीता (कृष्ण अर्जुन संवाद)	5
श्रीमद भागवत महापुराण बारह स्कन्ध सप्ताह पाठ सजिल्द	120
श्री सुखसागर बारहों स्कन्ध सम्पूर्ण सजिल्द	120
श्री देवी भागवत पुराण सजिल्द नौ परायण पाठ विधि सहित	100
श्री सम्पूर्ण रामायण आठों काण्ड सरल हिन्दी में सजिल्द	100
श्री विष्णु पुराण सम्पूर्ण सजिल्द सरल हिन्दी में	100
श्री हरिवंश पुराण सजिल्द (सन्तान गोपाल मंत्र सहित)	100
श्री भार्कण्डेय पुराण (सरल हिन्दी में)	100
श्री वेदव्यास कृत महाभारत भाषा 18 पर्व सजिल्द	120
श्री शिव महापुराण सजिल्द	80

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वृहद कवच संग्रह

संग्रहकर्ता: श्री शिवस्वरूप यज्ञिक

इस पुस्तक में सूर्य, नारायण, गोपाल, गायत्री, दिव्य काली, हनुमान, गणेश, श्री शरीरोग्यप्रदं दिव्य सूर्य कवचम्, दुर्गा, सरस्वती, तुलसी, अन्नपूर्णा, महालक्ष्मी, नृसिंह, राधा, धनदा, बटुक भैरव, सुदर्शन, दत्तात्रेय कवच, मृत संजीवनी, प्रत्यंगिरा, दस महाविद्याओं के अलग-अलग, श्री कुण्डिलनी, यमुना, गंगा, परशुराम आदि कवचों का संग्रह किया गया है।

कवच का अर्थ है जिसके धारण करने से शरीर की रक्षा हो, कवच कोई भी लौकिक या परलौकिक, हमारी नित्य-उपासना पूजा में प्रार्थना आदि मंत्र, ध्यान की पूजा रहती है। एक अति प्राचीन दुर्लभ ग्रन्थ रुद्रयामल तंत्र के उत्तर तंत्र में शिवजी से भगवती द्वारा कवच महात्म्य के बारे में पूछे जाने पर शिवजी बताते हैं कि-

नाम्नाः शत गुणं स्तोत्र ध्यान तस्माच्छतादिकं।
तास्माच्छाताधि के मन्त्रः कवचं तच्छताधिकम्।।

अर्थात नाम से स्तोत्र सौ गुणा, स्तोत्र से अधिक ध्यान फलदायक हैं, ध्यान से सौ गुणा मंत्र लाभ देते हैं और मंत्र से भी सौ गुणा अधिक कवच पाठ से होता है। प्रत्येक परिवार में रखने योग्य पुस्तक। मूल्य 80/- रु0

प्रत्येक परिवार, घर, मंदिर में रखने योग्य एक नई पुस्तक

श्री दुर्गा अर्चन रहस्यम् (भाषा टीका)

लेखक-शिव स्वरूप 'याज्ञिक'

इस पुस्तक की सहायता से साधारण व्यक्ति भी शुद्ध दुर्गा पाठ कर सकता है। इसमें देवी की पूजा का पूरा विधान शत चण्डी प्रयोग, संकल्प, षोडश मातृका पूजन, कालरात्रि पूजन, मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा, शापोद्धार मंत्र, उत्कीलन मंत्र, ब्रह्म वशिष्ट विश्वामित्र शाँप विमोचन, दुर्गा कवच, अर्गला, कीलकं, रात्रिसूक्तं, तंत्रोक्त रात्रि सूक्तं, तेरह अध्याय पाठ, यज्ञ कुण्ड पूजा, घृताहूति, अन्य सब हवन, मंत्र पुष्पांजलि, छाया पत्रदानम, सभी स्तोत्र, चालीसा, आरती, दुर्गा सप्तशती के सिद्ध सम्पुट मंत्र, दुःख दरिद्र निवारण मंत्र, पाप नाशक मंत्र, अपने शरीर की रक्षा का मंत्र, सुलक्षण पत्नी प्राप्ति के लिए, धन, पुत्र प्राप्ति का मंत्र, बाल रोग, वशीकरण मंत्र, बुरे स्वप्नों के नाश, अप मृत्यु नाश, विद्या बुद्धि की प्राप्ति, शत्रुनाश, सर्व मनोकामना पूर्ण हेतु मंत्र, विधान दिया गया है। आज ही १२०/- का मनीआर्डर भेजकर पुस्तक मंगवाएं या अपने शहर के पुस्तक विक्रेता से मांगे।

सम्पूर्ण नृसिंह रहस्यम्-लेखक शिव स्वरूप यज्ञिक
नृसिंह भगवान की पूजा का पूरा विधान मूल्य ४०/-

कर्मसिंह अमरसिंह, पुस्तक विक्रेता

बड़ा बाजार, हरिद्वार-249 401 फोन-01334-225619

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री बड़ा गरुड़ पुराण मोटा टाइप सरल हिन्दी (यम गीता सहित)	120
श्री गरुड़ पुराण मोटा टाइप भाषा टीका सजिल्द	80
श्री गरुड़ पुराण भाषा टीका प्रेत कल्प मोटा टाइप	60
श्री गरुड़ पुराण भाषा टीका पत्राकार	60
श्री गरुड़ पुराण भाषा	65
श्री नासकेत उपख्यान भाषा टीका मोटा टाइप	40
दृष्टान्त कथाएं (सच्चा साथी)	50
श्री राज राजेश्वरी स्तोत्र मुक्तावली	50
मस्त रहो अपने आप में (दृष्टांत कथा माला)	15
पराधीन सपनेह सुख नाहीं (दृष्टांत कथा माला)	15
गुरु और ज्ञान (दृष्टांत कथा माला)	15
समझौता अपने आप से (दृष्टांत कथा माला)	15
जब जागो तब सवेरा	15
श्री दुर्गा सप्तशती भाषा सम्पूर्ण रेक्जीन जिल्द	50
श्री दुर्गा सप्तशती भाषा सजिल्द	30
श्री दुर्गा सप्तशती सजिल्द (मिनी लघु आकार)	20
श्री दुर्गा नवरात्र नौ दिन का पाठ (डिमाई साईज) नई पुस्तक	25
श्री दुर्गा पाठ गुटका (सम्पूर्ण पाठ)	10
श्री सुन्दरकाण्ड अर्थ सहित (लाल नीली छपाई में) सजिल्द	30
श्री सुन्दरकाण्ड अर्थ सहित (लाल नीली छपाई में)	25
सजिल्द बड़ा सुन्दर काण्ड पूजा विधि सहित मोटा टाइप लाल छपाई	25
बड़ा सुन्दरकाण्ड मूल लाल छपाई पूजा विधि सहित नया	15
सुन्दरकाण्ड गुटका पूजा विधि सहित (छोटा साइज)	10
ज्ञानमाला (श्रीकृष्ण का अर्जुन को उपदेश)	15
श्री दुर्गा अर्चन रहस्यम् भाषा टीका श्रीशिव स्वरूप 'याज्ञिक'	120
कर्मकाण्ड षोडश संस्कार रहस्यम् भा.टी. ले. शिव स्वरूप	100
वृहद कवचम् संग्रह (सभी देवी देवताओं के कवचों का संग्रह)	80
सम्पूर्ण हवन रहस्य भा. टी, यज्ञकुण्ड चित्र सहित शिवस्वरूप 'याज्ञिक'	50
सम्पूर्ण पूजन रहस्यम् भाषा टीका-ले. शिव स्वरूप 'याज्ञिक'	40
सम्पूर्ण ग्रह नक्षत्रादि शान्ति रहस्यम् भाषा टीका-ले. शिव स्वरूप 'याज्ञिक'	40
पितृ कर्म समुच्च्य सम्पूर्ण अन्तेष्टीकर्म रहस्यम्- शिव स्वरूप 'याज्ञिक'	40
श्री नृसिंह रहस्य (सचित्र) भाषा टीका	40
श्री शिवार्चन पद्धति शिव स्वरूप 'याज्ञिक'	25
पूजा भास्कर (सजिल्द) लेखक-ज्वाला प्रसाद शास्त्री	50
वृहद नित्यकर्म पद्धति-ज्वाला प्रसाद शास्त्री जी	35
सर्वदेव पूजा पद्धति 80 पृष्ठ नया प्रिंट-ले. ज्वालाप्रसाद शास्त्री	15

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सम्पूर्ण पूजन रहस्य भाषा टीका

लेखक- शिव स्वरूप यज्ञिक

इस पुस्तक में संध्या सभी देवी-देवताओं के पूजन, शांति पाठ, संकल्प मंत्र, स्वस्तिवाचन, कलश पूजन, नान्दी श्राद्ध, षोडश मातृका पूजन, नवग्रह पूजन, यज्ञ निर्माण पूजन, विष्णु पूजन, शिव पूजन, दुर्गा न्यास विधान पूजन, सर्वतोभद्र देवता स्थापना, अग्नि स्थापना, वारुणी हवन, रुद्र सूक्त, श्री सूक्त, गोदान आशीर्वाद मंत्र, महा मृत्युंजय जप पूजन, संकट नाशक गणेश स्त्रोत, नवनाग स्त्रोत, शनि स्त्रोत, श्रीराम स्तवन बहुत अच्छे ढंग से दी गयी है। प्रत्येक ब्राह्मण प्रत्येक व्यक्ति के लिए उपयोगी पुस्तक आज ही खरीदें। मूल्य- ४०/-

---

वृहद नित्य कर्म पद्धति (सर्वदेव पूजा)

(लेखक- पं० ज्वाला प्रसाद शास्त्री)

इस पुस्तक में नित्यकर्म पूजा पाठ, नवग्रह पूजन, गायत्री जप विधि, २४ मुद्राएँ गायत्री, कवच, संध्या विधि, तर्पण विधि, हवन, सभी पूजन विधि, आदित्य हृदय स्तोत्र पाठ, स्तुतियाँ, एकादशी नियम, सब देवताओं के पूजन हैं। मू०-३५/-

---

सम्पूर्ण अंत्येष्टि कर्म रहस्यम्

(लेखक- पं० ज्वाला प्रसाद शास्त्री)

इस पुस्तक में दशदान, मोक्षधोनुदान, पिण्डदान, कपाल क्रिया, अस्थित संचयकर्म, दशगात्र विधि, चतुर्दश यम तर्पण, चितानल विधि, घटपूजन, पिण्डदान, पिण्ड पूजन, दशगात्र के संकल्प, एकादशाह, शय्यादान, कपिलादान, उदकुंभ दान, वृषोत्सर्ग, वृषमाताओं का पूजन, प्रेत माताओं का पूजन, अग्निस्थापन, वृष वत्सरी पूजन, विष्णु श्राद्ध प्रयोग, पंचदेव श्राद्ध, उत्तम षोडशी, पिण्डनिर्माण पूजन, पिण्ड निर्माण, पिण्ड दान आदि पूजन दिये गये हैं। मूल्य-40/-

---

सम्पूर्ण हवन रहस्य भाषा टीका

लेखक- शिव स्वरूप यज्ञिक

इस पुस्तक में पंचगव्य निर्माण, आचार्यवरण, रक्षा विधान, यज्ञकुण्ड पूजन, पंचभू संस्कार, अग्नि पूजन, हवन संकल्प, पंच वारुण होम, नवग्रह होम, अधि प्रत्याधि, पंचलोकपाल, दशदिक्पाल होम, वास्तु होम, सोडश स्तंभ होम, सर्वतोभद्र, लिंगतोभद्र, योगिनी, क्षेत्रपाल, विष्णुयाग (विष्णु सहस्त्रनाम), गायत्री याग (गायत्री सहस्त्रनाम), रुद्रयाग (रुद्रिपाठ सहित), दुर्गा याग (याग विधान), पुरुष सूक्त, रुद्रसूक्त, श्रीसूक्त, हवन तथा न्यास सहित, उत्तर पूजन, स्विष्ट कृद्धोम, बलिदान, पूर्णाहूति, आरती, तर्पण, मार्जन, गोदान, अभिषेक मंत्र तथा देवताओं के विसर्जन मंत्र सहित यज्ञकुण्ड निर्माण की विधि रंगीन भद्रमण्डल चक्र के साथ सुसज्जित पुस्तक प्रत्येक ब्राह्मण, साधक, धार्मिक मनुष्य के लिये परम उपयोगी है। इस पुस्तक को आज ही मंगाये। मूल्य 50/-रु०

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एकलिंगतोभद्रचक्रम्

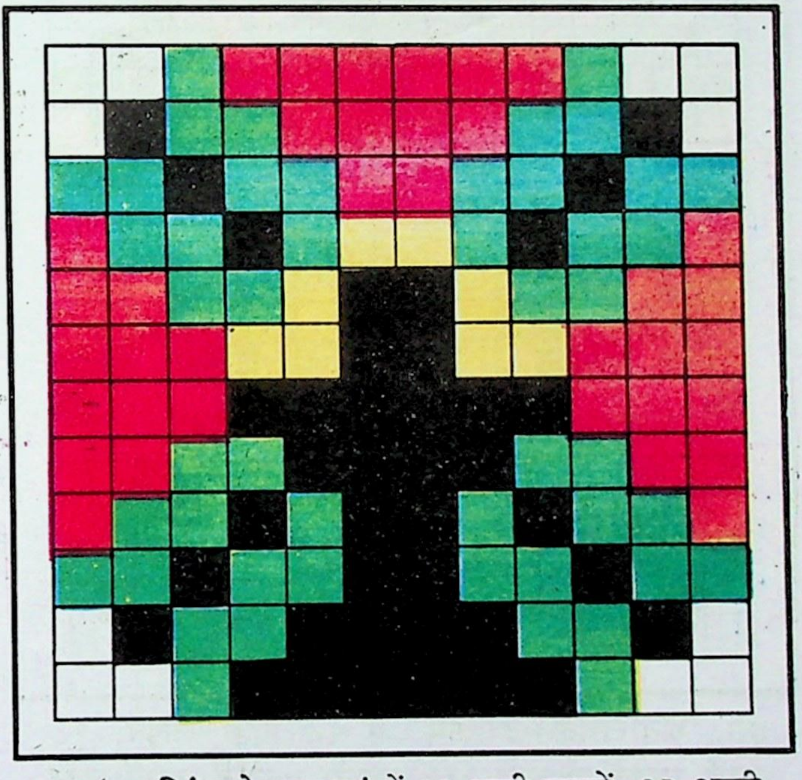

इस 'एकलिंगातोभद्रचक्र' में १३ खड़ी लाइनें, १३ आड़ी लाइनों से कुल १४४ चौकोर बनते हैं। इसमें लाल रंग में मसूर की दाल, हरा रंग में मूंग, पीले रंग में चने की दाल, सफेद रंग में चावल एवं काले रंग में उड़द की दाल भरी जाती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चतुर्लिंगतोभद्रचक्रम्

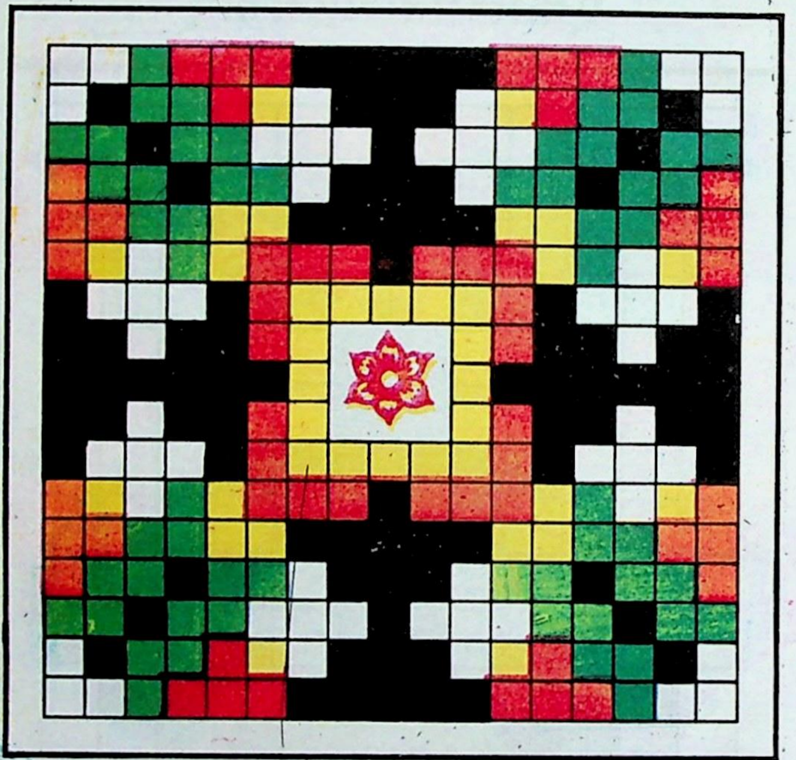

इस **'चतुर्लिंगतोभद्रचक्रम्'** में १८ खड़ी लाइनें, १८ आड़ी लाइनों से कुल २८९ चौकोर बनते हैं। इसमें लाल रंग में मसूर की दाल, हरे रंग में मूंग, पीले रंग में चने की दाल, सफेद रंग में चावल एवं काले रंग में उड़द की दाल भरी जाती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अष्टलिंगतोभद्रम्

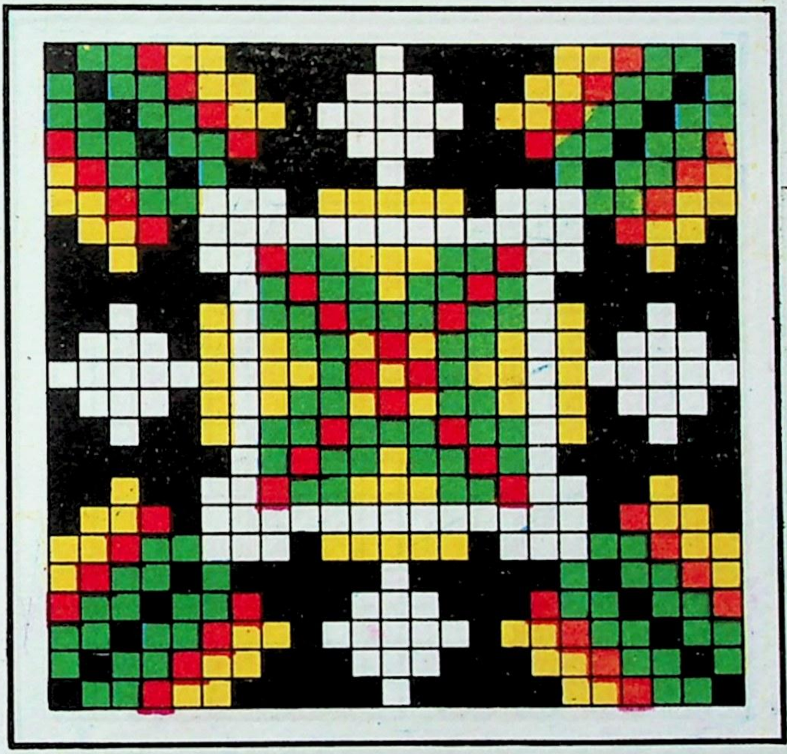

इस **'अष्टलिंगतोभद्रम'** में २४ खड़ी लाइनें, २४ आड़ी **लाइनों** से कुल ५२९ चौकोर बनते हैं। **इसमें** लाल रंग में **मसूर की दाल**, हरे रंग में मूंग, पीले रंग में चने की दाल, सफेद रंग **में** चावल एवं **काले रंग** में उड़द की दाल भरी जाती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सर्वतोभद्रमण्डलम्

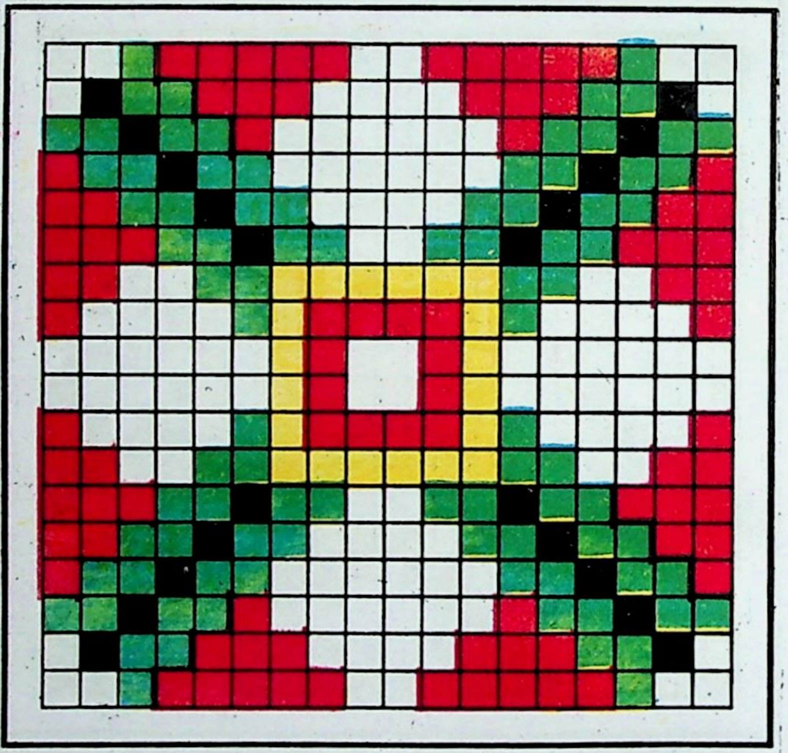

इस **'सर्वतोभद्रमण्डलम्'** में १९ खड़ी लाइनें, १९ आड़ी लाइनों से कुल ३२४ चौकोर बनते हैं। इसमें लाल रंग में मसूर की दाल, हरे रंग में मूंग, पीले रंग में चने की दाल, सफेद रंग में चावल एवं काले रंग में उड़द की दाल भरी जाती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वारुण मण्डल चक्रम्

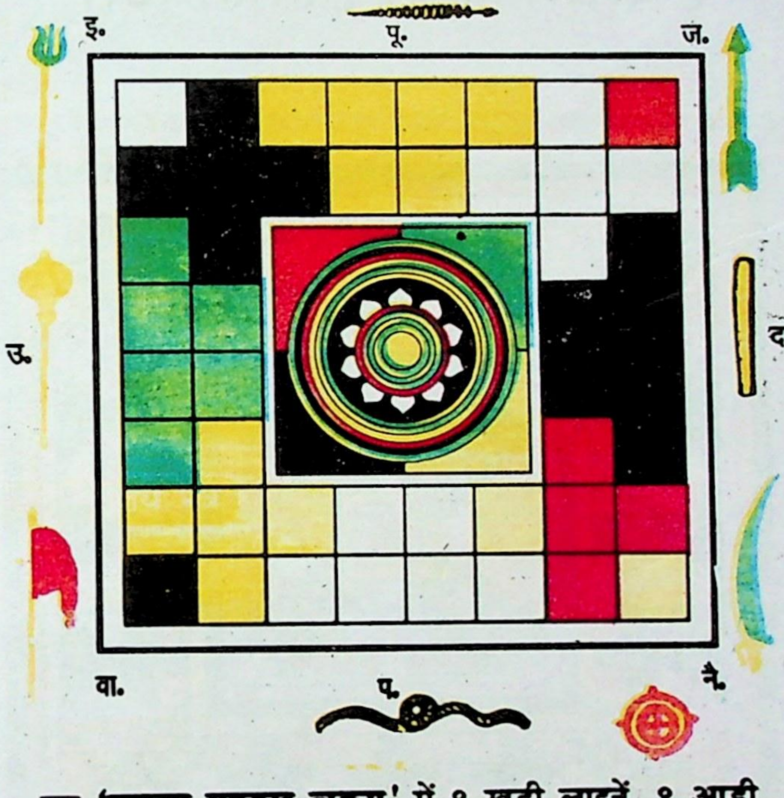

इस 'वारुण मण्डल चक्रम्' में ९ खड़ी लाइनें, ९ आड़ी लाइनों से कुल ६४ चौकोर बनते है। इसमें लाल रंग में मसूर की दाल, हरे रंग में मूंग, पीले रंग में चने की दाल, सफेद रंग में चावल एवं काले रंग में उड़द की दाल भरी जाती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

द्वादशलिंगतोभद्रम् हरिहरमंडलं

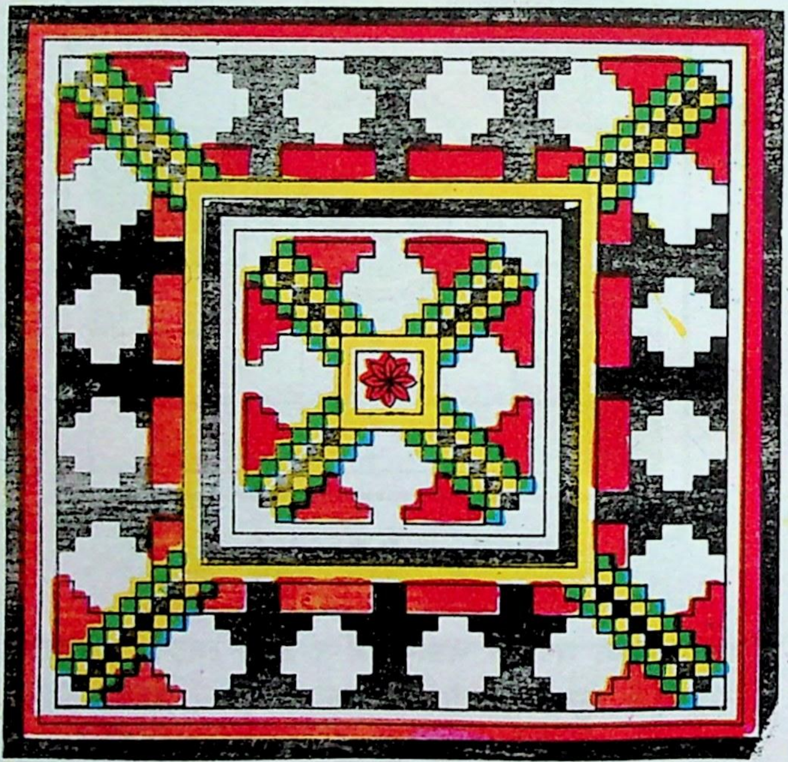

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चतुःषष्ठियोगिनीचक्रम्

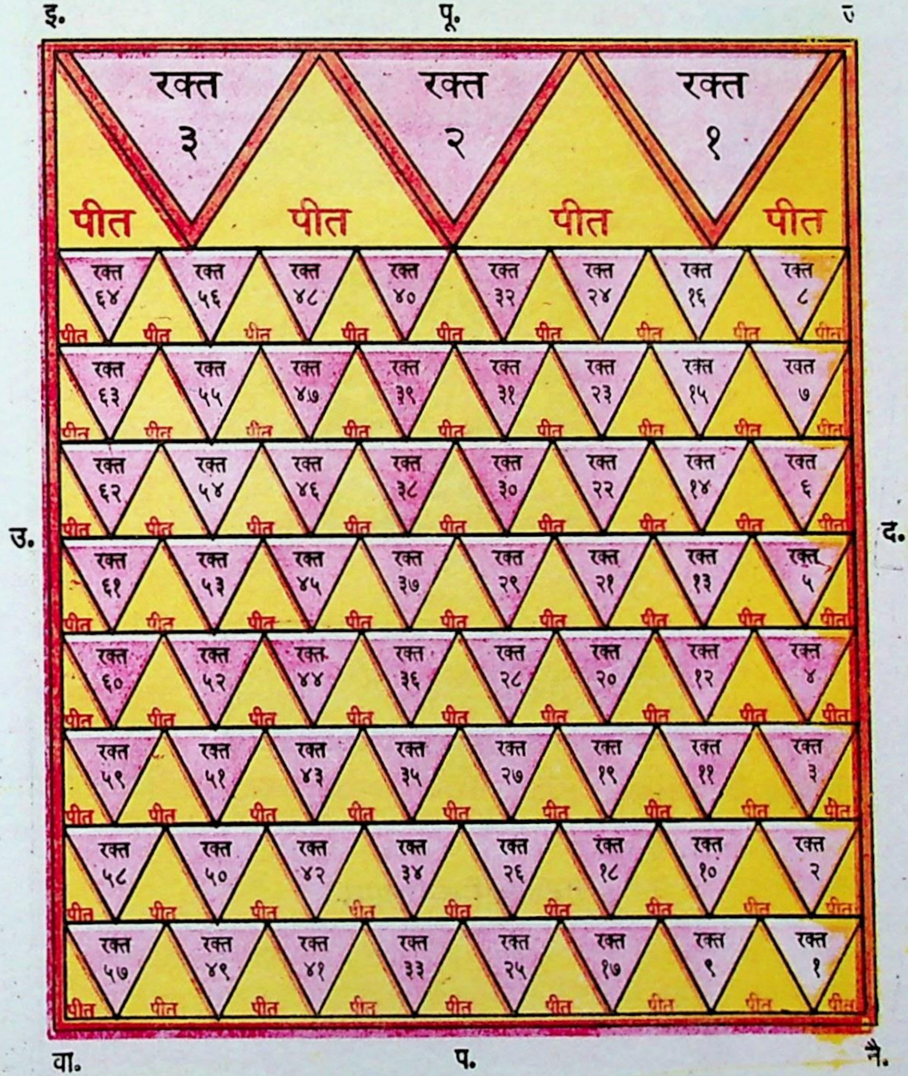

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कुण्डा भावे स्थण्डिल वेदी प्रमाण

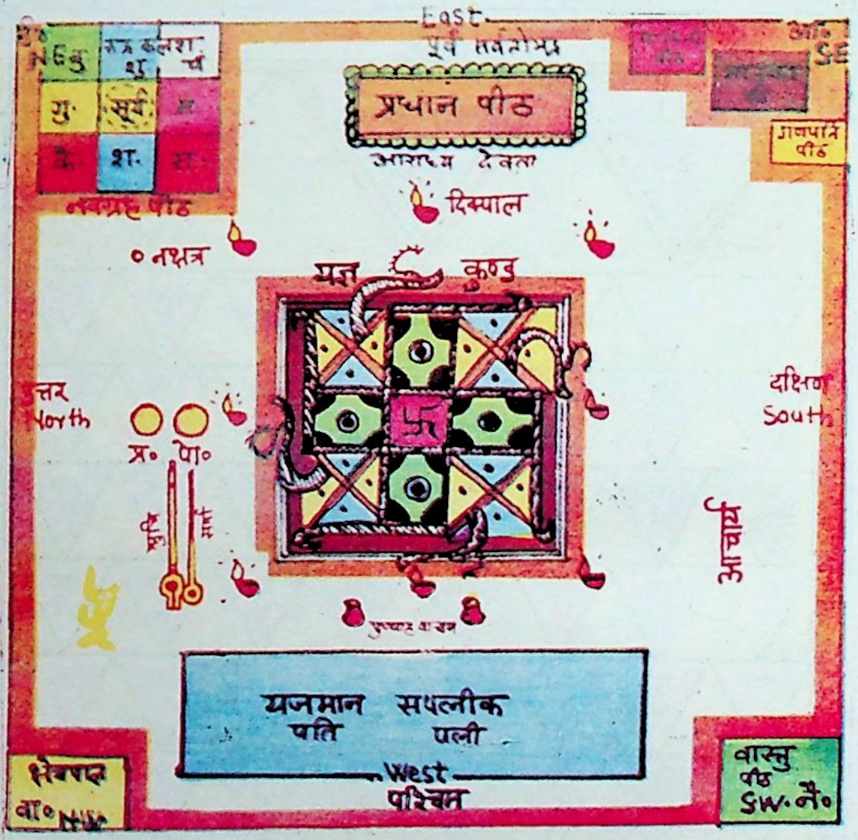

ग्रह-शान्ति-प्रयोग

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

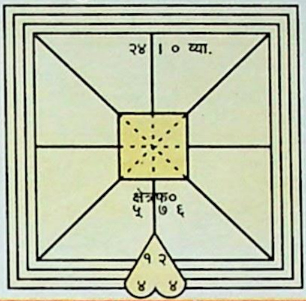

चतुरष्कोणास्रंकुण्डम्

द्विघ्नव्यासं तुर्यचिंह्न सपाशं सूत्रं शंकौ पश्चिमे पूर्वगेऽपि।
दत्वा कर्षेत्कोणयोः पाशतूर्ये स्यादेवं वा वेदकोणं समानम्।।

व्यास १ हाथ उसको दुगना करने से २ हाथ होगा। इसी प्रकार से जितना व्यास हो उसका दुगना करे। उसमें सूत्र सहित पाश के ४ चिह्न करें, उसके बाद दोनों पाशों को पूर्व पश्चिम की कील में फंसाकर दोनों की चतुर्थांश गांठ को पकड़ कर अग्नि तथा नैऋत्य कोण की तरफ खीचें और वायव्य तथा ईशान कोण की तरफ खीचें तो चतुरस्र कुण्ड बराबर सिद्ध होता है। इसी प्रकार सब कुण्डों से पहले चतुरस्र क्षेत्र बना ले तब उसके ऊपर दूसरा कुण्ड बनाये।।

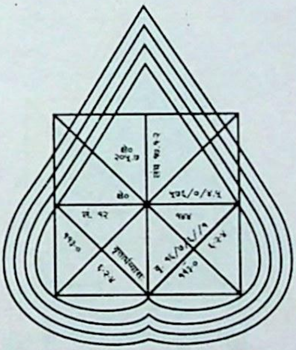

योनिकुण्डम्

क्षेत्रे जिनांशे पुरतः सरांशान्संवर्ध्य च स्वीयरदांशयुक्तान्।
कर्णाघ्रिमानेन लिखेन्दुखण्डं प्रत्यंकुरोकांद्‌गुणतो भगाभम्।।

प्रकृति क्षेत्र का २४ भाग करे। उसके ५ भाग लें, वह अपने बत्तीसवां हिस्सा से युक्त (बत्तीसवां हिस्सा से युक्त करने पर ५ अं० १ य० २ यूका बना) इतने को प्रकृतिक्षेत्र के मध्य में आगे बढ़ाने पर पीछे के दोनों भाग चतुरस्र में चारों कोण से रेखा देकर कर्णाघ्रि (दोनों के बीच) में परकार रखकर दो आधावृत्त बनावे और दोनों पार्श्व से आगे के चिन्ह से रेखा देने पर शुद्ध योनिकुण्ड होता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

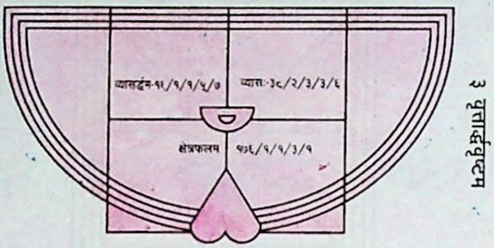

अर्द्धचन्द्रकुण्डम्

स्वशतांशयुतेषु भागहीनः स्वधरित्रीमितकर्कटेन मध्यात्।
कृतवृत्तदलेऽग्रतशच जीवां विदधात्विन्दुदलस्य साधुसिद्धयै

प्रकृति क्षेत्र २४ का पाचवां अंश ले (२।६ ।३ ।३ ।१ ।५) वह कैसा हो कि शतांश (शतांश ० ।० ।३ ।० ।४) इसके युक्त ४ अं. ६ यव ६ यूका २ लिक्षा १ कलाग्र इतना जो इषुभाग सो २४ अं० के क्षेत्र में से घटावे तो १६ अं. १ यव १ यूका ५ लिक्षा ४ बालाग्र इतने से चतुरस्र के बीच में परकार रखकर वृत्त का आधा खीचें। वृत्तार्ध के आगे सूत्र देने पर अर्धचंद्र शुद्ध होता है।

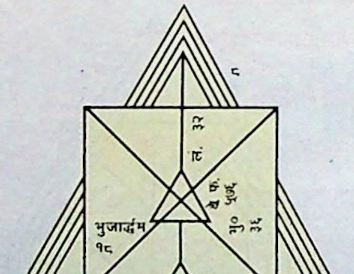

त्रिकोणकुण्डम्

वह्न्यंशं पुरतो निधाय च पुनः श्रोणयोश्चतुर्थांशकं
चिह्नेषु त्रिषु सूत्रदानत इदं स्यात्त्र्यस्रिकश्टोज्झितम्।

प्रकृति क्षेत्र का २४ हिस्सा करे। उसमें से तृतीयांश (अर्थात् ८ अंगुल) लेकर प्रकृति क्षेत्र जो चतुरस्र उसमें आगे पूर्व की तरफ बढ़ावे और २४ का चौथा हिस्सा ६ अंगुल बनाये सो छ छ अंगुल चतुरस्र की दोनों कोणों के दक्षिण उत्तर की तरफ बढ़ावे। बाद में तीनों चिह्न से मिलाकर सूत्र देने से त्र्यस्र अर्थात् त्रिकोण कुण्ड सिद्ध होता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

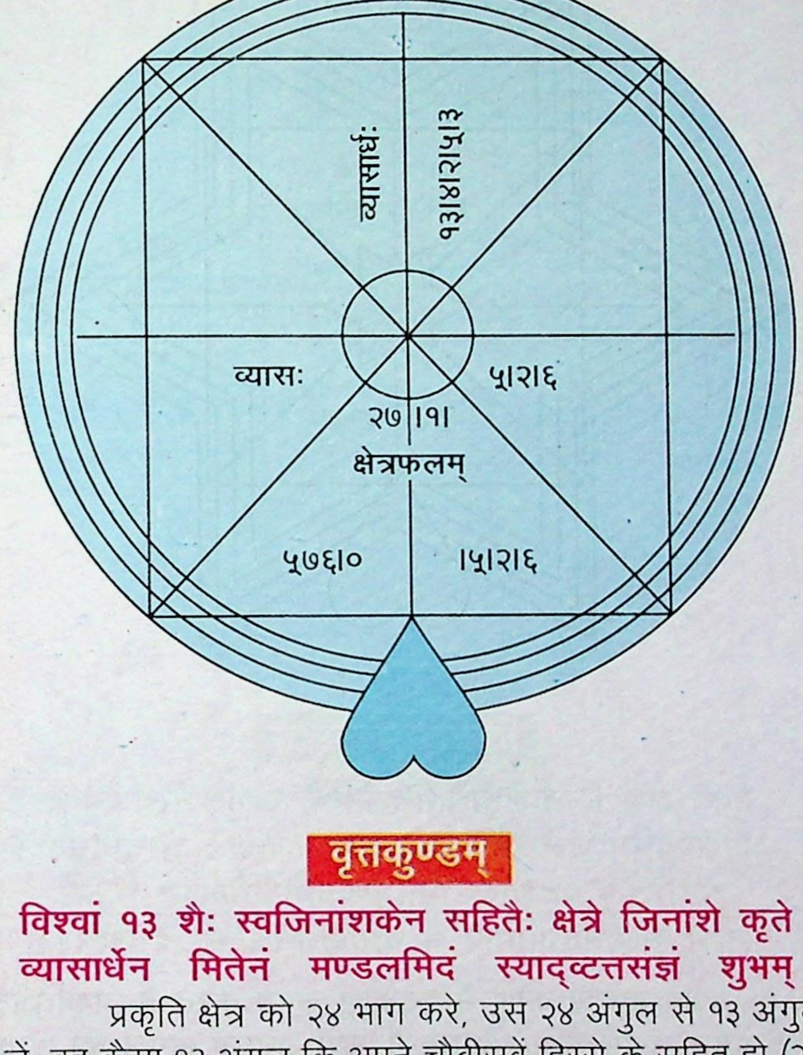

वृत्तकुण्डम्

विश्वां १३ शैः स्वजिनांशकेन सहितैः क्षेत्रे जिनांशे कृते व्यासार्धेन मितेनं मण्डलमिदं स्याद्व्टत्तसंज्ञं शुभम्

प्रकृति क्षेत्र को २४ भाग करे, उस २४ अंगुल से १३ अंगुल लें, वह कैसा १३ अंगुल कि अपने चौबीसवें हिस्से के सहित हो (२४ वाँ हिस्सा ४ अं० २ यू० ५ लि० २ बालाग्र) तब चतुरस्र के बीच में परकार रखकर (१३ ।४ ।२ यूका ५ लिक्षा २ बालाग्र इतने के व्यासार्ध से) वृत्त करे तो शुद्धवृत्त कुण्ड होता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

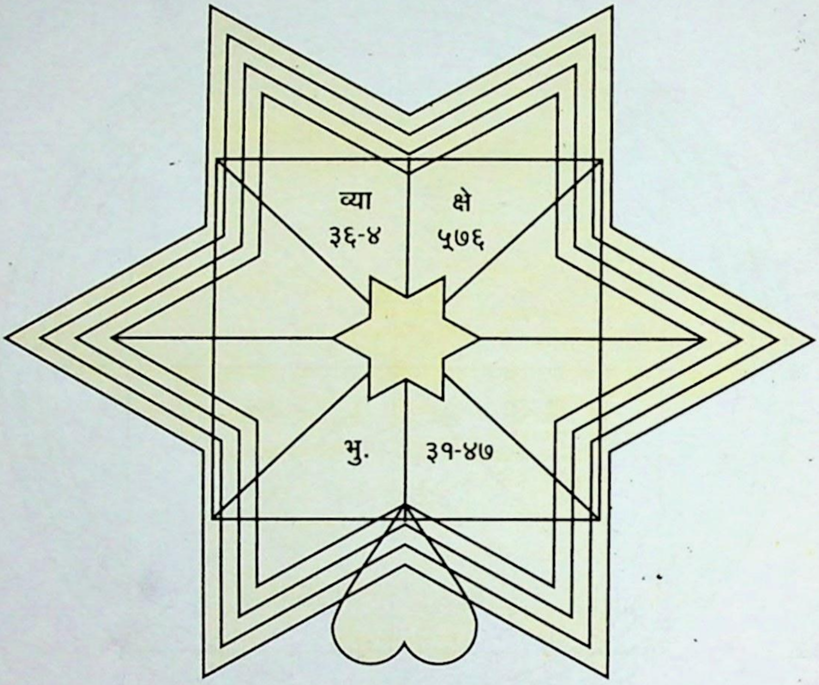

विषमसडकुण्डम्

भक्ते क्षेत्रे जिनांशैर्धृतिमितलवकैः स्वाक्षिशैलांशयुक्ते-
र्व्यासार्द्धान्मण्डले तन्मितधृतगुणके कर्कटे चेन्दुदिक्तः।
षट्चिह्नेषु प्रदद्याद्रसमितगुणकानेकमेकं तु हित्वा
नाशे संध्यर्तुदोषामपि च वृतिकृतेर्नेत्ररम्यं षडस्रम्।।

अब वायव्य कोण में षट्कोण कुण्ड कहते हैं—प्रकृतिक्षेत्र २४ अंगुल उसमें से १८ अंगुल लें, उस अठारह अंगुल का ७२वां हिस्सा युक्त हो तो ७२वां हिस्सा २ यव बने तो १८ अंगुल २यव के परकार से वृत्त करना (गोल) उत्तर तरफ से उसी परकार से वृत्त पर सूत्र देने से और सब संधि की रेखा मिटाने से षट्कोण सिद्ध होता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

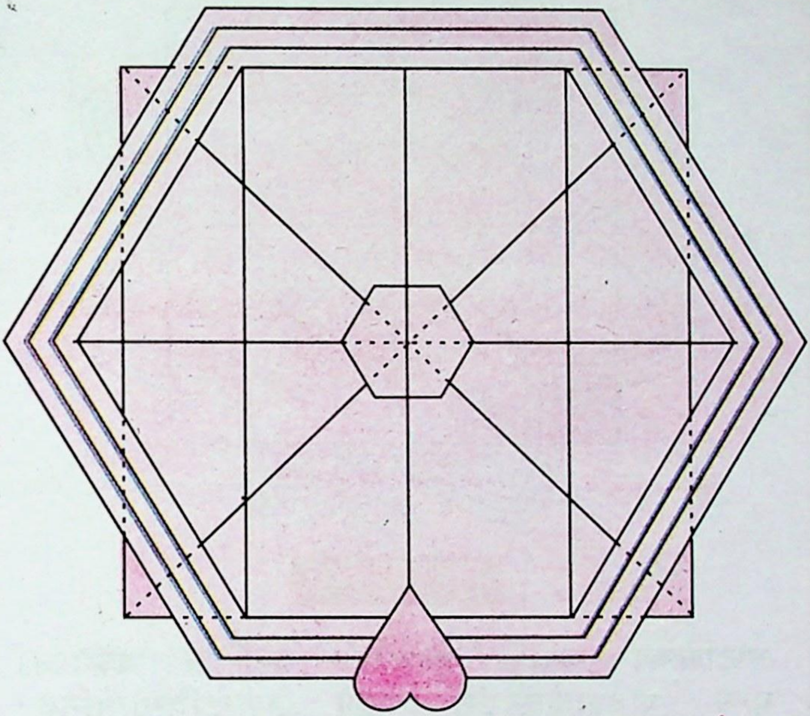

समषडकुण्डम्

अथवा जिनभक्तकुण्डमानात्तिथिभागैः स्वखभूपभागहीनैः।
मितकर्कटोद्भवे तु वृत्ते विधुदिक्तः समष्ड्भुजैः षडस्रम्।।

अब दूसरा षडस्रकुण्ड समभुजमृदगांकार कहते हैं। प्रकृतिक्षेत्र को २४ भाग करे। उसमें से तिथिभाग १५ जो है वह अपने १६० वें भाग से अलग करे तो अलग करने से १४ अं० ७ यव २ यूका परकार से वृत्त (गोल) करे। उस वृत्त में उत्तर दिशा से उसी परकार से ६ चिन्ह करे, छः चिन्हों से परस्पर सूत्र देने और संवृत्ति मिटाने से समभुज षडस्रकुण्ड सिद्ध होता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

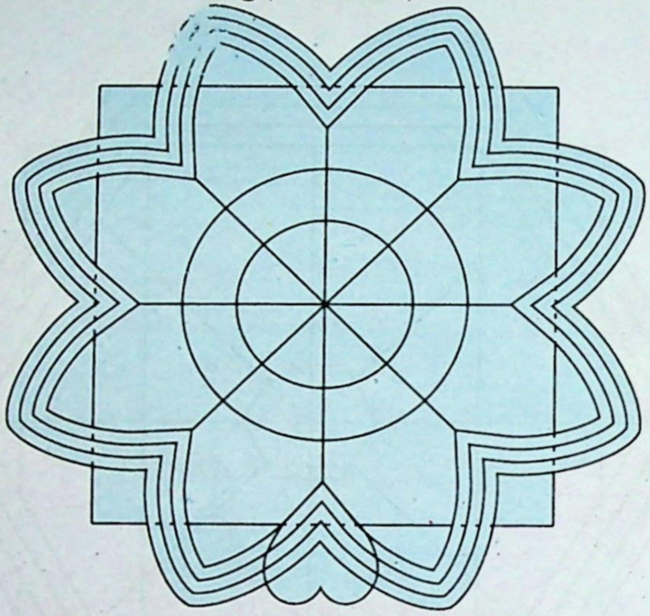

पद्मकुण्डम

**अष्टांशाच्च यतश्च वृत्तशरके तवादिकं कर्णिका।
युग्मे षोडशकेसराणि चरमे स्वाष्टत्रिभोगोनिते।
भक्ते षोडशधा शरान्तरधृते स्युः कर्कटेऽष्टौ छदाः।
सर्वा तां खनकर्णिकांत्यज निजायामोच्चाकां स्यात्कजम्।।**

प्रकृतिक्षेत्र २४ के अष्टमांश से एक–एक वृत्त में अष्टमांश बढ़ा–बढ़ा कर ५ वृत्त करे। परन्तु पांचवे वृत्त मे वह अष्टमांश अपने ३८ वें हिस्से से अलग करके उस अष्टमांश के व्यासार्ध से २ अं० ७ य० २ यू० १ लिक्षा २ बालाग्र से पांचवा वृत्त बनाये। पहला वृत्त ३ अंगुल, दूसरा वृत्त ६ अं०, तीसरा वृत्त ९ अं०, चौथा वृत्त १२ अं०, पांचवा वृत्त १४ अं०, ७ यव २ यू० १ लि० २ बा० के परकाल से करके अन्तिम वृत्त में १६ चिन्ह करे। दिशा विदिशा या विदिशा दिशा के बीच में पांचवें चिन्ह पर परकार रखकर दिशा विदिशा में ८ पत्र करे और पत्र के मध्य तथा केसर को छोड़कर कर्णिका के मध्य में बनाने पर स्वच्छ पद्मकुण्ड सिद्ध होता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

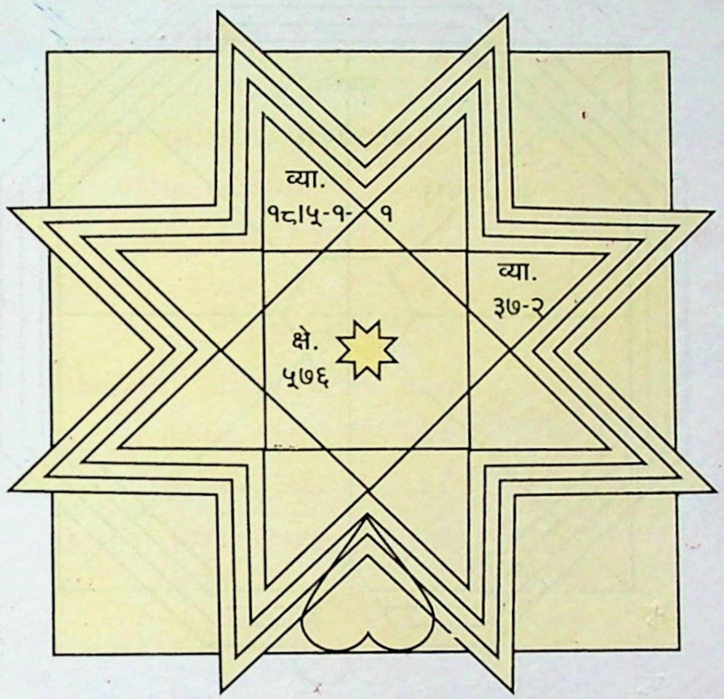

विषमअष्टास्रकुण्डम

क्षेत्रे जिनांशे गजचन्द्रभागैः स्वाश्लिष्टभागेन युतैस्तु वृत्ते।
विदिग्दिशोरन्तरतोऽष्टसूत्रैस्तृतीययुक्ते रिदभष्टकोणम्।।

प्रकृति २४ इसमें से १८ हिस्सों को अपने २८ वे हिस्से के सहित लें तो १८ अं० ५ य० १ यू० १ लि० १ बालाग्र बनता है। इतने के व्यासार्द्ध को परकार से वृत्त करे और दिशा विदिशा के बीच में ८ चिन्ह करे। बाद में दो–दो चिन्ह के मध्य में छोड़ छोड़कर तीसरे तीसरे चिन्हों को मिलाकर ८ रेखा बनाये। बाद में वृत्त व संधियों को मिटा दें तो विषम भुज (अर्थात विषम अष्टकोण कुण्डकोण कुण्ड) होता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

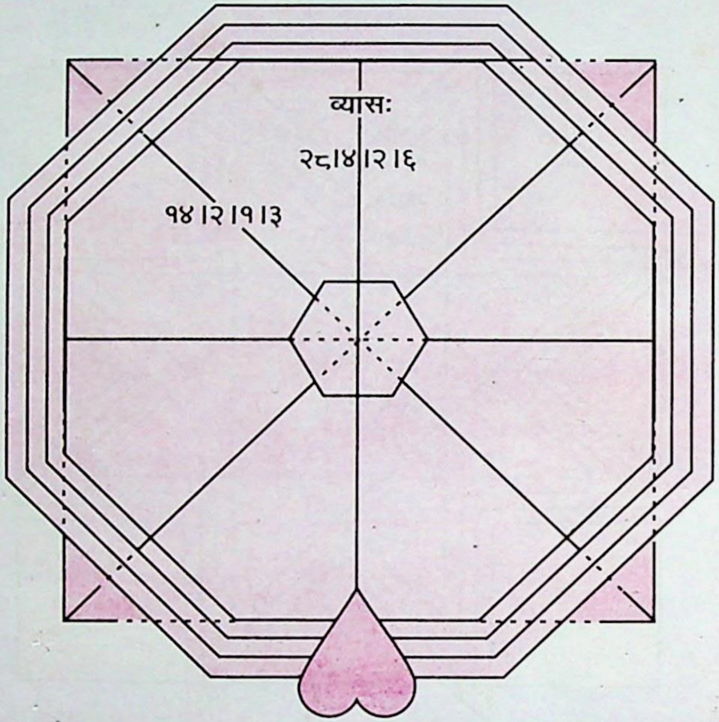

समअष्टास्रकुण्डम

मध्ये गुणे वेदयमैर्विभक्ते शक्रैर्निजर्ष्याब्धिलवेन युक्तैः।
वृत्ते कृते दिग्विदिशोऽन्तराले गजैर्भुजैःस्यादथवाऽष्टकोणम्।।

दूसरे सम अष्टास्र को मृदगांकर कुण्ड कहते हैं। प्रकृतिक्षेत्र २४ अंगुल में से क्षेत्र १४ अं० लिया। वह १४ अं० कैसा हो कि अपने ४७ वें अंश से युक्त हो तो १४ अं० २ यव ३ यूका के व्यासर्द्ध में परकार से वृत्त करे। उस वृत्त की दिशा विदिशाओं के बीच में चिन्ह देकर परस्पर चिन्हों को मिलाकर सूत्र देने से सब वृत्त मिलने से मृदंगाकार शुद्ध अष्टास्र कुण्ड होता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हमारे अन्य प्रकाशन

कर्म सिंह अमर सिंह पुस्तक विक्रेता

हरिद्वार-249401

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh